18/5/86

...ea Sirs,

शारिका लीला

We send herewith Cheque/Demand Draft No. .... Delhi/New Delhi for Rs. ....
...accept it as Fixed/Cumulative Deposit for a period of .... year...

...urn herewith Fixed/Cumulative Deposit Receipt No. ....
...ed with the request to renew the same for the term of ....
...m.

...read the particulars of the Company and the terms and con...
...posit Form and agree to be bound by the same. Please send me/us...
...ddress given below.

(नौ तरंगों का संग्रह)

चौथी बार

प्रकाशक :

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काश्मीर

जयतु शारिकै:



प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम् ।
पाठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

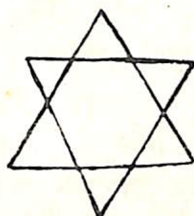
चौथी बार

प्रकाशक :

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काश्मीर

मूल्य ;

Sisalam



जयतु शारिके:

प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम् ।
पाठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

चौथी बार

प्रकाशक :

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काश्मीर

मूल्य ;

मुद्रक :
बन्सी आर्ट प्रेस, फोन : 73999
नई सड़क, श्रीनगर - कश्मीर

"धार्मिक–संस्कृति और कश्मीर"

कश्मीर का प्राग् - ऐतिहासिक युग (Pre - historic - Period) उतना ही पुराना है जितनी स्वयं कश्मीर की धरती और इसका परिवेश। भूगर्भ - वैज्ञानिक खोज के अनुसार सतीसर का पानी आज से तीन – चार लाख वर्ष पहले यहां से निकास के क्रम में चालू हो चुका था। नीलमत पुराण (B. C. 200) की रचना में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है[1]। दक्ष प्रजापति के हवन की आग में झुलसी सती को उठाकर भगवान शंकर ने कश्मीर के इस अपार सरोवर में अध – जली सती के पार्थिव शरीर को प्रवाहित किया था अतः इस कारण इसका नाम सतीसर पड़ा[2]। इस सरोवर के पानी को निकास देने का प्रयत्न महर्षि कश्यप की निरंतन तपस्या का फल है। इसके अतिरिक्त 'कश्मीर' देशवाचक नाम भाषात्मक तीन बिन्दुओं पर आधारित हैं।

"क + अश्म + ईर"

'क' का अर्थ है पानी, 'अश्म' का अर्थ है पत्थर या पहाड़ और 'ईर[3]' का अर्थ है बहना या निकास देना अतः महर्षि कश्यप ने पहाड़ों के बीच रुके हुए पानी को तपस्या के प्रभाव से निकास दिया और उसका नाम कश्मीर [क + अश्म + ईर = कश्मीर] पड़ा। कश्यप आर्यों की एक शाखा थी, जिनका विस्तार रूस के कास्पियन सागर (caspian sea) से लेकर कश्मीर तक था। और इनके प्रमुख नगर काश्यप स्थान[4] (काफिरिस्तान)

---

1 नीलमत पुराण :- श्लोक 45-70, 127, 150-240.
2 नीलमत पुराण :- श्लोक 127.
3 नीलमत पुराण :- श्लोक 226-227.
4 थामस वाट्टरस :- ऑन युवान च्वांगस ट्रेवल इन इण्डिया-122.

सिन्धु - कश्यप[5] (हिन्दू कुश) कश्यप – गृह[6] (काशगर) और कश्नीर आदि। यही कारण है कि कश्मीर की वैदिक तथा शैवी कर्मकाण्डीय व्यवस्था के प्रेरक ऋषि लौगाक्षि ने डंके की चोट की तरह इस बात को दोहराया है– "सरिताम् काश्यपीनांसरितो यज्ञकीर्तिम् इच्छमानानाम्"[7] । (यह सूक्त (वैदिक) उन – काश्यपियों के निमित्त है जो यज्ञ कीर्ति की इच्छा को प्राथमिकता देते है।) कश्मीर की इष्ठ देवी शारदा है और शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी पीठ से उसका स्थान पश्चिम में पड़ता है। वास्तव में दोनों शक्ति पीठों में शिला (चट्टान) का ही भव्य स्वरूप है। अन्तर मात्र इतना ही कि शारिका–पर्वत पर चक्रेश्वरी स्वयं मौन यन्त्र स्वरूप में विराजमान है और शारदा शक्ति पीठ में मुखर वाणी स्वरूप सरस्वती है। भक्तजन शारिका के चक्रेश्वर शक्ति पीठ में श्री यन्त्र की तपस्या किया करते थे और तपस्या का वरदान शारदा के शक्ति पीठ के पास मिलता था[8]। शारिका पर्वत के नीचे वितस्ता का प्रवाह है और शारिदा भगवती के नीचे मधुमती नदी का प्रवाह है। नीलमत पुराण के आधार पर कश्यप ऋषि ने सारे देवी देवताओं को कश्मीर बुलाया और सबों ने अपना अपना स्थान यहाँ अपनाया। यही कारण है कि कल्हण राजतरंगिणी में लिखते है "तिलांशोऽपि न यत्रास्ति पथ्व्यास्ती थैंबहिष्कृत"[9]। (कश्मीर प्रदेश का कोई भी ऐसा स्थान नही है जहाँ पर तीर्थ नही है)

---

5 गिलगित मैनस्क्रप्ट-212. 6 गिलगित मैनस्क्रप्ट-107.

7 लौगाक्षि पद्धति (लौगाक्षिकषिका समय 400 B.C. है)

8 शारदा महात्म्य पटल 3. 9 कल्हण : राजतरंगिणी 138.

कश्मीर देश स्वयं माँ भगवती का स्वरूप है। यह बात स्वय भगवान श्री कृष्ण ने कश्मीर में आकर, राजा दामोदर की विधवा रानी यशोवती को कश्मीर के राजसिंहासन पर बिठाते समय इस प्रकार से कही थी "कश्मीर: पार्वती तत्र[10]" (कश्मीर की धरती स्वयं में पार्वती का स्वरूप है) धर्म और धार्मिक अनुष्ठानों की दृष्टि से कश्मीर शाक्त–धर्म का अनुयायी हराप्पा को संस्कृति के साथ-साथ हो रहा है। शाक्त संप्रदाय की मान्यता हैं कि यह सारा ब्रह्माण्ड मात्र एक अपार सक्रिय-चेतना का प्रवाह है[11] (The entire Cosmic-universe is creative-conscious flow) श्री अभिनव गुप्त[12] ने अपने तंत्रालाक में इस अपार की महाशक्ति को द्वादशकाली के प्रतीक के रूप में इसका विभाजन 360° अंशो या डिग्रियों में आकर इसके स्वरूप का अपार वर्णन किया है जैसे: द्वादशकालो का स्वरूप 12 की गिनती है। प्रतिपद्य (एकं) से अमावस्या तक 15 की गिनती बनती हैं और फिर प्रतिपद्य से पूर्णिमा तक 15 की गिनती बनती है इस प्रकार से $15 + 15 = 30 \times 12 = 360°$ अंश, इस प्रकार हमारी पृथ्वी की अंश-रेखा बनती है। यही द्वादशकाली प्रथमत: सृष्टि (creation) स्थिति (Preservation) और संहार (Distruction) करती रहती है, (क) I सृष्टि + सृष्टि, II सृष्टि + स्थिति, III सृष्टि+ संहार (ख) I स्थिति + सृष्टि, II स्थिति + स्थिति, III स्थिति + संहार।

---

10 कल्हण : राजतरंगिणी 1.72, 11 शिवदृष्टि-17.

12 अभिनवगुप्तपाद : तंत्रलोक, चौथा आह्निक.

ग) I संहार + संहार, II सहार+सृष्टि, III संहार+स्थिति। इस प्रकार से काल-चक्र का बनना और बिगड़ना निरन्तर चलता रहता है। कश्मीर का प्राचीनतम धर्म इसी दर्शन पर आधारित है। जो कलान्तर में वैदिक धर्म के साथ मिलकर एक नये स्वरूप में उभर आया।

शारिका पर्वत पर अवस्थित चक्रेश्वरी महायंत्र का सिद्धपीठ ब्रह्माण्ड-व्यापी शक्ति (Cosmic-universal energy) का एक स्वयंभूः (Automatic) स्वरूप है। इस महाशक्ति पीठ के चारों ओर आठ भैरवों का निवास है। भैरव का सामान्य अर्थ है :- "भ" भरण (सृष्टि या creation) "र" रमण (स्थिति या Preservation) और "व" वमन (सहार या Destruction)। भरवों की संख्या आठ हैं, इस का तात्पर्य है : पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर तथा चार कोण, जैसे पूर्वोत्तर कोण, पश्चिमोत्तर कोण, वगैरा। इस तरह इनकी गिनती आठ बनती है। इन आठों भैरवों में पूर्णराज भरव सदा चक्रेश्वरी महायंत्र के सामने रहकर लगातार प्रवाहित-जल से अभिषेक करता रहता है। चक्रेश्वरी महायत्र के बायें तरफ दक्षिण दिशा में काल शक्ति महाकाली का निवास रहता है और उत्तर में महायंत्र के दाये तरफ शारिका अर्थात विकास और समृद्धि देवी का निवास रहता है और पूर्व में सिद्धलक्ष्मी का निवास है। शीतला आदि देवियाँ भी पीठ के आस पास रहती है[13]। चक्रेश्वरी यंत्र के पास दक्षिण के द्वार पर गणनायक

13 यामिनी तंत्र.

गरणपति का वास होता है और उत्तर के आस-पास वामदेव या वामकेश्वर का स्थान होता है। चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ का मुख पश्चिम की तरह बना रहता हे क्योंकि हमारी पृथ्वी माता भी अपने दैनिक शक्ति प्रवाह को अपने अक्ष (Axis) पर पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमा (Rotation) करती है। इसी परिक्रमा को कश्मीर के तांत्रिक क्रम-स्तोत्र में अस्तोदित (Rotation) का नामकरण दिया गया है। शाक्त-तंत्र शास्त्र के आधार पर जहाँ भी इस प्रकार का चक्रेश्वरी महायंत्र होता है उस प्रदेश में आंशिक शक्तियों या भगवतियों का स्थायी आवास आवश्यक होता है। जसे चण्डी, दुर्गा, उमा, राज्ञा. बाला, त्रिपुरा, भुवनेश्वरी, सरवस्ती, भद्रकाली, ज्वाला, भर्ग शिखा तथा त्रिसन्ध्या भगवती आदि। यामिनी तंत्र के आधार पर कश्मीर में इन सब ही शक्तियों का भव्य निवास है यही कारण है समूचे भारत में "चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र" मात्र कश्मीर में ही है। महाकवि बिल्हण ने 'विक्रमाङ्कदेव चरित' में कश्मीर के प्रद्युम्नपीठ के चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र को इन शब्दों में अपनी भावना प्रकट की है "यत् प्रद्युम्नक्षितिधरनिभादुत्तमाङ्गं बिभर्ति"[14] (शारिका पर्वत का प्रद्युम्नपीठ महायंत्र गर्व से सिर उठाये हुए है)

यामिनी तंत्र के आधार पर चक्रेश्वरी महायत्र के पाद तल (bottom) में पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में निरन्तर जल कुण्ड का प्रवाह होना आवश्यक है। शारिका

---

14 बिल्हण : बिक्रमाङ्कदेव चरित, सर्ग 18, 15, (10th century A. D.)

पर्वत के पश्चिम में पूर्णराज भैरव का जल-कुण्ड है और पूर्व में पुष्कर बल (पोखरी बल) का जल कुण्ड है [कश्मीरी भाषा में जहां भी पानी या पानी का प्रवाह होता है, वहां बल साथ जुडा रहता है जेसे देवीबल, यारबल, नागबल हजरत बल आदि]

पौराणिक कथा के आधार पर मां शारिका (मैना, कश्मीरी हाँर) का स्वरूप धारण करके अपनी चोंच से मेरु पहाड़ के एक बड खण्ड को उठाकर उस भयंकर राक्षस के उपर फेंका जिसके फलस्वरूप वह राक्षस वही नीचे दबकर मर गया। शारिका महात्भ्य और सोमदेव के कथा सरित सागर में इस प्रकार की कथाएँ मिलती है। नीलमत पुराण (200 B C.) में शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी महाश्रीयंत्र का ऐतिहासिक साक्ष्य इस प्रकार से मिलता हैं :-

आषाढ नवमी चैव यशोविजयकांक्षमि।
पूजनीया महाशक्ति चक्रेशयंत्र वासिनी॥ १७

[यश और विजय की कांक्षा रखने वाले मनुष्यों को आषाढ शुक्लपक्ष नवमी (9th day of Bright fort night of Ashadha) को चक्रेश्वरी महायंत्र की पूजा करनी चाहिए]

नीलमत पुरान से लेकर कश्मीर के सब ही संस्कृत इतिहासकारों ने शारिका पर्वत और चक्रेश्वरी महायंत्र का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। इस में कल्हण, जोनराज, श्रीवर और शुक विशेष उल्लेखनीय है। प्रवरसेन द्वितीय के समय कल्हण लिखते हैं :-

---

15 शारिका महात्म्य. 16 सोमदेव : कथासरित सागर 73, 109.
I7 नीलमत पुराण.

"श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम्"[18] ।। [इसी समय श्री पर्वत अर्थात् शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा]

'श्री पर्वत' शारिका पर्वत का दूसरा नाम है, जिसका संबन्द महाश्रीयंत्र से है। यहां इस बात का संकेत देना आवश्यक बनता है कि मुगल सम्राट अकबर द्वारा बनवाई गई बड़ी दीवार[19] या कलाई से पहले देवी आंगन का इलाका "सिद्धगिरि पाद"[20] तक फैला था। 'सिद्धगिरि' स्थान वाचक नाम भाषा के अपभ्रंश के कारण आज 'सज़गँरी' मोहल्ला है। जहाँ पर पूर्णराज भैरव का मन्दिर और अमृत-कुण्ड (चश्मा) है। देवी आंगन और सज़गरी मोहल्ले के बीच का इलाका आजकल 'हवल' कहलाता है। शक्तितंत्र के आधार पर इसका प्राचीन नाम "शवर"[21] था जो आज 'हवल' कहलाता है। शवर शब्द का सम्बन्ध पाशुपत से है। अतः हवल का इलाका पाशुपत संप्रदाय का एक पावन तीर्थ सगम रहा है। पचस्तवी में इसका साक्ष्य इस प्रकार से

18 कल्हण : राजतरंगिणी 3 267.

19 अबुल फजल :- अकबर नामा 1084-85.

20 कल्हण : राजतरंगिणी 3 378 [कश्मीरी भाषा में 'द' का परिवर्तन 'ज' में हुआ करता जैसे संस्कृत सिद्धकथा (सीधी बात) किन्तु कश्मीरी 'स्येज़कथ' (सीधी बात)]

21 संस्कृत में 'शवर' का अर्थ शिकारी। कश्मीरी अपभ्रंश में संस्कृत भाषा की 'श' ध्वनि 'ह' में बदलती और 'र' 'ध्वनि' 'ल' में बदलती है। इस प्रकार संस्कृत 'शवर' 'हवल' में उभर आया है।

power valuble Property) "घुम्न" के आगे का 'प्र' उपसर्ग (Preflex) है। संस्कृत में 'प्र' का प्रयोग उत्कर्ष (Exalation) के लिए होता है जैसे :- ताप (आंच) प्र+ ताप=प्रताप (विशेष आंच) इस प्रकार से 'प्रघुम्न' का अर्थ है "ब्रह्मण्ड व्यापी अपार चेतना" Infinite casmic conscious enegrgy)। यह एक अद्‌भुत आश्चर्य का विषय है कि कश्मीर के इतिहासकारों ने शक्ति चक्र चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का नाम 'प्रघुम्न' ही प्रस्तुत किया है। कल्हण[26] ने प्रधुम्न-मूर्धनि तथा प्रधुम्नपीठ, जोनराज[27] ने प्रधुम्नाद्रि तथा प्रधुम्न-गिरि, श्रीवर ने प्रधुम्नशिखर[28]। सोमदेव ने भी अपने कथासरित[29] सागर में शारिका पर्वत के लिए प्रधुम्न पीठ का ही नाम दिया है। जोनराज सुलतान बडशाह के दरबारी इतिहासकार रहे है (1420 59 **A.D.**) उनका कहना है कि सुलतान बडशाह ने प्रधुम्न पीठ की तलहटी में ही अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा। जोनराज के कहने का तात्पर्य यह कि सुलतान बडशाह ने शारिका पर्वत के प्रधुम्नपीठ की छात्र छाया में अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा[30]।

कश्मीर के शाक्त सप्रदाय (cult) का सीधा संबन्ध विनष्ट हराप्पा की संस्कृति से है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण

---

26 कल्हण : राजतरंगिणी 3.460, 7.1616
27 जोनराज : राजतरंगिणी–589
28 श्रीवर : जैनराजतरंगिणी–1.7.104; 2.88
29 सोमदेव : कथासरित सागर 73,109.
30 जोनराज : राजतरंगिणी - 589.

"श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम्"[18] ॥ [उसी समय श्री पर्वत अर्थात् शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा]

'श्री पर्वत' शारिका पर्वत का दूसरा नाम है, जिसका संबन्द महाश्रीयंत्र से है। यहां इस बात का संकेत देना आवश्यक बनता है कि मुगल सम्राट अकबर द्वारा बनवाई गई बड़ी दीवार[19] या कलाई से पहले देवी आंगन का इलाका "सिद्धगिरि पाद"[20] तक फैला था। 'सिद्धगिरि' स्थान वाचक नाम भाषा के अपभ्रंश के कारण आज 'सज़गँरी' मोहल्ला है। जहां पर पूर्णराज भैरव का मन्दिर और अमृत–कुण्ड (चश्मा) है। देवी कांगन और सज़गरी मोहल्ले के बीच का इलाका आजकल 'हवल' कहलाता है। शक्तितंत्र के आधार पर इसका प्राचीन नाम "शवर"[21] था जो आज 'हवल' कहलाता है। शवर शब्द का सम्बन्ध पाशुपत से है। अतः हवल का इलाक़ा पाशुपत संप्रदाय का एक पावन तीर्थ सगम रहा है। पचस्तवी में इसका साक्ष्य इस प्रकार से

---

18 कल्हण : राजतरंगिणी 3 267.

19 अबुल फजल :- अकबर नामा 1084-85.

20 कल्हण : राजतरंगिणी 3 378 [कश्मीरी भाषा में 'द' का परिवर्तन 'ज़' में हुआ करता जैसे संस्कृत सिद्धकथां (सीधी बात) किन्तु कश्मीरी 'स्येज़कथ' (सीधी बात)]

21 सस्कृत में 'शवर' का अर्थ शिकारी। कश्मीरी अपभ्रंश में संस्कृत भाषा की 'श' ध्वनि 'ह' में बदलती और 'र' 'ध्वनि' 'ल' में बदलती है। इस प्रकार सस्कृत 'शवर' 'हवल' में उभर आया है।

वर्ण क्रमानुसार भजन सूची

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ती हुन्दुय टोठ संतान ।
महा गणपत जय जयकार ॥

त्रि नेत्र धारी छुक च़ एक दन्तो
ड्यूकि छुय शूभान चन्द्रम तार
गज़ मुख बाल चन्द्र लम्भूदरो। महा०

सिज हंदि दात छुख च़ विनायको
वल्लभा ह्यथ गगुर वाहन
दीवन हंदे च़य सिद्धि दातो।
महा गणपत जय जयकार।।



नमः शिवाय

तारि छुस गोमुत तार दिम भवसर.
शंकर ईन्य आर म्योनुय ॥

१ यावुन ह्यथ गोम यिथ प्योम बुजर
स्वप्न वथ ओस लुकचार म्योनुय
न्यथ हाव शिव रूप मंज चि़थ मन्दिर.। शंकर०

२ माया ज़ाल वठ रठ च़ठ अकि दर.
लबि कनि थव परिवार म्योनुय
अन्तर मुख रोज़ सुख भर. दुःख हर. शंकर०

३ वैराग्य मछ़ जोर सु.ति त्याग खंजर.
देह अभिमान मद मार म्योनुय
जिन्द थव वांसि सू.ति सेज़र त. पजर.। शंकर॰

४ वासनायि म्यानि मंज बस प्रकृति पर.
पछ़ि सुस्त थव आचा़र म्योनुय
लछ़ि प्यठ प्योमुत छुस करतम खर.। शंकर॰

५ क्या कर सारे वांसि कोर म्य गर. गर.
कस अकिस वोत उपकार म्योनुय
नशनिक वेल. पशनुय व्ययि अरसर.। शंकर॰

६ वासनायि अरखोरस करनाव अर.
च़न्दुन कर दिवदार म्योनुय
यारि ह्यु सब्ज कर अद वन्दस दर.। शंकर॰

७ अन्न दात जानि मंज ख्यन चन उदर
सु आहार पूर्ण बेचा़र म्योनुय
असत्वुथ च्य कुन कर शांती ओक पर.। शंकर॰

८ सास ब-ज़ उलट रायि कोह जन गयि खर.
घास कचि ह्यु विस्तार म्योनुय
दय छुक त लय कर निर्णय-नय स्वर.। शंकर॰

९ प्राख जन्मचि खंडिथय आघि गयि खर.
अति क्या पकि वाटजार म्योनुय
थोद तुल त. पथर प्योमुत प्यठ थर.। शंकर॰

१० प्रारब्ध फल बूगनुय छुम त. क्या कर.
पोत फेरनस छुन वार म्योनुय
प्रानि वैर मंज़ कड नवि धैर्य सू.ति दर.। शंकर०

११ दोह आयि छोय दित अन्दर त न्यब्र.
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय
परद थव कोंग पोश हरद क्यथ गछ़ भर. । शंकर०

१२ छ्योट त. श्रूच़ मत. वुछत. अछत. म्योनुय घर.
शिव लूक ह्यु बनि द्वार म्योनुय
यमदूत खोच़न सू.ति अभय बर. । शंकर०

१३ छ़िट वासना म्यानि छल निर्मल सर.
काम क्रोध चमार मार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति वातिज जन वर हर. । शंकर

१४ विचित्र पूज़ च्यत नेत्र कमल कर.
इन्द्रिय शुत्र रूग हार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति प्रेधान करनेश्वर. । शंकर०

१५ पाद थकि पकि. पकि. नाद करत. अन्दर.
खलवत बनि दरबार म्योनुय
ज़गतचि रक्षायि हंज़ विन्था कर. । शंकर०

१६ उपकार सू.ति पननुय छुक च. वुपर
रचि़ वति लगि रोज़गार म्योनुय
दात नाव कडनावतम ज़गत ईश्वर. । शंकर०

१७ कम कार करनि आस गम कास दम भर.
यार छा यि भ्रम संसार म्योनुय
ही अगम अपार ही दिग्मबर हर.। शंकर०

१८ लूक हंज़ि ज्यवि परनाव परात परात
परनय महिमना – पार म्योनुय
पुष्प दन्त आचारि बन नन्दकीश्वर। शंकर०

१९ सत संग रंग दिम राय मुख भंग पर.
ध्यान सू.ति प्राण सन्दार म्योनुय
यति तति शुभ अन युथ न. वति प्यठ मर.। शंकर०

२० अज्ञान काठ ज़ालित भस्माधर
तीज़ रूप थव आकार म्योनुय
देह कतिरिस दुह कास भास भास्कर.। शंकर०

२१ चित. पीडा कास नत. यति क्या कर.
मृत विज़ि छांड हितकार म्योनुय
ही इष्टदीव भ्रष्ट प्रकृत थव म. ज़र.। शंकर०

२२ पाप ज़ाल अग्नि नेत्र सू. ति जटादर.
चय छुक व्यग्न. हस्तार म्योनुय
न्यवरथ दिम अछि क्याज़ि लगनम धर.। शंकर०

२३ शुरि त. वा'च बुछ बुछ ओश त्रावान जर.
कुस वदुन स्यद करि कार म्योनुय
यिन त्युथ मर. ध्यान. निश गछ. व्यसमरः। शंकर०

२४ वांसि ह्न्दि करतूत ओंठकनि गयि खर.
मृत विज़ि ती निवार म्योनुय
मन निम परम सुख दिम परमेश्वर। शंकर०

२५ हे महेश ज़गत ईश हे विशेष ईश्वर.
छति कीश बोज़ ज़ार पार म्योनुय
दीश. दीश. फिर म वातनाव पननुय घर.। शंकर०

२६ मोह् मस चथ छुस दूश लद फिर म्य सुर.
आशतोष केंछ़ा यार म्योनुय
कृष्णस मोच्च प्राव नाव अमरीश्वर.। शंकर०



फुल. वनि सोन्त. छुय म्योन सालो।
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन।।

१ आरवल आर कंच् गयि. कमि हालो
च़ालि च़ालि ओश दारि हारान छस
यच् काल गव वुछ प्रार कूत कालो। लालो०

२ यमबरज़ल लजमच् भुमबरनि जालो
व्याल ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुयमु लालो। लालो०

३ माय चानि सुलि विलि फोज़ि ही मालो
लंयि लोस इ.य कर दियु दर्शुन
द्रिय चानि छम वुछ यूत नो ब. च़ालो। लालो०

४ रोश रोश करहै पोषन मालो
रोशि मति गमोय ना गोशन म्योन
रोशि मा पोष.नूल दोह गछि वोबालो। लालो०

५ आदनुक याद पाव बाद. मो डालो
नाद लोय कुकिलव गीविन्द गू
आदन बाजि म्यानि त्राव शुरि खयालो। लालो०

६ ब्रा'लि वन्त. इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनन्य ग्राय मारान
का'लि मा रा.वव कस क्या मलालो। लालो०

७ साकया प्याल चाव माला मालो
युथ न.स. बाकी रोज़ी ग्राव
मस चथ रस. रस. बन. मुतवालो। लालो०

८ सास मंज खास सुय रटहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपालो
भासकर सास छुय ना'ली नालो। लालो०



१ म्य सोंगो पान. दर्शुन चोन बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज राग चोनुय वनि सन्यमना शारिका दीवी।

२ म्य पियिना: माज्य पायस मन, ब. करहय चात्र आराधन
म्य अन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यमना शारिका दीवी।

३ यि दिल म्योन ज्ञन छु क्रेन्खा अख,
लगित क्रेहज्ञर छु अथ प्यठ सख
अक्षर अथ पन.नि भक्ति हुन्द ख.नखना शारिका दीवी ।

४ ब. छुसना क्रूर अज्ञा'नी, स्यठा मुरखा त. अभिमानी
म्य माता गाश ज्ञानुक सु'य अन्यमना शारिका दीवी ।

५ लगान कोताह मधुर दुनिया, यि खा'ली आसवुन स्वप्ना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक न. न्यमना शारिका दीवी ।

६ दिवान भ्रम आय मोह माया, दया करिना महा माया
म्य संसारच यि मोह माया छन्यमना शारिका दीवी ।

७ ब. प्रेमी छुस तसुन्द अभिलाश, करिम ना माज़्य पूरण आश
उपाया भव.सरस तरनुक करिमना शारिका दीवी ।



होश. पोश. नूल थव कन
वाणी वन हारि लोलो ॥

१ राधा कृष्ण कृष्ण वन लोलनि अशि दारि लोलो
रंग किञ तस ह्य बन वाणी०

२ गु'ड कर मन बिंदराबन अद. नेर ब'रि त. दारि लोलो
श्याम रूप वुछ हन हन वाणी०

३ चाव वीद कामदीनन थन भखचि हंज़ि चड़वारि लोलो
चथ बनि आनन्द गण वाणी०

४ तती व्रच़ गूपियन कुरमुत छु मन तारि लोलो
व्यापक वासुदीवन वाणी॰

५ प्रेम॰ सू.त्य कर मन विन्द्रा वन नाद लायस प्यार लोलो
भक्ति भाव॰ अख वनि दु'न वाणी॰

६ बुज जसुदा छ़.स ललवन मूह पूतनायि मारि लोलो
यछ़ बवि दु'ध चन सतज़न वाणी॰

७ भक्ती मंज वन अरज़न रथ॰ वान सुय लारि लोलो
किसि प्यठ छुस गोवर्धन वाणी॰

८ मन॰ वाजे कृष्ण नाव खन धीर॰ अल्मास तारि लोलो
गलि पानय क्रूध॰ दर्योधन वाणी॰

९ हिमसाये कंसस मारन सूक्ष्म दारे तलवारि लोलो
माझि यइम राज तस ह्यु ज़न वाणी॰

१० खटय़् खटय़् छु नोन वासन अंदरिमि छपि छारि लोलो
चित़् बुज़मल॰ घट कासन वाणी॰

११ वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो
सब्ज ज़न लगि च़रणन वाणी॰

१२ दास यति राम खेलन व्यास नारुद त॰ लारि लोलो
बोलनावुन शुकदीव ज़न वाणी॰

३१ यूगियव भूगिथ भूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो
निर्मल निष्कल निरगुण वाणी॰

१४ कृष्णास टोठ विष्णारपन नत॰ यति क्या लारि लोलो
जान्य मंज तस ति सोहम अन वाणी॰

ॐ महाराज्ञायै नमः

व्यज्ञान मूर्ति राज्ञा ज्योती सुज्ञान आश्राण च्य प्रज्ञावान
सत् चित् आनन्द गण उदैती कोटी सूर्यन हुंद च्य प्रकाश
सुराट भाव. किन्य फैले मची विराट रूपस बाह्य अंतर
सम्राट शक्ति सम्वित ज्योति तत् त्वमसि पद चोन विकास
पूर्णा पूर्ण. तीत सम्वित ज्योति भेदा भेद पर शिवाद्गर
खन्डाखंड अवतरणन भगवती, सत् सौ प्रकाश



अन अपीक्षत भावनावतम पूर्णानन्द म्य मनस
टोठि तस विन केंह न ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।

१ पांन्य पानय ज़ान ज़ानिहे मानि बूज बुज़मानि हे
क्युथ त. क्या, कति तति व्यपान कव. नवि हे त.प्राणि हे
बोज़िनय बूजिथ त. रोजि नय कुच् वाय् वन्य नय मनस
टोठ तस विन्य केंह न. ज़ानुन, गव ज़ि टोठयोम दय मनस

२ भोग भुक्ता क्षेत्र क्षेत्रज्ञ शिव शक्त. ई वुनुय
शम त. दम तय भाव भावना भक्त मुक्त ई वुनुय
चक्रवरतस त. कंगालस वयि वुंन ई वय मनस टोठ०

३ ब्रह्म निर्वाण शब्द प्रकाश अन्दर. न्यबर. अछरी
हुंल त. स्युद शुज़रिथ श्रोचव सू.त्य वार पाठ्यन् वाश रुस्त
दगि. लोलच लगि हे क्या रगि रगि ई पै मनस टोठ०

४ जग छु संग्रामा त. मन छुय राज. अमिकुय ज़ेन वन्य
वासना न्यरवासना ह्यत अप्रमानस मेनवुन
छुन. पु'त फेरवुन वन. हा कोताह जि़ लय मनस टोठ०

५ आईनस मंज वुछत केंह मा वुछ वुनिसीय रुस्तुय
आन. मंज मा मु'ख छु खटान, कांह ति अनिसुय रुस्तुय
आस मो उ'न कासती, गव खास कासिन खै मनस टोठ०

६ मन व्यचारव तय मदारव सू.त्य अनुन होश. सय
मु'त लु'त लु'त होश अनुन पज़ि तिय मनोशसी
नत. क्या सुय पलज वुनुय, आसि ख्यन. ख्यन प्रिय मनस टोठ

७ शल्प शल्पत सोर कलपित कलप. कल्पांतन लगुन
पजि दु'य त्रावनि छु प्रावुण युस इ रावन अथि युन
व्यापि कुस तस व्यापकस पुरुषार्थ पोश हा बुय मनस टोठ०

८ ब्रांत तै भ्रम ज़ोनमुत संसार प्रान्यव ई वुनुख
सोंथ हरुद पनुन त. परुद दफत. तिम इम मा च़ छुख
वोन्त छा यथ भवसरस रंग रंग छिर चोय-ई मनस टोठ०

९ साध सन्त छिन. अंत ज़ानान आदि यस छुन. आसवुन
श्रूच़ हन्दे आगन्यायि सू.त्यन एक छु अनेक भासवुन
सारिनुय सुय ज़ाननुय छुय करत. ई. निरनय मनस टोठ०

१० पान. छुन. करता अकरता भाव अभावै बुरमुतुय
राव. राविथ पान पन.नुय होश. बुरमुत परमुतुय
त्यलि पष्यस करमच़ यि क्रय, ख्यति यलि च़लि रै मनस टोठ०

११ आस परमानन्द प्रावित, परमानन्द ब्युन म. रोज़
स'रिसुय मंज़ सारिसुय ह्यु पार सुय वात नुन म. रोज़
ई.य चेतन रूफ प्राविथ. कति विखेफ ओर लै मनस टोठ०

१ भूल बाल. बालकन सू. ति खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावनावतम
ज़ान करनाव तम पान परज़ नाव तम
सुधि वान्यन पाठ्य् हाव तम रूप ॥

२ कठिने भवसर छांठ वायनावतम
मुह पोत्र वोतुम हटिस.य तात्र
लटिस.य वृषभस थप करनाव तम सुधि०

३ थज़रै प्यठ-अख नज़रा त्रावतम
शेशरम नाग म्य थावतम नेब
वनि इत. अनिरकि सनिरै म. रावतम सुधि०

४ ब्रह्मण जन्म दिथ मत. मन्दछावतम
नभ प्यठ बुन मत. दावतम दभ
अमर नाथ अमर बनाव तम सुधि०

५ दासन हुन्द दासा गंजराव तम
मत मशि रावतम पननी ज़ान
यति छख पाने तोल वात नावतम सुधि०

६ अज़पा जप यज्ञ ज्योत प्रज़लावतम
होद शीश ज़न मुच़रावतम म्य
ही महेश छति केश मत दिशरावतम सुधि०

७ सत् चित् आनन्द अमृत चावतम
नित्य बास नावतम सोहम सू
ॐ शेव शम्भू शब्द शुभरावतम सुधि०

८ मुह मायायि सू.ति मत. तंत्रलाव तम
सत्‌ची कथ पावनाव तम याद
चित् कुयि चेनुन निथ चेन. नावतम सुधि०

९ सत् के निर्णय पयि पक. नावतम
दय पनने नय हावतम वथ
नाव छुम कृष्ण शिव भाव बढरावतम सुधि०

आशि चानि बरतल आस अनाथ।
दास कव. छुस उदास अनाथ॥

१ त्रय. ताप. दुःखमुत प्रेमुक स्नेह,
नेह छम न. च्यय व्यन ख्यम ना वेह
त्रेश. त्रेश. जन्म. जन्म. पिपास अनाथ दास०

२ इन्द्रय हन्दरा'विथ छुम मन
सन्दरिथ लोल रेह छुस न. हिवान
दुदमुत कमि. क.इ कास. अनाथ दास०

३ होन्यन अथि प्योमुत शाल जन
हाचि सू.त्य रुदुम न. नम न्याल नुं'न
काल गुं'फि सह सनदि त्रास अनाथ दास०

४ सास क्रूह छंडिथ आशावान
अथ छुन फीर्य फीर्य यूर्य. इवान
लब. तव. देव. बरन्यास अनाथ दास०

५ होशव वो वूनचमुत रोशन छुइ
वन. क्या हाल म्योन. रोशन छुइ
प्योमुत च्यानि श्राम. खास अनाथ दास०

६ पजि यी ती करनावत. म्य
ज्यथ ज्यथ मत. मरनावत. म्य
परमानन्द यूग अभ्यास अनाथ दास०

– ० –

परम. धामुक म्य चावतम दामो
सत्गुर. मोक्षदायक रामो॥

१ त्रय. ताप कामनायि आमतावै
व्यसरावान छुम भक्ति भावै
फिरवान त्रशना गाम. गामो सत्गुर०

२ गा'लिथ काम क्रोध ज़ा'लिथ तम
सार द्राव पथकुन कुनुय सोहम
अनुग्रह. चान्यि सू.त्य गाश आमो सत्गुर०

३ जिंद युस मरि तस क्याह करि काल
रोज्यस न. गरि गरि मरनच ज़ाल
प्रेम अमृत चावतम दामो सत्गुर०

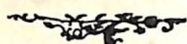
४ मन तय प्राण युस करि अरपण
सन्मुख सुय वुछि नारायण
इथ. पाठ्य लछमणन वुछ रामो सत्गुर०

५ तारि भवसागरस चोनुय नाव
नाव तरि त्यलि यलि गलि वरज वाव
फटि न. जि रोज़्यस न. पत. पामो सत्गुर०

३ सूरुम श्रम च्य पुशरोवुम पान
निर्वाणकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मल निष्कल निष्कामो सत्गुर०

७ मूह त.रि सू.त्य छ़स बर. गोमुत
संताप ताप ज़र ज़र. प्योमुत
होल चलि चाञि इन लोल आमो सत्गुर०

८ राम लक्ष्मण च्य वन्द वञ पान
परम आनन्द आनन्द प्रावाण
दाम. चावतम योग. बल. रामो सत्गुर०



च्यथ आकाशस भास्कर म्य बासतम
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भो ।।

१ लम्बोदर. सुर. गुरु. हर शंकर गंगाधर सोहम सो
ज़ान गाश सो-प्रकाश आस्तम त. कास्तम हच़र०

२ तन. मन. सुउन वगुन हनि हनि ननि
फना फिला बजान शिव शम्भो
सनिधान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम हच़र०

३ राम. श्याम. कृष्ण विशन शेव भव. भय. हर
सर. कुरजि वुजि ओम हमसू
निष्क्रयमय न्यरणाय पयि भास्तम हचर०
४ जल. थल. निर्मल. निष्कल. ओजल.
सम. बल स्मरणायि दिम शम्भो
कल. माल दारवञि हनि हनि भास्तम हचर०
५ सोवुन्द परमानन्द. आनन्द. कन्द.
नाद. व्यन्द कृष्ण चन्द शेव शम्भो
ध्यान धारणायि ज्ञान मुख. सुख. आस्तम हचर०



कष्ट कास्तम भगवान हरे
संतुष्ट रोजतम गरि गरे।
१ भ्रमचे वुनरे वुन. रोवुस
मूह छटि अञि घटि वति रोवुस
च्यय रुस्त कुस मे अथ.रुट करे संतुष्ट०
२ भव. सर. कूर्म.नय रटिनम खोर
इमज़ोर ला'गिथ गोस कमजोर
छांबरि लुगमुत छुस बांबरे संतुष्ट०
३ वीर. ब. लागय शेरि पम्पोश
गद गद वानियन थावतम गोश
वद. वद. यच छुम मिज मा हरे संतुष्ट०
४ वैकुण्ठ प्यठ इत नन. वोरुय
गरुडस खसिथ त्रा'विथ सवा'री
मुकलावतम संकटच थरि संतुष्ट०

५ संकट मंज तस प्रह्लादस कन थोवथस आरचर नादस
हरनाकश्यप. अद. मद. वुतरे संतुष्ट०

६ हंग आव द्रौपदी नंग रछिथस नंग. वुछनस तस सामरथ कस
रंग रंग आभरण ना'ल्य तस हरे संतुष्ट०

७ लक्ष्मण छारुन परमानन्द चर चराचर युस अंद त वंद
लो लो करान नेरि उन लोलरे संतुष्ट०

– ० –

सनियासय हा गोसाञे कुञि कञे इखना वञे ।

१ जटि मंज छय गंगा जा'री जन छि वसान अमृत धा'री
सूर. भस्मा मलिथ छु तने कुञि०

२ डयकस प्यठ छिय इम त्रे नेथर शूभवञ ज़न पंम्पोश वत्थर
वासुक नाग छुय योञि कञे कुञि०

३ जाय च्य रटथम शिन्या शियन छायि छयफ ह्यथ रूदहम नयन
सर्व व्यापक छुख हनि हने कुञि०

४ खास वृषभा छुय वाहनय सैर. करान छुख त्रभवनय
छय च्य उमा खोवरि कञे कुञि०

५ पान म्यान्यो मो नाज़ तने काल वरिथ यऽथ सू.र बने
शिव च. गारुन मंजबाग मञे कुञि०

६ आ'रतिस कास्तम आ'रचरय घट. कास्तम अमरीश्वरय
मु'ख म्य हावतम हरमुख कञे कुञि०

७ चोन भुज़न छिय आयुधा शंख चक्र कपाल गधा
सारिन.य मंज छुख अन्दकञे कुञि०

ॐ नमो जगदंबिकाय ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(प्रथम तरंग)

(१)

१ गो.डञ गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
पतह् रठ राजरेनि हुंद खास· दरबार॥

२ वंनित क्या ह्यक· ब· देवी चांञ लीला।
करै वोंञ मूर्खगियि किञ मूखं· खेला॥

३ च· माता शारिका संतुष्ट म्यं प्यठ रोज़।
गदा आमुत ब·दर्गाह् छुस सदा बोज़॥

४ वहांरित ज़ाल संसारन वो.लुम नाल।
करुम वो.ञ चार· नत· क्या म्योन छुय हाल॥

५ मदन लोभन मोह्न क्र-मच् छनम जाय।
कृपाये किञ करुम मो.कलावनुक पाय॥

६ अहंकारन स्याठाह् ह्यो.तमुत छुनस तल।
इमन चो.न मुशकिलन माता करुम हल॥

७ ब·दर्शन छुस न वातान न्यथ भवानी।
क्षमा पापन म्यं करतम मांजि भवानी॥

८ को.ठयन शक्ती अंछिन थावतै पनुन गाश।
दरई दुनिया फकत चांञिय म्यं छम आश॥

९ म्य' मूर्खस गछत. बूजित मा'जि भवानी ।
सिवाये चानि वन. कुस छुम म्यो'नुय ।।

१० दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास ।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल. य आस ।।

११ कर्मफल. किञ अगर कॆंछा म्य छुम पाप ।
क्षमा सागर च़. य'मि किञ छक करुम माफ ।।

१२ कलम तुल. पान. लेख म्या'ञ कर्म लेखा ।
करुम स्य'ज़ कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा ।।

१३ कृपा सागर. जगत माता छु चोन नाव ।
शरण आसै पद्यन पनन्यन तल.य थाव ।।

१४ सिवाये चानि छुम नह कांह रछन वोल ।
च़. देवी म्या'ञ छखना मा'जि तय मोल ।।

१५ भुजव अष्टादशव सूति कर च़. रक्षपाल ।
च़. य'मि किञ आस. वञ छख दीन दयाल ।।

१६ च्य रुस्तुय कस वन. कुस बोजि म्योनुय ।
ब. छुसना नाबकार सन्तान चोनुय ।।

१७ यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज़ानान ।
कु पुत्र छ़य कु माता छय न. आसान ।।

१८ मंगुन छम न तगान बोज़ुन तगान छय ।
चव.वुन शुर मा'जि इथ पा'ठि दो.ध मंगान छ़ुय ।।

१९ दिलस य'च कोल अमिकुय छुम म्य हावस।
दितम दर्शुन लगय पा'र्य पार्य ब. नावस॥

२० ब. चान्यन पादि कमलन रथ वन्दय ना॥
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करय ना।

२१ पनुन ज़व जान वा'लिजि खोंठ वन्दय ना।
पन.नि इम टा'ठि छिम सा'रिय वन्दय ना॥

२२ लगय ना चाञि मायाये लगय ना।
लगय ना बजि दयाये लगय ना॥

२३ इमन पंम्पोश. नेत्रन च्यय लगय ना।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना॥

२४ यि केंछा छुम चोनुय च्य वन्दय ना।
क्षमा करतम क्षमा करतम च. क्षसा॥

२५ च. छकना राजस्ञि राजन दिवान राज्य।
अतीत आमुत छुस ब. बख्शुम ज्ञानकुय ताज॥

२६ गछान दिथ छक अमीरन च.य अमीरी।
दरई दुनिया म्य करतम दस्तगीरी॥

२७ च्य निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर।
म्य पादन तल कृपाये पनञि किञ वर॥

२८ ब. जा'री छुस करान च्य'य दस्त बस्तै।
करय अंपन जिगर ज़न पोश. दस्तै॥

२९ दो.युम ब्याखा च्य ह्यु छुमन. कांह् ति दाता।
बहर क.स्मुक मदद कर स्योन माता॥

३० गंडित गुलि छुस करान च्यय ज़ार. पारह।
प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह॥

३१ परैशा'नी यि स्या'ञिय करत. वो.ञ दूर।
इच्छाये दिल क'रित गछ़तम स्य मन्जूर॥

३२ च. छख स्या'ञ इष्ट देवी कष्ट कास्तम।
सदा सन्तुष्ट रूज़ित मनि भास्तम॥

३३ वनान सा'री छि चाञे जायि सिद्ध पीठ।
सिद्धत करतं स्य ह्यू मोक.लित गछ़िय कीठ॥

३४ व. कश्मीर का.ति व'थि नेकनाम सतजन।
कृपाये चाञि किञ सरतलि बन्योक सो.न॥

३५ मूर्ख बोज किञ न छुम शक्ती न भक्ती।
दयालु छख गछुम बख्शित स्य मुक्ती॥

३६ व. छुस आरुत बन्योमुत आर्वल ज़न।
गछ़र च़लिहेम बनिहेम आ'न. ह्यु व मन॥

३७ अगर रछ़दं पद्यन तल कुस स्य पोर्यम।
तवै किञ चा'ञ भक्ती ज़ाह न. सोर्यम॥

३८ कबूल गछ़तम क'रित वो.ञ स्या'ञ ज़ा'री।
वन्दय रथ पादि कमलन मा'जि चो.पा'री॥

३९ यि लीला परि युस सुबहन त. शामन।
तं'मिस देवी सफल करि मनि कामन॥

४० दपान 'दासस' छ्य चा'निस टा'ठ भक्ती।
ब दुनिया सुख ब उकवा दिम म्य मुक्ती॥

---

(२)

ओं श्री गुरुवे नमः।

संसार. सागरस सुम दिथ तर अपोर।
गछ शरण सतुगोर. न अद. घाट वाति बोर॥

१ जीव. अद्यास. जख्मन निज़ानन्द बुलगार
सतुगो.र यलि दियि अद. बलि बेमार
निर् रोग बनि योग ज़ख्मन बेहि् कोर गछ०

२ मोह. बां'दिवानस काम क्रोध पहर-दार
बेडि खुल. गछन यलि ज्यवि श्याम. सुन्दर
वसुदेव खो.नि ह्यथ जमुनाथि तारि अपोर गछ०

३ दुख. सागरस मंज देह अभ्यास करनाव
पो.त नम. त. ब्रूं'ठि नम. संकल्प. विजि वाव
वठि यलि फटि नाव मटि कस छु म्योन बोर गछ०

४ गुरु. वाक्य. किञ गर भक्तियि हंज नाव
सतगौर हा'न्ज ह्यथ सुख. सागरस त्राव
वाव वछुत त्राव नाव वो.टि मंज गछ़ अपोर गछ०

५ मोह राज. रावुण राग. राक्षसन ह्यथ
शान्ती सीताइ रामस चो.ल ह्यथ
लंकायि मंज ब्यूठ दैतन दितुन ज़ोर गछ०

६ राम बन सागरस सोथ दिथ तारुन
रावुन मारिथ सीता तारुन
शत्रु रुस्त राज्य कर पृथ्वियि चलि बोर गछ०

७ सत्गो.र सागरस स'निस त. वोग.निस
व्यापक छु पानय ग'निस त. त.निस
सत. कथ भावनय वो.टि तरख अपोर गछ०

८ ज़ानखय सलाह गोड. घ'निराव श्रद्धा
गुरु वाक्यस प्यठ ठीकित सदा
अनुभव. अनुग्रह. दारि खुल. गछिय तोर गछ०

९ क'दलुक असबाब कर्मुक विस्तार
वैराग गिलकार शम दम छान खार
मुक्तिता ह्यथ बनाव नित्य अनित्य'च सोर गछ०

१० सथ डेडि सथ ठ'ठि तत् पद विशेषण
ठ'ठि दिस तमिकिय लिमय तथ शोभन
निर्वैर. भावुक कानुल तरि अपोर गछ०

११ चिल दिस बन्द मुक्ती हुन्द अध्यास
निष्काम. बल छुय छ्ल छुय श्वास उश्वास
जीव. ब्रह्म एकतायि हुन्द दिज़यस ज़ोर गछ०

१२ निर्द्वन्द्व. निर्वैर. निरअपेक्ष भावुक
दिस फरश काठकर गंड़स शुद्ध. भावुक
सतसंग मारजन साफि फिर चो.वापोर गछ०

१३ तत्व ज्ञा.नचि डेडि डीडि वोञ प्रबुद्ध
वेदान्त सार तस नित्य. निज आनन्द
मज़बूत ठीकित यपारि तर अपोर

१४ आद्य अन्त. मध्य. निश. त्रिशून्य नाद बिंद
निमित्त उपादान कारण छ़ अबिन्द
एक. भाव. यपारि अपोर कुन दोर गछ०

१५ हरद्वार आण कर सां'पनिय शुद्ध मन
भिन्न भावस स.ति ठीकित छु अभिन्न
निर्द्वन्द हर मोल हरमो.ख. द्राव सोर गछ०



(३)

मनि छुम मेल.हा पननिस यारस,
प्रारस अ.शि मुकाम।

१ व'नि म्य दिचा़म यथ भव. सरस,
व्रन.कस वनि नो आम।
क्षण. क्षण. छ्यन नो तस.दिन कारण प्रारस०

२ बुलबुल मुश्ताक छुय गुल ज़ारन,
ज़ाह् ति नो तमन्ना द्रास।
का लि मा खज़ान लगि इथ बहारस प्रारस०

३ अ'दरी व'नि द्य़ वो.न्दि मंज़ यारस,
मंदिरस अन्दर चाम।
सौदा भ्यो.न भ्यो.न छु साहूकारस प्रारस०

४ दु:ख छुम पूशुस न. लानिनिस कारस,
नत. क्याह् लेखन. आम
ती बो वनहस प्यथि ना पायस प्रारस०

५ युन त. गछुन छुय प्रथ ज़ीव. द्वारस,
इन. इन. मुस हो चाम।
सर. को रथ.य नो इथ स'सारस, प्रारस०

६ सुय नाव स.ति छुम मे नाव तारस,
यमि नाव. सांपनुस राम।
'वासुदेव' लयि रोज त.थि दीदारस प्रारस०



(४)

पाद. कमलन तल ब. आसय, करनि चा'न्यिय अस्तुती।
मोक्ष दिम बो.ड वर्ग दिम हे भर्ग. शिखा भगवती॥

१ गोम नेत्रन खून जा'री, छुस च्य कुन जारी करान
भास प्रत्यक्ष कास ख्वा'री, असि छि पापव व'लिम.ती पादि०

२ चानि आशायि योत ब आसै. ना उमेद नेरै न. जांह
या म्य वर दि मोक्ष. दामुक, नत. छुसै प्रारान य'ती पादि

३ लोल. बागस पोश फो.लि मे, वेरि चान्ये चा'यँ
शेरि लागै भाव कोसम, शोल व.नि कारे प'ती प०

४ क्या वनय अ'सि मंदछेम.ति, चन्द. छ'नि सोदा करान
कर दया वो.न्य वुछ म.तथकुन, शर्मि स.ति अ'सि ग'लिमती प०

५ चा'नि गुण विस्तारनुक ताकत, अनि कुस कस वनिय
छुय च्य जय जय शाम.सों.दरी, जाम. शूमान छी छ'ती पादि०

६ ज्ञान. दाता मोक्ष. दाता छुख, ज़गत माता च् छुख
हे भवानी कर म्य' वा'णी, स्यद्ध मुखस दिम सरस्वती प०

७ पज़ि मन. युस भक्ति चा'न्यी, करि निष्कल राथ. दिन.
क्या छु संशय तसंदि बापत, मोक्ष.दाम. कि बर व'थी पादि

८ चा'नि गुण छुस बो विचारान, पन ओम. कि खरान ब. छुस
अबसनकि वर.,दो.न कुनुय कर, नत. छु आछुर क'ति क'ती प०

९ सर्व. व्यापक छुख चो. पा'री, अ'सि छि शा'री क्या वुछव
वन च्य' रुस्त कुस बोज़ि ज़ारी हाव मु.ख प्यठ पर'बती पादि०

१० कर्म. हीनन धर्म हीनन, कर्तव्यन सान्यन म. वुछ
डाल स्यो.ध अथ. कर्म. लानिस प्रक्रमस चा'निस ख'ती पादि०

११ वील.ज़ा'री बोज़ 'विष्णस' रोज सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्य' रौशन छुस ब. तोषण, चय म्य वख्शक थ'ज.गती प०



(५)

हे कृष्ण. दया छुय ना गछ़न, श्रम दिथ मच़न गोख।
श्रम दिथ मच़न न्यन्दरि ह्यच़न, श्रम दिथ मच़न गोख॥

१ क्याह रुत समय ओसुय त्यले, यते च. राधा ह्यथ
प्रेम. स.ति रास. मंडलस मंज़ नच़न। श्रम०

२ अन्तर बहिर रातस दोह्स, असि भाग्य. वुठव स.ति
तोलान प्रेयम बोज़ तारच़न। श्रम०

३ दर्शन दि करुणाकर. भक्त. वत्सल, उदास क'रित गोख
अथ रो.ट कर व्रच. गोपियि क'च़न। श्रम०

४ गोपियि शुराह सास ह्यथ, शुराह छु खेलान रास
आशचर-इ कस ओस वो.ज़ मंज़ अच़न। श्रम०

५ माया मोहन चा'ञ मन मोहन, मोहन म्यो.न म्यो.न ओस
मोहन रंग रूप आमुत मुन्यन। श्रम०

६ अमृत रूपी दर्शन. मो.खय, व्याकजि गा'मच. छय
शुर्य ज़न बो.छे ह्यच़न वछ़न। श्रम०

७ छयन कमि सो.नि साञ्ञि द्युतुय क'रित, कन क'मि भ'रिय सा'नि
मन सोन इनस छुय ना पच़न। श्रम०

८ अमृत. वषण. नारायणो, शेहलाव मन.य सोन
सन्ताप भव सागर. दज़. मच़न। श्रम०

९ असि लोल चोनुय गन्योमुतुय, कमि सो.नि द्युतुय च्य डोल
सुय लोल सन्योमुत असि कच़न। श्रम०

१० ब.रय च्य कर्यथ विश्वम्भरय, बरय अचख ना
छुय ना सोन ज़र. ज़रै गछ़न। भ्रम०

११ त्यांगित लजायि कांनिस द्राये, सेवायि आये च्यय
पज्या. अनह्यों.त लागुन ह्यच़न। भ्रम०

१२ आदीन अनाथ भक्त आंर.ती, पालान छि धर्म त. दान
हितकार अपकार करान गछ़न। भ्रम०

१३ श्रीधर. करुणाकर. श्याम. सों, दर., ज़ानान च्य छि भास्कर
ग्यो.न छुख न सति सति आंसित ज़च.न। भ्रम०

१४ प्रेमन त. वीणायि आनन्द स्वरन, भ्रम दित न्यून मन सोन
ब्रजवांसी दांसियि मंलि ह्यच़न। भ्रम०

१५ प्राणो ! यी च्य कंर.थ वांणी, फीरित ब. इमोव. यूर्य
दुबार. मो.ख होवुत न. मोह. हच़न। भ्रम०

१६ केशन त्रांविथ भूषण पूरित, डेशन छिन. मो.ख चोन
दर्शन करन वाजे मच.न। भ्रम०

१७ ज़ांनी न. असि चांन्य सेवा कंरित, पूज़ा त. तो.ता कैंह
दया कर असि विच़ार रछ़न। भ्रम०

१८ पज़िहे नतय छा धर्म करुन, फीरित न. नज़.र दिञ
त्यांगित मथुरायि गोख अछ़ रछ़न+ भ्रम०

१९ चि़त बुद्ध मन प्राण अर्पण कंरित, धंरित छु चोनुय ध्यान
सुय ध्यान खेलान असि ज्ञान. वच़न। भ्रम०

१० रछ असि त्रण. त्रण. सारिय निशे सारिय ज़न राज ह्यथ
'केशव' आव आपदायव त्रच़न। भ्रम०

(६)

पो.त जूने मो.त सुल. नोवुम, लल. नोवुम नारायण।

१ प्रयि त'मिसं.ज़ि ह्यियि तन ना'व.म, पोश वथरस प्यठ गोशन
रोश. इयि ना होश राव. रोवुम। लल०

२ बाल. पान तस पत. राव. रोवुम, हाल. कमि सुय नाल रटहन
शिव. शम्भो शून्य बोल. नोवुम। लल०

३ काम. देवस नाम. लेख. नोवुम, पाम थविनम कर डेशन
रुम. रुमै. राम रम.नोवुम। लल०

४ द्वार प्यठ द्वार. वार. वुछ. नोवुम, ज़ूनि छोंडुम मंज तारकन
मारकन मंज लाल. उलसोवुम। लल०

लो.लि मंज़लि लाल.लल. नोवुम, बोल. नोवुम सुबह शामन
च़ीर्य सोवुम सुलि वुजनोवुम। लल०

ज़ीर. वम. कुय सीर वु.ज़नोवुम, फेर. नोवुम तति हेरि बो.न
वेरि तमिसं.ज़ि शेरि वात. नोवुम। लक०

ज़्यव नार.स.ति वार.छल.ना'व.म, तव. लोलुन नार शोलन
कनव बूज़ुम अ'छिव वुछ. नोवुम। लल०

८ कंद नावद आरद नोवुम, फंद कंरित यूर्य अनतन
अंद लो.बमस न.वों.द फोल.नोवुम। लल०

९ हंस. द्वारय वार. प्रज.नोवुम, प्रारि प्रारोस राम. रादन
ब्रह्म.सर पान सर. कर. नोवुम। लल०

० अथवासय रास खेल नोवुम, श्वास उश्वास नो.न छु भासान
सास 'भास्कर' विकास भासनोवुम। लल०

---

(७)

प्रातः काल आव म्यंति अनत. गाश मति.
छम चांञ आश म्य,ति पूरण कर।
लटि मुख हाव मोह. गटि करत नाश मति,
छम चांञ आश मति पूरण कर।

जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान.
छुस हालि हांरन डेंशत कर
जल हाव मुख पनुन छुम न. बरदाश्त म्यंति छम०

भक्ति भाव. स.तिन वति चाञि नेरय,
कति छुख आसान पैगाम सोज।
नत. दिम पन.नुय प्रोन यादाश्त म्यंति छम०

मोह. गटि मंज छुस वथ छमन, ईवान,
सत्गुर. हावतम सत.चिय वथ।
वथ हाव नो.न त्राव सूर्य प्रकाश म्यंति छम०

४ हनि हनि फयूरुस ह्यथ मनि कामन,
शहरन त. गामन कति आसि यार।
छुख पाताल किन. छुख आकाश मति छम०

५ निर्वासन. वनत. कति चोन आसन,
अन्धकार कास्तम वन्दयो प्राण।
करतम सो.दि वाञ्छि हिश वा'श मति छम०

६ कल्पनायि रुसतूय कल हो वन्द.यो,
कलि चाञ्चि रा'व.म न्य'न्दर.र त. नेह
वो.ल. वोञ्च विश्वास' च.लि अभिलाष मति छम०

---

(८)

हरे राम. टाठि मित्रय म्यानि।
लागय दान. दान. तुलसी॥

१ कौशल्या हृदय. आनन्द. घन. पादि कमलन पान वन्दयो
निर्बन्धन. रघु नन्दन. दासस कास भव. बन्धनय
महा प्रभो शुभ. दर्शन दि लागय०

२ हा राम. श्याम. सुन्दर देव. हृदयस वेशि सेवै चा'नि पदम पा
शरणो आससै वासु देव. चावतम चरण. चरण. अमृत प्रसाद
परन प्योसस सर्व. ईश्वर. चे लागय०

३ ज़गतस उत्पत्त स्थित तय नाश तमि निश. सांपनुस निरग्राश
आदि देव. त्वं स्वयं प्रकाश केवल छुम चरणाबिंद. चिय आश
तन. मन. पान पुशुरमय चे लागय०

४ यस चावि ईश्वर प्रेमय रस तस थाविन. भव. नियम च्यतस
त्राव राज्यस त. अमृतस प्राव. नाव्यस परम. तत्वस
जीवन-मुक्त सांपनान प्रेमी लागय०

५ स्वर्ग सुख. खो.त. रस रागस रस. रस. व्यस, रावा'नी
ज़गत आकार. वृत्ति बानस चित्त. निश. म'श रावा'नी
राग. रस ज़ानि अख वैरा'गी लागय०

६ मूर्ख ज़ीवन काम. रस चाव जन्म. मृत ज्वरा रोग भागी
ज्ञाता ज़ीवन राम. रस चाव स्वतः सांपनान सर्व. त्यागी
शुक देव सु देव दत्त साक्षी लागय०

७ प्रेम. अगनस तेज बलवान भव. नियम. काष्ट बीज़ गालान
प्रेमी मनस छु संभालान नियमी ज़ीवन बन्धन गालान
सहज़ प्रेमी सदा नियमी लागय०

८ आश्चर्यवत् छु भगवत ध्यान अति वाहक दृष्टि मो. कलान
चित विकास.हृत्कमल फोलान सां'पान शुद्ध संकल्प बान
बनान निर्विकल्प समाधी लागय०

९ गौतमनि शाप स.ति अहल्या बनेम.च् आ'स जड शिला
ज़गत मंगल छि राम. लीला उदयस आयस शुभ. वेला
पादि स्पर्श स.ति बनेयि देवी लागय०

१० वलन. श्रास बुद्धिस्थित चिदाभास चित रंजन वाल. वाशे
चित्तधन. राम. साक्षात भास कास अज्ञान कर्म. ज़ाल. पाशे
बंद छुस चिदाकाश पक्षी लागय०

११ मोक्ष दायक. मुकुन्द. राम. भाग्यइवान अजोध्या वा'सी
प्राव.ना'विथक विष्णु. स्वधाम. युस यछान योग. अभ्या'सी
भक्त. प्रिय. मोक्ष क'रित सा'रिय लागय०

१२ ज़गत गुरु त्वं पुरुषोत्तम सर्वेश्वर. सर्व व्यापक सम
भगवान् सुख. मुख. इतम श्रीमान शुभ. दर्शन दितम
करतम निर्वाण. उयदेशय लागय०

१३ ज़नार्दन गोपाल गोविंदय नारायण. विष्णु. वासुदेवय
हृषीकेश. माधव मुकुन्दय हरे राम. कृष्ण आद्यदेवय
आशा छम नाम निदान दानचिय लागय०

१४ प्रिय. बोध शुद्ध. चित्त क्षेत्रस वीज़वत व'त्रिज़ि भगवत नाम
नावस स्वरूप बनि मित्रस चतुर्भुज श्याम सुन्दर राम
फल. दायक छि प्रेम. खेती लागय०

१५ देव. बुद्ध देव.दृष्टि छि साधन निष्काम सेवान तिम विष्णु पादन
परम. पावन छि राम. आराधन क्षय सांपनान अपराधन
उपासना बिना छय न. गती लागय०

१६ दास छुन. स्वर्ग. सुख. पुछि राम बरतल चानि त्रा'वित लर
कास मनस नरक. दुख भय श्याम. दो. नवय अन्तवन्त अस्थिर
दासय छय' प्रय शुभ. दर्शन चिय लागय०

१७ इछ गत छ्य राम. नाव. प्रेयमस तिछ गत छन. तपस त. व्रतस
प्राणायामस यमस त. नियमस राज्यस स्वर्गस त. अमृतस
राम. महिमा क्या वनि वा'णी लागय०

१८ ज़ीवनमुक्त हनुमान देवन सेवुन राम. नाव जा'नित सार
सोता-पति राम. जीवन कृपा को.रनस सारगी मुक्त. हार
हलमतस छ्य राम नाम. प्रीती लागय०

१९ चवान राम. नाम. रस गलि गले राम. सेवक महा निष्काम
मुक्त हारस फलि फले वुछनस न. कुनि श्रीराम. नाम
च़ून करि'त त्रोव हल म'ती लागय०

२० महा महिमा राम. नावस दैव. विभूत दर्शन नित
भान सांपनान निष्कामस चिदाकाशस अन्तर्गत
महा पुरुषण छु सुय हर्ष.य लागय०

२१ राम. नाम. रस महा देवस तवै सेवान सर्व लोक तस
गिरिजा राम. नाम भूषणस तोषान तोषान लागान मनस
क्षण. क्षण. नित साधान तो लागय०

२२ युस वो.र भक्ति योग. अभ्यासन सुय फेरान नित पंचन कोशन
राम. नाम. स्मरणा भूषण निवारान रोजतम दोषन
सां'पनान ज्ञान. गण सातकी लागय०

२३ आदन बाजि म्यानि म्योनुय स्नेह कत्र. कारण. केंहति छुयन चे
छाल. मार को.त गछक लालो वे अकि लटि रटत नाल. पायस पे
म्योन संयोग च्य स.ति वेदान्ती लागय०

२४ नर्क. वा'सी साधु निन्दक दुर्जनन क्रय सो.य निशदिन
स्वर्ग. वा'सो छि सन्त. सेवक सन्तन पालान मधुसूदन
साधु वल्लभो लगय पा'री लागय०

२५ यस अनाथस वरि रघुनाथ तस क्या करि अस्तुत त. निंद।
साध सन्त राम. रूप साक्षात रघुवरि प्रेम पुरुष सदा
राम.नाम. रस च्यथ छिवेम.ती लागय०

२६ चंदन वृक्ष संत दुर्जन मख मख चंदनस दिवास टख
मखस प्रत शायि अग्न दाहक चंदनस वरान हरि मस्तक
जीव कृत कर्म फल भोगी लागय०

२७ प्रेयमस छ्य सारिचिय सिद्धता महा दुर्लभ बनान सुलभ
यस वरि हरि हर विधाता दास. भाव. किञ सांपनान प्रभ
भ्रमर. कीटवत् छ्य प्रेम. खेती लागय०

२८ यस मनस आसि न. प्रेयमच लेश तस क्या करि गुरु उपदेश
तस कदाचित गलि न. राग द्वेष चलि न. तस माया मोह आवेश
संग. खो.त. संस्कार बली लागय०

२९ यत शायि आसन संस्का'री नागवत् वुज़ान तति प्रेम ज़ल
स्वतः सांपनान आधिका'री प्रेम. जल. छलान चित वृति मल
सुख. सान बनान निवृत्ती लागय०

३० इथ. पा'ठि मेघ वालि वर्षण जल.वेग छुन वुछान दारि त बर
तिथै पा'ठि स्वतः सिद्ध पुरुषण प्रवेश करान बाह्य अन्तर
सप्त. सिंथि खोत छय प्रेम. नदी लागय०

३१ तीर्थ. ज़ल कासान बाह्य मल अंतःकरण. वृत्त रोज़ान चंचल
राम. राग. यात्रा सफल चित्त. वृत्त बमान शांत शीतल
प्रेमी वो.र राम भगवा'नी राम महिमा क्या वन.वानी ला०

---

(१)

सखियव रूठुम हा'य रूठुम हा'य ग'छित ब्यूठुम हा'य गामन.य ।
तति विगिञव डयूठुम हा'य ब चाक दिमना जामन य ॥

१ सिध ज़ल. तन नावसा'य ब. सीर पननुय भावसा'य
क्याज़ि ला'जिथस पाम.नय ब. चोक०

२ बाल.प्यठ. नादा लायसय ब. साज. सेतार वायसा'य
छो.ञ छो.ञ करस रुञ. दामन.य ब. चोक०

३ तारा मंडला द्रामतुय ज़ूनि नादस आमतुय
रो.व हा'य करव. सुबह शामन.य ब. चाक०

४ वन ना'गिञि द्रामचा'य डल सा'लस आमचा'य
ज़ूला ज़ालव रंग. नावन.य ब. च्याक०

५ स'खियव मनवित अ'नितोन आदन बोज म्योन नुंद.बोन
वो ञ नय कां'सि बो हावन.य ब. चाक०

---

(१०)

पानै बिहित पननिस वानस आनस आनस वुछहन यार।
तसुँदुय सौदा हर दूकानस आनस आनस वुछहन यार॥

१ मस्त गय मस च्यत वा'ति लामकानस,
अयान सपदुक पननुय पान।
शाबाश ब'विनै अथ खुमखानस आनस०

२ फना फिला निश. छुय पानस,
बका बिला तहकीक कर।
ब्रह्मण ला'गित अछ़ बुत खानस आनस०

३ सा'लिकव मा'लिकी क'र यत जानस,
तिम छिय वा'तिथ पय दर हय।
आशक छु मुश्ताक पननिस पानस आनस०

४ आश्कव पान खोर अ'श्क. पेचानस,
हा'सिल सपदुक वा'सिल कार।
दम दम. ग्युंदहै पननिस जानस आनस०

५ पानै पानस ध्यान करु पानस,
आनस निश. तस लगिय न. छयन।
मीलित सु डयूठुम दानस दानस आनस०

६ दस. स.ति पम्पोश फो.लियो जानस
गमगीन मो गछ रोज़ बेदार।
खय कास दिल किस आ'ईन खानस आनस०

७ हस्ती मो कर पननिस पानस,
मस्तीं पननिय रावान छय ।
'लस शाहो' लय कर प्राणस अपानस आनस०

---

(११)

सुख शब्द दर्शन. चाने, आनन्द घन टाठि म्याने

१ रात दिन करान छुस चिन्तन
क्षण. क्षण. छुम चंचल मन
ईश्वर. दूर्यर. चाने आनन्द०

२ राग चोन युस छुम मनस.य
सात. सात. रातस दिन.सय
म्योन दुख च्य रुस्त कुस ज़ाने आनन्द०

३ राज़न ह.दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्या ओस लाने आनन्द०

४ यो.दवै च. म्या'ञ कथ बोजक
दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़क
रोज़ चूरि हृत गुहायि म्याञे आनन्द०

५ य'च कोल च्य त. म्य दूर्यर
क्यथ ज़ोरुत यूत कोरुत न. पूर्यर
अद. कर यि ज़'ट यलि प्राने आनन्द०

६ ओसुस ज़ल बो.य निर्मल
मोह. कठक'शि कोरनम छ्ल
वचनम कच. शीन. मात्रे आनन्द०

७ त्रेश. ह'तिस.य मनस त्रेशा
अमृत वर्षण बु डेंशा
गलि शीन अकि कटाक्ष. चाने आनन्द०

८ कर्म किनि वेष कम धा'रिम
गर्दभ बुथ बा'यँ सा'रिम
वृषभ. वेष. तल अलबात्रे आनन्द०

९ कामनायि आतुर कोर.नस
अमृत भास्योम वेह. रस
ओ.परोवुम दात्रि दात्रि आनन्द०

१० कन थोवुम न. सत्गुरु शब्दन
जरु छुनुम खो.टि प्रारब्धन
कर्मव को.डुस पयैनि छाने आनन्द०

११ आनन्दस चाव अमृत. रस
संसार. निश. बनि बेह्यस
बनि नो.न अनुग्रह चाने आनन्द०

~~

श्री शारिका लीला-लहरी

(द्वितीय तरंग)

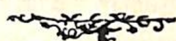
(१२)

चराचर छुख परमेश्वरो रछतम पनन्यन पादन तल

१ गज. मुख. बाल. चन्द्र लम्बोदरो विनायको भ'विनय जय
हरमुख. दर्शन दितम ईश्वरो रछतम०

२ निष्कल नाव चोन निरंजनो सो.य कल धा'रित त्रिकारण
स्मरणि चाञि स.ति जन्म मृत हरो रछतम०

३ देविथि त देवता सारिय स'मित न'मित करान चा'ञ स्मुरण
स्मुरणि चाञि स.ति सा'यँ पाप हरो रछतम०



(१३)

श्री राज़-राज़ेश्वरी आम.ति शरण छिय।
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादल त. हिय ।।
गौरी अम्बा अम्बुराक्षीम अहं ईडे

१ ज़गत अम्बा च.य छख मंज़ वदनस असनाव
निष्बुद्ध शुर्यन दयायि हुंद दामान प्यठ. आव
कल्याण. सोस्त थाव स.ति अश. फच्रन भरन छिय पू०

२ बाहन सिर्यन जचन चान्यन हुन्द प्रकाश
चरण चा'नी करान संकट. गटे छि नाश
तिह.न्ज़े गर.दि स.ति देव मुकट. जरन छिय पू०

३ लोका लोकन ह.न्दि सत.ज्ञन कारण देव. गण
सिहासनस चा'निस दिवान छिय प्रदिक्षण
परम दाम.कि पुरुष प्यवान परन छिय पू०

४ षट्चक्र. रूपी चक्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चो.पा'र्य त्रिकोणस फेरन
योगी ज्ञा'नी प्राणी सुय ध्यान धरन छिय पू०

५ बुद्ध छन. वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च्यय मन. कामनायन मंगन छिय
यछि चानि श्रद्धायि स'स्ति आयि स्तुतायि परन छिय

६ पनन्यन भक्तियन दासन हुंदुय प्ययनय पास
तिह न्दे पासै कुकर्मन ह-न्ज़ गटय म्य कास
ज्योति-स्वरूप हाव छय च्य भूतेश्वर.ज द्र.य पू०

७ भगवत् मायायि हं.दि रंग चा'नी छि रंगा रंग
चाने स.ती छुय योग छिय भोग छुय संत्संग
तप जप समाध क्रिया कर्म करन छिय पू०

८ महा माया च.य छख चट असि माया ज़ाल
असि वो.लमुत छुय गृहस्थ.कि काल. सर्पन नाल
ल'गिम.ति सा'रिय पनन्यन पनन्यन घरन छिय पू०

९ कम भक्तियि किञ भक्तावारन खरन छिय
कथ कामि लगव क्या तगि ज़िन्दै मरन छिय
च.इ टोठ स'च् चाञि स.ति अ'सि दिन दिन भरन छिय पू०

१० प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन ह.न्दि अपराध
सञ्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश. पाद
इम तिम स्वरण यथ भव.सरस तरन छिय पू०

११ चाने सूती सृष्टि गयि नं'ञी जय भ'विनय
मंज़ शून्य. उत्पत्त स्थित सां'प.नी जय भ'विनय
कलर जु.गच महाराज. रा'नी शरण छिय पू०

१२ कुनुय यलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
चित् शक्ती चाञे एक अनेक स्वरण छिय पू०

१३ च्यय अज़पा गायत्री पांछ कारण ग़्यवन छि गीत
निस्त्रिगुण छख गुणन चान्यन स.ति परतीत
चाने स.ति कार अन्त:करण करन छिय पू०

१४ अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेष. नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'नि महा पुरुषय वरन छिय पू०

१५ च्यय किति नाना रंगै भोजन रनन छिय
च्यय निश सुवर्ण बानन ल'दित अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय पू०

१६ चाञे दयायि स.ति क'डि बडयव ब'डि ब'ड्टि नाव
निष्बुद्ध 'कृष्णस' निश वा'णी हु'द अमृत द्राव
परण वाल्यन ज़न्मस ह.न्दि दुख हरण छिय पू०

(१४)

हे दयालु छुस ब. चञ्चल. लोलो।
अनुग्रह. चानि बेमार बल. लोलो॥

१ कर्म.हीन छुस आमुत संसारस
चन्द. छोन छुस लु.गमुत व्यवहारस
अविद्यायि ह'न्ज छम गांगल. लोलो अनु०

२ लय विक्षेप भय. स.ति छुम आवरण
मल खो.तमुत छुम अन्तः करणन
विवेक. पात्रि पान बो छल लोलो अनु०

३ जान जा'नो जांह् तिनो ज़ोनमख चय
ज़ान दिम तिछ़ जा'नित तव गलि दुय
दिम निश्चय युथन. ज़ांह डल. लोलो अनु०

४ छुस ब. लो.गमुत संसार. सर.सय मंज़
रोवमुत छुस पननिस घर.सय मंज़
ध्यान स.ति ज़ाल ज्ञान. मशअल. लोलो अनु०

५ प्योमुत छुस गटि मंज़ अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो.न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी छम चा'त्र अख वुज़मल. लोलो अनु०

६ बान. हीन बो द्रास खान. गदाये
अंग हीन छुस फेर. कोत जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह. खल. लोलो अनु०

७ यम्बर-ज़ल बो.म्बरो छस यो प्रारान
वेरि चाञ पान छस पा'रावान
वन वन. छस व्र'च् आरञल. लोलो अनु०

८ लोल. बागस फ'लिमो गुल त. गुलज़ार
पोशन्लो अज़ वलो छावु सब्ज़ार
होश दिम युथ पोश. वा'र फो.ल लोलो अनु०

९ हा 'विष्णो' पननुय पान ज़ानतन
यलि ज़ानक त्यलि बनि सरतलि सो'न
चित् आ'नस करत. स्-कल लोलो अनु०

---

(१५)

विनत बोज़म च्. राधा कृष्ण. लागय लोल. नादा बो।
भरय लोला परय लोला करय हो हो करय हो हो ॥

१ च्. छुक योगुक ज्ञानुक गुल ब. छस ना भाव कुय बुलबुल
च. लोब रोज़न ज़रय मा बो करय०

२ चय छय पपोश पाद.च द्रय वरुम छस भक्ति बाग.च ह्यि
च्. नय डेंशत हरय मा बो करय०

३ च्. छुखना प्राण बो छस तन सत्ता चा'नी छि दो.न मिलवन
च्. नय आसक मरय मा बो करय०

४ ज़लस मंज़ गा'ड ज़न छस ब.य ब. छस च्यय स.ति ज़ल छुख च.य
च्य' रुस्तुय बो.ञ दरय मा बो करय॰

५ ब. छस च्यय मेघ. वर्णस मोर र'टिथ छस खोर रासस मंज़
नचय़ लूकन खरय मा बो करय॰

६ च्य सर्वस छस ब. कुम.री ज़न करन छस बूलि म'शित हन हन
छ.नय त्रावि'त घरय मा बो करय॰

७ च़ छुख चन्द्रं ह्यु ज़ोतन ककुव ज़न छस च्य' कुन बोलन
वुछुत नय अ'छि ज़रय मा बो करय॰

८ च्य 'श्रीकृष्णस' ब. छस प्रारान दितम दर्शुन इतम लारन
च्य रुस्तुय बोञ बरय बो करय॰



(१६)

लाल. लगयो बाल. मावस राम. नावस पार्य लगय।

१ टंग म्यो.ननस विवहारन रंग. बुलबुल गोम को.ल
गंग. बोञ चाव मंज़ यत तावस राम॰

२ भक्ति मावय नाद लायय अर्द्र. रातन सुन्दरो
चानि दर्शन कुय छुम म्य हावस राम॰

३ हे मुरारि ! बील. ज़ारी म्या'ञ बोज़ख ना कनव
छुक च़. टोठान भक्ति मावस राम॰

४ त्रटि ह.न्दे सायबानो गटि ह.न्दे गाशरो
मोह. अभिगटि मंज़ लोगुस दावस राम॰

५ गो.व गोमुत बोर पापुन दोह लो.गमुत छुम दरय
नाव ल'जिम च् मंज़ न्यथ. वावस राम॰

६ हे शेव ! छुक सर्व. व्यापक व्यपि छुक विश्वम्भरय
केशव. तार दिम वर्जनिस वावस राम॰

७ कृठ प्योमुत छुम म्य पानस संसारुक लंगरय
ख्यम. क्या छुम न. केंह् ति छावस राम॰

८ बाल. भावय व'नि म्य दितिमय वनि नो आहम् च. ज़ाह
वनि इतमों ती छुम म्य हावस राम॰

९ शयि शये शय च.य छुक शय नो व्ययि रोज़ि कांह
शयि रूद यलि टोठयोक कावस राम॰

१० 'आनन्दो' भक्ती त'मिस.ज ज्ञान पननुय मोक्ष उपाय
व्रत्त त'मिस.ज्ञ धर पुन्यं त मावस राम॰



(१७)

चानि बरतल राव्यम रा'चय आवाज़ वा'च.य नो

१ चों.ज़ शोभहय बो ख'ज़मा'च.य
ग्रेज़ साहिबो ह्य'चथस न. ज़ांह
तथय नाव प्योम ललह मा'च.य आवाज़॰

२ बालि रनिमय सार्यय न्या.मा'च.य
ख्यनि साहिबो आहम न. जांह
तवय लल छस छिन्दरे मा'च.य आवाज०

३ घरि द्रायस बा जमा'च.य
वनि साहिबो आहम न. जांह
का'लि मेलव कया मा'च.य आवाज०

४ खा'सि वो.ज.लि बर.ग छ. न्न.ई
छस ब. स्वर्ग.च य'म्बरज़ल
दादि बों.बर.नि बर. गा'मा'च.य आवाज०

५ बा'लि बा'ली मो पख यच.य
गा'लि का'त्याह संसारन
का'लि सूरच़न गछ़ान म्य'चय आवाज०

---

(१८)

राम. लीला चा'त्रिय वनय श्याम. सुन्दर नारायणय
तन. मनय अर्पण बनय श्याम. सुन्दर नारायणय
निर्गुणय निरञ्जनय श्याम. सुन्दर नारायणय

१ चानि लोलुक छुम होल गोमुत
देह.किस ज़िसिस.य मंज़ ब. प्योमुत
वन. कस दुख म्य छुम क्षण.क्षणय श्याम०

२ यमि योनिये छम ह'जि का'र.य
गोस. त्रात्र वो.ञ म्य छम को.सता'र.य
मुख हाव दुख क्यन आस ह्यनय श्याम०

३ नट ब'नि ब'नि नाटक हा'विम
ईश. ! कम कम वेष बदला'विम
निन. आस ग'छि ग'छि इन. इनय श्यास०

४ कूतिस कालस वो.ञ बो प्रारय
बोज़तम आ'र्च'र ज़ार. पारय
आर इयिनय रघु न·दनय श्याम०

५ यथ वेषस मंज़ मो.कलावुम
योगानन्दस मंज़ म्य सावुम
मो च. आनन्द निर्बन्धनय श्याम०

६ नाश. स'स्तिस यथ संसारस
कमि बापत पत्त. पत. लारस
अत. गत पठ च़टम पन. पनय श्याम०

७ कालस छ़न. करार क्षणस
ग्रास करान रातस त. दिनस
चानि दर्शन. अमर बनय श्याम०

८ कालस निश उपदान संसार.य
का'ली तथ बनान आहार.य
मंग. क्या तग. आस मरण.ज़्यनय श्याम०

९ भोगन मंज़ तृप्ती म्य न आये
युथ मृगिञन मृग तृष्णाये
अमृत चन.कुय छुम म्य विनय श्याम०

१० श्वान नीरस हडन टकान
ट'कि ट'कि पनञें ज़स्म. ब्रकान
रस रतुक तस हे रस गणाय श्याम०

११ कोमल पादि कमल मलय
हे शरणागत वत्सलय
कोत ब. चलय च्य निशि रोज़ छ्ययनय श्याम०

१२ सुख केवल चा'ञिय स्मुरण
सुख केवल चोनुय दर्शन
हे निर्द्वन्द्व. आनन्द गणाय श्याम०

१३ 'ठाकुर'. च.य हृषी केशाय
बुद्धि पर युस निश.चल राग. द्वेषय
सर्व आत्मा च.य सनातनय श्याम०



(११)

कृपा करतम हरि हरै   ब. क्या करै ज़ोर ।

१ लूसित प्योमुत छुस बुज़रै   खो.तमुत छुम बों.ड बोर
यथ पंचालस ।कथ. पा'ठि तरै   ब०

२ आर.ह छु वज़ान वो.गनि दरै   वारह छु करान शोर
छो.प छु करान समन्दरै   ब०

३ व'नि व'नि य'च गोस च़खि अंदरै   नऩन ज़न छ़ुम चोर
छोपि हुंद सुख दिम योगेश्वर   ब०

४ पख. छम जरिमच़ छुम ज़र-ज़रै   बन्यो.मुत छुस मोर
हीन छुस खोरन हंदि आ'रच़रै   ब०

५ सन्मुख रोज़तं श्याम. सों.दरै   प्रभात ह्युव चो.पोर
युथ न. पंपोषस दोह लगि दरै   ब०

६ आभास. चानि स.ति गा'म लि   खरै अन्तः करन चो़र
म्य भास प्रकाश रूप ईश्वरं   ब०

७ त्रिगुण उलंघितछुक शंकरै   शक्तियि चानि छुस लोर
ओ.गणिस दो. गणाव कुनिय वरै   ब०

८ चो.रों.ग ज़न म. फिरनाव घर. घरै यि बा'ज़िगर छा सोर
दूबार. म. डाल प्यठखा'र दरै   ब०

९ अन्दर चा'नित ज्ञान, धरै   हावुम चूरिम पोर
तथ मंज रूज़ित आनन्द भरै   ब०

१० 'कृष्णस' मुच़रात्र बात्र,कि बरै कुनिय वरै तौर
युथ लरि ह्यथ च्यय बसि अमरै ब०



(२०)

वो तन. मनै अर्पण बनै नारायण. श्रीमद् नारायणे।

१ भ्रम. किनि संसार सत्रूप ज़ीनुम
दुखस.य प्यठ सुख मन.न.य मोनुम
भास्तम त. कास्तम मोहुन सनै नारायण०

२ च्यय रुस्त नाश. सो.स्त ईश्वर. सोरुय
मृग तृष्णा ज़ल. चिय दोर. दोरय
स्मृत पन.त्र दिम च़.इ क्षण क्षणै नारायण०

३ यथ प्यठ ईश्वर. स्थित थव. च्यन व्यन
सोरुय गछथ पोत्र सारुन क्रंजल्यन
आसर. चोन थव. सनातनै नारायण०

४ संसार. कुलिस शरीर हर्द पन.य
कामना सहित तथ कुलिस मूल मन.य
काल. छ़टि स.ति नटि मंज दिन. दिनै नारायण०

५ मूल संसारुक मन यलि गले
जाम. बदलावन.चि आपदा चलै
मन गाल ज्ञान. खड्ग स.ति ज्ञान घनै नारायण०

६ देह. अभिमानन हनि हनि ज़ोलनस
दम. दम. क्रम. क्रम. शीन ज़न गोलनस
स्मरणि चानि निश को.रनस छयनै नारायण०

७ थज़.रुक ज़ल युथ कल. छावि पलन.य
ती करनोवनस ममता मलन.य
ममतायि हंज़ बुद्ध दितम सत् जनै नारायण०

८ अच्युत सत्.रूप. निरामये
भव. भय. नाशस गछि चानि लये
चानि प्रयि दय ब.ति च्यय ह्य् बनै नारायण०

९ विस्मृत को.रनस अविद्यायि दोषण
भ्रम. किनि वश् सांपनुस पंच कोषण
पंच. कोशातीत. निरञ्जनै नारायण०

१० दिनम अपि रजनी सायं प्रातः
शिशिर वसंती पुनरायातः
काल.देव करान ग्रास शनै शनैः नारायण०

११ मन म्योन मोहित को.र मोह. मस. न.य
बेह्यस कोर.नस तृष्णाइ रस.न.य
मोह मद गाल व.ज़ हे मधुसूदनय नारायण०

१२ काम.देव कान.य स्य'ज़रावानय
तस यस मनस आसि न. चोंन ध्यान.य
सर्व आपदा नाश चानि दर्शनै नारायण०

१३ ज़ीवन छुय जीवन चा'नी स्मरण
देव. भाव देवन करुन चोन कीर्तन
उत्पत्त सारिचिय चानि ईक्षणँ नारायण॰

१४ ज़ीवन हंदि ज़ीवन. देव. देव
आनन्द दायक बांधव त्वमेव
सर्व आत्मा रूप. सुदर्शनै नारायण॰

१५ हे निराकारै सर्व आधारै
चानि दर्शन मुक्त बन. नरक. नारै
सुख. रूप. पुख हाव हे चिद् घनै नारायण॰

१६ सत् रूप. ज़ान सत छम मलिन प्रकृत
संताप अग्नस ग्यव जन ब. आहुवत
कष्ट गाल संतुष्ट बन ज़नादनै नारायण॰

१७ खो गया दिन दिन सो गया लडकपन
आगया यौवन पीडा उत्पन्न
तेरा अनुग्रह मेरा विनय नारायण॰

१८ आसुरी प्रकृत निर्मल करतम
शुद्ध प्रकृ'च् किञ गोविंद. वरतम
कर अभेद पानस स.ति पूरणँ नारायण॰

१९ सारिन.य आत्मा पर प्रेमास्पद
सर्व आत्मा चा'ञ भक्ती स्वत: सिद्ध
मूलस थक छ्.न मूल. कराणँ नारायण॰

२० सर्वात्मा चा'ञ एकात्म भक्ती
यस आसी तस भव. बंध. निशि मुक्ती
'ठाकुर' बंद. भाव प्ययि अर्चनै नारायण०



(२१)

पूर्ण पुरुषस सुरासुर त्रिन्दनस परमानन्दस परमात्मस ।
तस रुस्त क्या छुम दप. पान वन्दस परमानन्दस परमात्मस ।।

१ कृष्णस जग यस तुँद ब'लि चंदस
चिनमय मंदिर द्वारिका तस
सुदाम सालिग्राम सुय पूजि वों.दस परमानन्दस०

२ द्वार. द्वार पूज़ा मुख अरबिन्दस
सर्ग. अर्घ. स.ति ज़न अमृत रस
पुष्प. कनि आकाश पृथ्वी गंधस परमानन्दस०

३ ध्यन. व्यन. धा'रित मन निस्पंदस
क्षण. क्षण. पनुन आर्चर वनहस
लगहा न. ब्ययि ब्ययि अज्ञान द्वंद्वस परमानन्दस०

४ वर. य'मि ज़ि निद्रा दिच् मुचकंदस
कालयवनस सुय काल वननस
पीताम्बर. स.ति ला'गित फंदस परमानन्दस

५ बन.न.न्ति म्य यछ एकादशस्कंधस
बोजनस तव.किस परम ग्रर्थस
मन. राज. निशचल बेहि मसनंदस परमानन्दस०

६ जिन्दगी छ्य़्फ दिथ रूज देह. जंदस
स्पर्श. रो.स्त वोत तस ग्रपरस
वाठ छुय तसुँदुय प्रथ पैवन्दस परमानन्दस०

७ स्वर यमि द्यतमुत छुम प्रथ बंदस
गुरु प्रणव.य द्यान करि त्राणतस
बह्मा ऋष त. यस गायत्री छ्'दस परमानन्दस०

८ 'परमानन्द' मेली परम. ग्रानन्दस
महिमा मेलनुक बनि मावस
पान. व.नि इथ पा'ठि रव छ्य इंदस परमानन्दस०



(२२)

दितम दर्शन म्य वर्षण तल. बेमार बल. ब. बेमार बल.

१ रावुन रोव न. रावण. तल.
ब. वंदै कल. त. हावतम रोय
गुपित गंगा भरत निर्मल. बेमार०

२ वज़ान शिवहू छु शंख.कि बल.
प्रज़ान छ्'म नार शशिकलि रहे
रो टुम छ्ल. ग्र'श्क. ब्रह्माण्डतल. बेमार०

३ प-रुम ओमकार सोऽहं तल०
क'रम पानस सो.य कल मे
हरन दोप पान ओंठकुन वल. बेमार०

४ अचान ओसुस ब. बीमस तल०
यछान ओसुस गोछुम यी मे
तरुन तार. सो.थि ईश्वर जल०

५ गशुन ओवुम म्य संसार तल. बेमार०
मशान आम सोर गंजरुम मे
दुशान छुम केवल. सुन्द फल. बेमार०

६ वनान 'लस.शाह' वो.वुम यी फल०
ग्यवुम रातस दोहस यी मे
चो.लुम वसवास म्य आ'ईन तल. बेमार०



(२३)

श्याम. सुन्दर जी लाल बना खेली बना राधायि स.ति

१ वेल. इथ कोन. खेल.नि नेरव नन्दलालस मेल.ति नेरव
यि छ़ केवल प्रयोजना खेली०

२ श्याम. सो.न्दरस तस कामदेवस शाम,चन्द्रस श्रीकृष्ण देवस
अ'सि छय् गा'मच तस अर्पणा खेलि०

३ आश्चर्य छा मेलुन तसुन्द ज़ीवन स.ति खेलुन तसुन्द
पान. ब'नित बिन्दराबना खेलि०

४ प्रेम. आनन्द. व ण्ा वायन तथि मंज नानम्योद २ लायन गछि सुफल मन. कामना खेली०

५ द्रात्र पाल.नि वादन सान्यन फुर्य दिनि कर्म फलन प्रान्यन पाल. व.नि क'र सा'त्र पालना खेली०

६ आयि जमुनायि ज़ल तन ना वित प्रोन म'शरा' वित नो.व प्रा'वित शोभव.नि भूषण वर्धना खेली०

७ अ'सि छय आमच़ असंख्य स्त्रिये तृप्त आनन्द अमृत गये त्रय गुण क'र.ख प्रार्थना खेली०

८ वो.सि इथ कोन. विसव इथि रास. कोन असव असव गेलि कुस मेलि नारायण खेलि०

९ ज्ञान गव अथि लगुन न. यमस गयि प्रावित परम ब्रह्मस मोक्ष. पद भक्ती कारणा खेलि०

१० पोष. कुल्यन मंज देव चाये ला'गित बबूर रूदि छाये च़रण. कमल वरिना सना खेलि०

११ आ'सि देवता तति दर्शनस पोश वर्षणस हर्षणस पोश वर्षण त. अविछिना खेलि०

१२ यूरमुत ओस कुकिलव ओलुय प'तिमि जन्मुक चोलुक होलुय भोरुक लोलुय खुश गोक मना खेलि०

१३ पनति शब्द.च. छन थाल.ज ज़ान छस भव.सर.बुज रुस्त वजान यि छु जडमूढ गुहयुल वना खेलि०

१४ हृदय मंज़ ह्यथ भगवत् चरण आ'सि तथ निथ सेवा करन
ब्रह्मस स.ति रूदुक न. भिन्ना खेलि०

१५ सनकादिक नारद मुन्नी व्यास शुकदेव यी करव.नी
राधा कृष्ण ञ कीर्तना खेलि०

१६ लूक. वन.वु.न क्या करि तिमन आ'सि ब्रह्म.ज्ञान घो.नमुत इमन
कथजि करन.च छख कल्पना खेलि०

१७ रास. अमृत रस गछि चो.नुय भक्ती रस य'मि न. चव रूद छनुय
रूद छोन ज़न्मनि ज़न्मना खेलि०

१८ रस उपदन कर सत भक्ती गोपियव भक्तीवत प्रा'व मुक्तो
मुक्ती छन. भक्ती बिना खेलि०

१९ द्रायि निमल था'वित वों॰दस गयि प्रा'वित परमानन्दस
क'रख 'केशिव' आराधना खेलि०



(२४)

१ चो'यशित लछ ज़न्म धा'रित चिन्तामन देह अथि आव
देवन किन्नरन गंधरवन दुर्लभ रटुन यहोय देह आव ।

अविना'शी पान. शम्भू यमि शाये अथि आव
आगरो च य कव. लो.गखो हा घर.चे छाये ॥

२ अश्वत्थ नोव कुल नाश. रुस्त वोन ज़नार्दनि धनुर्धर.सय
मूल ह्यो.र कुन लजि बो.नकुन पत्र वेद तथ कुलि.सय
युसुय तत ज़ानि वेद त'मिय ज़ोन पा'र्य जा'ञ तस शिवस.य आ०

३ अमृत फल सुय कुत छु दिवान राज़ योगिन ति ह्योत.ये
हठ. योगियन कर्म का'न्डियन दुर्लभ वातुन तो.तये
रेइ पकुन तोत. सं.ज वुफ ख'ज़र कुलिस.य इथ.ये आ०

४ भ्रम काया माया छै पो.ज़ बोज़ टाठि बोज़
भ्रम त्रा'वित रोज़ ब्रह्य.य सर. खर, करत. अ'ज़ि दो
सत्-चित् आनन्द अद्वैत.य रोज़ि रोज़् बोज़् आ०

५ नज़ि रटुन नज़ि त्रावुन युथुव ओसुक त्युथुय आस
युसुय अन्तर सुय बाहिर युसुय स्वामी सुय दास
पा'नि पानं अरूप दय साध वन्य. योग अभ्यास आ०

६ आत्म. सा'क्षी टाठि ज़ानतो शरीर आव क्षण भंग
संसार. किस दुख. रूपस योग. लयि च.य असग
भूर् भुवः स्वः च्यय निश द्राव छुख च् सा'क्षी च्य न रंग आ०

७ ज़ीव यलि गछि् ईश्वरस लीन सुय ज़ीव अद. ईश्वर
विश्व रूपस सुय भर्ता सुय हर्ता गव हर
अविना'शी तस नाव.य अद्वय आनन्द सर.कर आ०

८ हर घरि तै ब. कुसू छुस सुय मरि घर. परि. युस
सुय ब. निर्मल आत्मा ज़ान मरि मो.र जुव अमर गव
पा'नि पानै तति सुय घरि वनत. ब्याक अद रोज़िं कुस आ०

९ दिव. सरै मंज़ गामि गोम गुपित वनान रुवये
व. नभा सु युस ब. वनान मटन अंदर दिवये
वन भवनन चूरिम देवी पं.चिम मोच् पत. शिवये आ०

१० अंत रछिन योनियन हव छचप. छय्परे गिंद. लो
गुर. श्यछी हर घरि बोज़ भूर् भुवः स्वः छ.ड लो
यमि योनिये वुछतः ऋषो ज़ुत. लाला गव लों आ०

११ रंग. लरि छुम रंग. रुस्त दय प्रथ वान. सुय रंगरुय
नाना रंग धारण सुय ना रंग तस न. गुथर.य
ज़ानी कुस तस निराकारस सारगी यस छि नेत्रय आ०

१२ चेनत.मनै चिन्ताय मन त्राव चिन्तामन चित रूप प्राव
खस.व.ने वस.व.ने हंस. द्वारै पूर्य त्राय
ज़ानत. हरमुख. द्रायि गंगा चय दिवये तन नाव आ०

१३ शब्द. ब्रह्मस गछ़त लये सो.य प.य कासि मनि खय
खय आवित मन चित गव चेनतन प्रथ शायी दय
दय टोठ्योम ऋषि पुत्रो तस त, म्य दूय रूज़नै आ०

१४ दय नो.नुय ठोर पननुय मरनुक रस तित्त च्यय
म'रित परम. जान दय छु दिवान मरि मो.र जुव अमर गव
राम लंकायि रूद सन्मुख साक्षात दर्शुन हव आ०

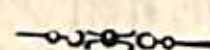
१५ वेद शास्त्र प'र्यं प'र्प छिय प'र्यंम.ति ज़र्य गछान
अपरिस निश. नेरान छिय चोर वेद ब्ययि पुराण
अज़ानतो शब्द. ब्रह्मय परम. पद दयि वथ मान आ०

१६ सहज विचार सहज. पाठ'यस सुय ज़ानि सहज़ानन्द
भूत. विचार भ्रम जानतो विषय रस मूटानन्द
मूर्ख. भावूय निश्चय कर शुद्ध नेरि सत् चित्त आनन्द आ०

१७ निश्चल नित्त सहजानन्द कुल अकुल गछि नाशस
भाषि रुस्तूय अविना शा दय निशि ज़ान नछ्न. गाशस
बोज़ि सुय भाषिराज़ योगी चे़न.वु़न स्व प्रकाशस आ०

१८ काम. क्रोध. लोभ. मोह. स्यन्द.य ग.ति खोत. छुय ग.तलुय
ईर. सा'रिय जीव धा'रो अमि ग.ति कुस छु मो कलय
वस्तु विचा़र क्षमा सतोष यस छु तस तार सरल य आ०

१९ 'लछु' नोव दय नाना रूप द्राव जगम त. थावर.य
रूप ना तस ना नाव.य परम आत्मा सु अपर.य
तत्त्व प्रकाश साक्षात्क़ार अंदर. न्य'बरै अछ़य्.र्य आ०



(२५)

हे दयावान. म्य ह्यव चोर च्य कोताह प्रारे ।
अस.व नि मुख वस.वुन ओ.श छुम म्य धारे धारे ।।

१ फाक. दिय दिय गयि वासा यति क्याह हा'सिल आव
चारिरस म्या'निस वो.ञ टोठ मनस इयि आराम
चित. शांती व्रत धारे नित्त दुर्गत हारे अस०

२ छिन. ठीकान प'कि प'कि कुनि अनेकन भवनन
च.चल क'र्यम.ति अ'सि कूति यमि आवागवनन
कर्म.फल स.ति ह्यथ भारे यथ ग्रट. अनवारे अस०

३ रंग रंग डलनुक सामान. समय ह्यथ इथ प्यव
च्यय शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव
हे दयावान' दया चा'ञी म्य कें छाह यारे अस०

४ कूति बदकार दुराचार परम्पार क'रित
कूनि वदबक्त गुनाहगार ब यकबार द'रित
कम गछिय क्याह च्य' म्य'त्यय चा'ञ दया बो.ठ खारे अस०

५ मंदछा छय ना को.र वां'सि म्य' चाने चाने
ज़यवि किञ को.र वनुना नत, महिमा कुस ज़ाने
सुय वन.नुय भव.सर तारि अद. कस करि तारे अस०

६ काल. दिच. डाल. फिरव माल. करव र.ति र.ति कार
सुबह् यलि फोल. त. पगाह आलस्यकुय रो.ट दरबार
गयि वांसा गज़रान दिन असि वारे वारे अस०

७ चानि रायि को.र म्य' यि केंछाह ती थव मन्जूर.य
नत. कुस ज़ानि करि.ञ भक्त किया गछि पूर.य
काम क्रोधस लोभ. मोहस मद स.य कुस मारे अस०

८ मूत. विज़ ध्यान थवक प्राण सु म्य' संधारे
वार. 'कृष्णस' निर्मल करि भव. सागर तारे
पद्म, पत्र.कि पा'ठि सर.मंज जल तस कति लारे अस०

(२६)

मो.कलाव मज का'दखानै ।
हा दया वानै वा.लो ॥
हा दयावान. भगवानै हा दया०

१ वूनमुत म्य' छुम जाल मोक.लावि चोन अनुग्रह
छुम ज.ल,यं ह्य्.व निशानै हा दया०

२ न्यथ. न'नि स.दि सायेबानै छुस ब. ताप तचि़ बुडर मंज.
त्राव रूदा श्रास्मानै हा दया०

३ मंगवु़न छुस छुमन. बानै बडि दय. करतम दया
बान. लदतं मान. सानै हा दया०

४ प्रथ सौदा छु वान. वानै गछि श्रासुन च्योन भाव
श्रद. मेलि पूरि परमानै हा दया०

५ छुम म्यठाह बो.ड कारखानै श्रद वाति चानि प्रियम. स.ति
सत्य देव, सत्य नाराणै हा दया०

६ हिय ब. लागै दान. दानै द्रय च्य' छै राघायि ह्.ज
यि मंगै तो दिम च़. पानै हा दया०

७ सों.बरित छुम सामानै वति लागुन च्यय तगिय
श्रद, प्राव. श्राश्चर्य थानै हा दया०

८ छुक कुनिय रूप. श्रगवानै द्वैत.ग्र छुम म्य भासान
त्रिभुवन स.ति श्रज्ञानै हा दया०

९ द्वारिका जऩ प्रथ मकानै वुछ बनोवुथ कृष्ण' च्यय
यि छु़ चोन सोन छय बहानै हा दया०



य'च़ काल वोतुम श्रारान श्रारान न्यबर बरस तल ।
विनत करान थारान थारान त्वं देव. दीन वत्सल ।।
थो कुस ब. जन्म धारान धारान वो.ज मुचरावतं बर ।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर ।।

श्री शारिका लीला-लहरी

[तृतीय तरंग]

(२७)

बंद कोर.नस बू. बाशे जगत.चि वाल. वाशे ।
मो.कलय चाजि आशे शिव नाथ. अविनाशे ॥

१ भाव. स.तिन इम'यो हर मुख. व'नि दिमयो
मोह. घटि ह.दि गाशे शिव०

२ कैलास कोह. छारत धारणायि ध्यान धारत
सत् चित् आकाशे शिव०

३ जप. शबनम धारे पपि ब्योल तप. वारे
कांह फोल गछि न. हाशे शिव०

४ शंभु नाथ. साधय आवाहन. नादै
साजि बोज़ शुर्य भाषे शिव०

५ तार हिम मोह. वावस मायायि द'रियावस
कड दुख. नावि पाशे शिव०

६ संसार.के सरय बो हर नाव. स.ति तरै बो
काम संकट विनाशे शिव०

७ कृष्णस आप चा'जि बख्शुस पाप प्रा'नी
शापन कर च. नाशे शिव०

होश दिम लगहो पपोश. पादन ।
हा साधन हंदि साधो हो ।।

१ यगियन हंदि योग, प्रा'णियण हंदि प्राण.
ज्ञानियन हंदि ज्ञानो
चानि प्रसाद, स'ति सिद्ध छि तप साधन हा॰

२ अच्युत. चानि स.ति चित्त.कुय चे.नुन
नत. गछ्छि मेनुन क्रंजल्यन पोञ
प्रेम जल. छुय वुज़ान भाव. नाग.रादस हा॰

३ ब्रह्मण ज़न्मस इथ छुम न. ब्रह्म स्मृ'च्
वुछ म, म्याञि राक्षस प्रकृ'च कुन
चानि सच् भक्ती चा'ञ क'र प्रह्लादन हा॰

४ पूर्ण पुरुष. छम चा'ञी लादन
प्रणव. पान वद.होय चो.न पादन
नाद. बिंद. कन थव सान्यन नादन हा॰

५ विचार . नेत्रय ज़ा'ञ गाश अन छि अ'नि
हर. हरमुख. च्य दिमहोय व'नि
निष्कल. मन निष्काम. राम. रादन हा॰

६ अनुग्रह चोन गछ्छि आसनि साधन
क्या छु पापन कमन ज्यादनप्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन हा॰

७ 'कृष्णय' चा'ञि कपटञि तल नेरिहे
अद. कति पा'रिहे जाम. न'वि न'वि
पुश. कति प्ययिहस होंज़न त. रादन हा॰

८ छो.पि मज़ तस छो.चरा नेरिहे
अद. कति वनिहे ज़ेछर यूत
याद है प्ययिह्स वुत्रि छुस आदन हा०

(२६)

पा'छ़ दोह यावन.नि आवग.नि सूरी।
यी भूल त्याग. कस्तूरीये ॥

१ मत वुछत. संसार.चि शोभायि कुन
मत. वुछत. देह. सो.न. लकायि कुन
ब'दि व'दि गयि ल'दि ल'दि लूयं लूरी यी०

२ संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस
ज़ेठुन छु ब्रेठुन बस कर बस
यति प्यव सारिन.य पुशि पूयं पूरी यी०

३ व्यवहार, बो.ज़ स्व'स्त अन. धन. द्यार स्व'स्त
गाट.जार. स्व'स्त ब्रह्म विचार रु'स्त
मूनि हिवि गयि हनि ज़न वूयं वूरी थो०

४ ज्ञान. वैरागुक बन. अधिका'री
संकल्प विकल्प सा'रिय त्राव
ममता पत थाव वय युथ न. दूरी यी०

५ मोह. ज़ाल. मंज़ नेरनुक उपाया.
कर. राज. हंसुन साया त्राव
अमर नाथचिय जानवर जूरी यी०

६ क्रियायि खो.त. छुय शुद्ध वासनायि फल
पूज़ायि खो त. प्रेमस त. मायि फल
'कृष्णस' रायि चाञि आयि मन्जूरी यी०



(३०)

कृष्ण. छुक मंज़ हनि लो लो ।
वनि इत मनि' रुकमणि लो लो ।

१ सोज़ै ब्रह्म. ज़न्मुक मंज़िमयोर
वासा प्ययिय इख नत. म्य' ज़ोर
विचार. पुछि च्य' स.ति अन. लो लो वनि०

२ योग. किस बामस प्यठ म्य' खार.नाव
दोह तार. मंज़, रुदि, म्य' म. प्रार.नाव
मुख हाव तन लाग तनि लो लो वनि०

३ रा,छि छिम च्य' निशि वातनस क.ति
ज़ोर. निम लं'डित, ह्यथ पानस स.ति
य क'स्त नत. क्याह म्य' बनि लो लो वनि०

४ काम. क्रोध लोभ. मोहुन शशपाल
ज़ेन.नि आव मे कस वन. हाल
ज़ोर. निम इम ओर.कनि लो लो वनि०

५ शरणागत वत्सल छुय नाव
धर्मस यथ नावस म. मंद. छाव
वीर. धर्म:य चोन ननि लो लो वनि०

६ भक्त. वत्सल. छुक बोड. वल वीर
मो.कला'वित निम को.रहम गीर
आ.चँर म्योन च्य' कुस वनि लो लो वनि०

७ अ'छ्नि लोर्स च्य' वुछि वुछि ईम
दर्शन दिम स.ति पातस निम
युथ न जांह अथ.वास छचनि लो लो वनि०

८ ध्यान, ज़ापोवन्तस कास म्ह' हान
वासनायि ज़ापोवन्तियि सान
मनि मन नित. दाज कनि लो लो वनि०

९ म्यानि ससार. यश. कुय मा'जि मोल
तृप्त कर ज़ोवराव मो.क्तुक ब्योल
भक्ति कुलिन.य मो.क्त छनि लो लो वनि०

१० तन सुख मन सुख भाव प्राव.नाव
सुख. सुख. ,कृष्ण' कृष्ण. सुख हाव
अख सुखिया अख सु बनि लो लो वनि०

(३१)

हे दय. ! बोज़ म्या'नि लोल. नाद कूत गोमुत छुस बदाद ।
इथि दुख. मंज़ कर म्य' आज़ाद दयाल. बोज़. फयरयाद ॥

१ थि छु संसार भ्रम त. बाज़िगार अत ज़ोनुस न. कांसि अ'कि
ज्यूठ सो.दराह बे शुमार तार जोनुस न का'सि अ'कि
यथ न. अंत आसि तत कति आद दयाल०

२ मोह. आवल.नि फाट. नोवनस छ्रट. छ्रट. कर. नोवनस
गोस बांबरि थर थर छम नरि जंघ. वाय. नोत्रनस
वांति लगनस दिम विवेक. पाद दयाल०

३ देह इंद्रिह त. छि परिणा'मी मन छु इहुंदुय स्वामि
अथ मनस पत. पत. दोरुन सो.छय बोज़ ह.ज खा'मि
संकल्पन ह.ज. छस उपाद दयाल०

४ चात्रि आशायि च्यय कुन आस छ्रट. छ्रट. सकट म्य कास
छुस चोन दास प्ययिनं पास हृदयस मंज़ कर म्य' वास
ज्ञान. अग्न ज.ाल म्या'नि अपराध दयाल०

५ संकल्पन त. विकल्पन स.ति गव म्योन वर्तन
विवेक. नो.म शिल वासन चूरि नियहम ह.न ह.न
होश डालान छुम म्य' प्रमाद दयाल०

गोस. क्याह गो.य क्याज़ि रूठहं छायि छय्प दित ब्यूठहं
दूरि रूजित लावि मूरे नार ललवून थोवथम
दिम दर्शुन मन गछ्यं शाद दयाल०

७ यम नित आसि सम. चित मन सुय ज़न गव सतजन
श्रुतियन मज़ ति छि वखनन यी छ़ वोंन्मुत व्यासन
सुय छ़ तपज़प सो.य छ'य समाध दयाल०

८ आसि करवुन अजपा जप धारणायि मज़त्रावि डाफ
अंतः किनि दूर को.रमुत संसारुक सताप
छुस न. शुमार छुस न. तेदाद दयाल०

९ हे दयालो. ! देह त्याग. विज़ि नेर सन्मुख पानं
वृत्त म्या'त्रय पज़ि रज़ि स.ति था'विज़्यन समाधानै
दुर्भल छ़म पान. युन याद दयाल०

१० निर्वाण. पद दित. 'विष्णस' चावतन विज्ञान रस
रोज़ि अन्द. कनि शुमारस मन. कामनायि चलनस
हृदयस मंजं रटि चा'नि पाद दयाल०



(३२)

इत. दित. दर्शन भस्माधारै प्रारै कोताह काल ।
हे शंभो ! रक्षपाल स्वामी हे शंभो रक्षपाल ॥

१ हर. दित दर्शन मर. कास्तम आस्तम ना'ली नाल
लोल.चि बबरे तर छुम द्रामुत गोमुत छुम य'च़ काल
दयायि जल अथ बब्रे सग दित पननुय अथ. च.य डाल हे०

२ मोह. सिथि उदरस मज छुस ईरै य'ति छुम सुम नत. तार
तल. छुम ज़लकुय नीजर हावान प्यठ कनि छुम गट.कार
नरि छम हजि ता'य जग छम बे सो.र किथ पाठि मारै छल हे०

३ फुच.मचि खो. परे मंज छुस प्योमुत प्यठ. छुम कर्मुक ताव
अ'न्दरी अन्दरो अक छम चाम चं बत. ल्यजि हुंद छुय छाव
शेहलन खा'त.र प्यठ कनि छकतम अक अमृत ज़ल चाल हे०

४ ईश्वर ! म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार
चय छक अनिनय अञ.गट कासान चय छक बखशन हार
य'मि किञि सा'रिय छिय च्य वखनान दीनन हुंद दयाल हे०



(३३)

हे दय. ! बोज कनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै ।
करयो अचंनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै ॥
१ संसार आवल.नुय यि छ सनि खोत. सो.नुय
अ'थि मज़ आस ह्यनै च्यय०

२ योवनस मोह. मसै रूदुम न. दान ह्यसै
उन्मत गोस तनं च्यय०

३ हरुम म्य कष्ट हन हन हरि हर छक थवुम कन
आ'चं र आलवनै च्यय०

४ सूक्ष्म निर्मल करुम वृत प्रत्यक्ष पा'ठिन ब. वुछहत
स.ति ज्ञान. लोचनै च्यय०

५ चितस सयकल करुम पूर अज्ञान मल गछयं दूर
हे टाठि तिरज़नै च्यय।

६ पादन तल. ब. मरै चा'ञ.य स्तुता करै
वार. बार आर अनै च्यय।

७ वासनायव नाल. रो.टहस संकल्पव ब. चोटहस
कोङहस पन. पनै च्यय।

८ दितं सत्सग म्य हरदम इयं शांती त. शम दम
ब'नित आज़ाद बनै च्यय।

९ 'विष्ण' थावतन समाधान चल्यस यव. देह. अभिमान
मंगन छुय क्षण.. क्षणै च्यय।



(३४)

इमय पत. दिमय नाद क्यथो म्य याद प्योहम।

१ च.य छक जप यज्ञुख जप च.य छक तप. वनुक तप
च.य छुक साधन हुंद साध क्यथो।

२ च.य छुक योगियन हुंद योग चय छक प्रां'णियन हुद प्राण
च य छक सत.कुय संवाद क्यथो।

३ च.य छुक डय्क. च.य छुक टिक च.य छुक दूर च,य नज़दीक
च.य छुक सार्ययनय हु'द आद क्यथो।

४ च.य छुक दुख च.य छक सुख च.य छक परम. आनन्द मुख
चं.य छक कम चं.य छक ज़्याद क्यथो।

५ च.य छक साधन हुन्द संग चाञे तनि सफेद रंग
पंपोश हिव्य छि चा'नि पाद क्यथो।

६ वेदन मंज़ छक साम वेद देवन मंज़ इन्द्राज़ह
दैत्यन मंज़ छुक प्रह्लाद क्यथो।

७ रजो गुण. छक ब्रह्मा सत्व गुण. विष्णु भगवान
तमो गुण. गालान व्याद क्यथो।

८ धर्म.चि लरि कर्म.कि बर. चाने स.ति अच न छ्म
च.य छ्क क.न त. च.य बुनियाद क्यथो।

९ य'मि युस ज़ोन सुय त'मि मोन च.य छक म्यॊन कर्म लोन
वनै च्यय ब. लानिनि वाद क्यथो।

१० लोल.नि साज प्रेम.कि ब'ग. वायय सोज़ दमा बोज़
इतम योर ह्यतम दाद क्यथो।

११ 'कृष्ण' धार.नावुन ध्यान सुय ध्यान यत दपन ब्रह्म ज़ान
ह्यथ शिवराग दित समाध क्यथो।

१२ संकल्प त्रावि रटि मन प्राण वासना गालि दियि समाध
चाञि दयायि प्रावि बिंदु नाद क्यथो।



(३५)

अंत काल'चि ज़ाल· छम तमि हाल· निश· रछतम दये ।
दिम अभय वर छम यम·च थर कर दया मृत्युञ्जये ॥

१· भव· सागर· दिवयि रंगस आयि कति का'त्याह् गये
पार तारुम बो·ठ म्य' खारुम दुख निवारुम मंज़ भये दिम०

२· आस्तं खो·श कास्त दुख मास्तं सन्मुख दये
मन म्य छुम आईन· सूरत साफ कर रटुमुत खये दिम०

३· किथ पा'ठि जिंदै मरव बो·च क्या करव वांसा गये
साथि र'टि पनन्यव घरव बस· नाव मंज़ शांति शये दिम०

४· वश्य छि गा'म·ति संसारस यश कडनस खो·श छिये
ओर· योर· नित· ज़ोर· म्योनुय मन· च· मंज़ निर्णय नये दिम०

५· द्युन शरीरस वा'सि हु'द आराम वुछक्यन क्याह् लये
यत दपन भूमा छि तत थानस म्य निम सत्गुर पये दिम०

६· निच· म्याञ्चर म्योन लाग·ञ को·स अत लागत छये
पत मो·चक सोरुय च पानै अथि कालस क्या इये दिम०

७· शून्यकिस शून्यस वनैं क्या तत सो·रुए कांह् क्य ह्ये
करत· निर्वासन च· दासन मोक्ष मस प्रत कांह् च्यये दिम०

८· चल·नावक ज़ीवत·कि छ्ट युथ न· इछ मूर्च्छा प्ये
फो·लनावक यस च· चित सुय भखचि बागस फल ख्ये दिम०

९ श्वेत द्वीप·कि हिवि मनुष्य कर पालव·नि काल च्रये
मोक्ष अमृत प्याल· चाव अज्ञान रुस्त निरामये दिम०

१० गछ शरण 'कृष्णस' करिय अन्तःकरण लय मंज़ प्रये
लूक डेंशन दय सो.रन आलव करण जितेन्द्रिये दिम०



(३६)

हशान ज़ीवो देह दोह छु नशन अमर पान कव· मशन छुय
१ काल·च्रि च'जे देह यलि प्यवान सु कुससन· युस म'रित गव
वो·थान बेहान भोगान सुय यलि गछान देह अद प्यव
देहस च्य क्या हिशर छुयो ज़ुव ज़ान ईश्वर· अंश दो ह०

२ ज़ुव ज़ानव·नी छिय ज्ञान वान·य नतव इम मूढ भावस गय
नाना योनियन देह आदिकन कुंभीपाक अर्णवन प्यय
पुण्य पाप कर्म, शापन व'लिम·ति जन्म–मरन –रोग़न च्रय ह०

३ ईश्वर· अंश अग्न त्यंबर अज्ञान· काठस संद·येज़े
काठस ह्यथ सूय अग्न त्यंबर ईश्वर अंश सांप·निज़े
यि दय, धन· तस यस गुरु कृपा भ्रम· य ससार गंज़,र्य ज़ेह०

४ गोड· छुक विषय भोगन भ्रमन पतव विफल नेरन दुख
काल·च्रि सिंधे तिमय तरन सिद्ध यस गुरुजरन परम सुख
महा चंचल मन लय करन सु,रान सुदेव अंतर्मुख ह०

५ संसार यशस वश गछि भूत.य थ्यकन देह कि डबर दो
छम लरि छुम राज्य छुम नाव गोत्र छिम बंध बांधव मित्र दोस्त
थरि पोश ब.र ज़न गयि काल छ़टे व'र्य द'यि तिम इम अमर दोह॰

६ सतुक यश सुय इन्द्रिय र'टित सो.रान सु देव आत्म शिव
तुतान नित्य तस देवता सा'रिय पितर सत. ऋषि-चंद्रम-रव
अनेक अश्वमेध-नरमेध क'र्य त'मि ध्यन भवनन हुंद स्वामी गवह॰

७ पतव कां'लि देह प्यवन खोचन तिम टा ठि र'छम. ति इम
चितायि हुंदुय यत्न करन या'ञ दज़ि मो.र घर. गछ़न तिम
पतव तस स.ति कुस छुय पकन कस यम किंकर पचंन दो ह॰

८ तवय अमृत कथा वनय मरन. ओ़ठुय हा म'यज़े
मरणय मरुण गव दय सो.रुन योग लयि सुय दय सो.र्यज़े
सहज अमृत च्य गलि गले यम भय. भव.सर त'र्यज़े ह॰

९ युथ नो यि कथ व'नि क'नि प'ति गछ़िय त.गछ़क गटे मंज़
युथनो यि वथ पक.ञ मशिय कठकशि लगक छटे मंज़
यि कय यि वध पालन प्रावक दय. घरि मेलिय वो.टे मज ह॰

१० इमय यथ कथि यछ़ पछ़ भ'रक सत्संग नावे त'रित गय
यमि भवसरै स्वरूप विमुख तिमै अकाल. म'रित गय
देह.चि छ़ाये ल'गि मोह. माये पलव पानस फ'रित गय ह॰

११ हरन तिमै सो.रुक न. ईश्वर घरुक भ्रम गोक असुरगय
इम गय शरन तिम व'र्य हरन यम. त्रास. कठिने उद्धर गय
घर बार वर्ज़ित अंदै रूज़ित काल.ञि सिधे अमर गय ह॰

१२ काल'ञि च.जे गछ़ान खंजे सुन्दर त. गंदर गछ़ान दो
अन्न पान च्य क्यत रोचान छुयो च्य क्यथ मन अद. पच़ान दो
कालस हारि भयस तारि च. कोन. दयस सो.रान दो ह॰

१३ कालुन दुर्भेय सु क्युत सना जन्म कष्टय सु क्या गव
ईश्वर अनुग्रह यस भाग्य ज़नस तति छुय पानँ उदय शिव
ज़न्म कस सन. सुफल गछे त्युत कंमि सना युथ अमृत चव ह०

१४ इमन भाग्य उदय करान स्वामी सो.रान वों.दे मंज़
आकश. पाताल. तरित गछान क्रीडा करान कंदे मंज़
संगरमालन शीन. इथ. ज़ल द्राव ज़ले बिंदु सिंधे मंज़ ह०

१५ इम ज़नि आसान कुने कुने व्यापक तिम ह्नि हने मंज़
यस लोल ईश्वर. सुँघ घो.न मने तस कोन. तिम् अद. वने छिये
युस यी वने सुय तिय बने इम संमि नित सनि वो.गने छिये ह०

१६ मधुर वेह छुय मनुक विषय हा मित्र रूपी शत्रु ज़ान
युत नो फसक लसक न. अदह मन लय कर दैव सो.रुन ज़ान
वेह गलि दह यलि शत्रु गलन नित योग. अमृत चो.नुय ज़ान ह०

१७ इन्द्रिय अति विषय महा वीर.य मन राज़ महावीरन दो
अक वीर दह सास वीर कि इरै ध्योन ध्यो.न बल छुक त्युथुय दो
अंकिस.य कामे सांख्य छि लारान क्या तति उपाय ज़ीवन दो ह०

१८ कुस सन. इथ्यन वीरन मारे मन वीर राज़स रटे कांह
भयस कासे भक्ति आसे सु जन यो.दवै टोठे कांह
वुज़मलि सुय रटि आकाश चटे रवस रटे कांह ह०

१९ नाथो ब. नो रानम मंगै म्य रावणुन राज्य करे क्याह
यि केंह देहस प्रारब्ध आसे तत मंज़ हरे त. हुरे क्या
ओसुम दुर्लभ बन्योम सुलभ स्वराज्य लो.भुप बों.दे मज़ ह०

(३७)

श्याम सून्दर. बेह सुन्दर जाये ।
वथरै मन मथुराये लो लो ॥

१ प्राण. पवन. स.तिन मुचरन. आये
नव द्वार देह द्वारिकाये लो लो
वृ॑च गोपियि च्यय वुछने द्राये वथरै०

२ बाल. रठ नाल.मति स.ति पालनाये
साञि मखिच् हंज़ि कुब्जाये लो लो
निष्काम. सिद्ध कर. मन. कामनाये वथरै०

३ टोठयोक गज़ेंद्रस कथ विद्याये
आहिरस कथ श्रद्धाये लो लो
कमि श्रोचि खुश सां'पनुक शिवराये वथरै०

४ केवल बख.च हुन्द कर म्य उपाये
स.ति पननि प्रेम. त माये लो लो
वासुदेव. वास कर मंज़ वासनाये वथरै०

५ राज. द्वारस चा'निस भिछाये
आधीन कर्म हीन आये लो लो
चार. कर म्य आर.कचि सुशीलाये वथरै०

६ सुदाम ज़ा'नित कर म्य उपाये
वो.लमुत छुस ज़िष्टाये लो लो
छो.चर.य म्योन पूर स.ति पूर्णाये वथरै०

७ बान. रो स्त द्रा'मुत छुस भिक्षाये
वूँचमुत दैव संपताये लो लो
भिक्षुकस त्राव राज़ हंसुन साये वथरै०

८ फल. दायक. चानि खल. किन आये
अनुग्रह तोत पूरि त्राये लो लो
वो.वमुत केंह ति छुमन. कर्म भूमिकाये वथरै०

९ शो.ज़राव संकट ग्रह दशाये
उल्ट, समयस प्यट ज़ाये लो लो
फिरथुर कर च़ सानी कर्म लेखाये वथरै०

१० भाव. मुच़कन्द म्योन पननि इच्छाये
साव मंज़ मोह. निद्राये लो लो
वुजनाव मंज़ स्मृच़ गुफाये वथरै०

११ पानस पत. दोरनाव म्यान्नि राये
सिर्यि रूप. ज़न पो.त छाये लो लो
ज़ाल मद. कालयवनस कायाये वथरै०

१२ मारका'ण्डी ज़न चान्नि आशाये-
आयस मंगने च्य आये लो लो
कालम ग्रास कर भास जायि जाये वथरै०

१३ आत्मा राम. निवृ'च़ हंजि राये
स.ति पक शांत सीताये लो लो
दण्ड कर प्रवृ'च़ शूर्पणखाये वथरै०

१४ गाल मोह रावरास त. क्रोध. सेनाये
ज़ाल लोभ.चि लंकाये लो लो
विवेक. मन. लक्ष्मणने भाये वथरै०

१५ सत्गुण प्रकृ'च कौसल्याये
मुख हाव स.ति दयाये लो लो
राज्य कर आनन्द. अजोध्याये वथरै०

१६ ज्ञान. ताज दित ध्यान. धारणाये
स.ति स्वतंत्र.ताये लो लो
चित्त तख्तस बेह ह्यथ समताये वथरै०

१७ होशयार रोज़ मंज योग. निंद्राये
ह्यत समदृष्ट एकताये लो लो
तुर्या रूप. मंज़ राज़. सभाये वथरै०

१८ अज़ ताज़ का'त्याह गयि क ति आये
वत.गत यत यात्राये लो लो
एक. कुस वोत चाज़ि अनेकताये वथरै०

१९ वीर.क'र्य ईर. चाज़ि विष्णु मायाये
बडि दय. बेपरवाये लो लो
इम त'र्य तु. तिम ता'र्य चाज़ि कृपाये वथरै०

२० म्य'ति तार भव.सर. आवल.नि जाये
स.ति विवेक. उपाये लो लो
युथ देह. डँग. सोऽहं हम. वाये वथरै०

२१ केशिव नाव ज़पनाव भावनाये
अज़पा ज़प मलाये लो लो
मन नाव·आत्म तीर्थ·चि यमुनाये वथरै०

२२ राम·च.न्द्र॰ शिव लगह्‌ोय एकताये
हा'वित चन्द्र कलाये लो लो
मोह् गट· कास म्याञ्‍ि बोज़ मीनाये वथरै०

२३ सावधान मन कर य'ज़मन–भाये
योस द्रायि मंज़ प्रज़ाये लो लो
वर तस वो·ञ वा'णी कन्याये वथरै०

२४ विश्वरूप व्यूग ल्यूख कर्म· लेखाये
स.ति नाना वर्णाये लो लो
शक्तिपात, दृष्ट थव प्यठ निष्ठाये वथरै०

२५ कर्णेश्वर्यन हंज़ गूर्य भाये
रास खेल·नि नञ्‍ि द्राये लो लो
थफ कर कृष्ण·ञि' राग· राधाये वथरै०



'लल' ब चा़यस स्वमन· बागस वछुम शिवस शक़्त मीलित त· वाह्
तति लय को·रुम अमृत' सरस ज़िंदय मरस त· म्य करि क्याह्

—ललेश्वरी

श्री शारिका लीला-लहरी

[चतुर्थं तरंग]

(३८)

चित्त भोम शांत चोन प्रेम. अमृत चोम।
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ओम्॥

१ बमि संसार. मंज़ पत. लायेम क्या
दय. नाव स्वरण. रुस्त थावुम म. ज़ांह्
चानि भक्ति भाव खो.त कांह् परम सुख छा
पत. वन. भिक्षुका ह्युव बादशाह्
ब्रोंठ.य म्य ह्यस फिर घरि कुय भ्रम गोम ओम्०

२ मन. वाजि नारायण नाव खनतम
संकट. गटि मंज़ अनतम गाश
रायि मंज़ घनतम मोक्ष पद वनतम
प्रकट वनतम परम आत्मा
क'त्र ज़ह्शि बुद्ध छम थ'व्य ज़न करत.मोम ओम्०

३ नज़ि ज़ांह्ज्यवहा नज़ि ज़ांह् मर. हा
नारायण नारायण करहा नित
चानि नाव. स.ति भव सागरस तरहा
ध्यान चोन स्वरहा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेश इथ प्योम ओम्०

४ हकरे बनि मंज़ अन. गगुराय चाव
योर. ह्यत क्या चाव ख्यत क्या द्राव
कायायि म्यान्नि मंज़ छु आश्चर्यवत वाव
रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव
निलेप द्रास पत. क्या ख्योम क्या चोम ओम०

५ योर अथ व'हरित तोर आख व'टिथय
को लि मंज़ फ'टिथ.य छुय होख पान
क्या लारि धन' सों बरित पान च'टिथ य
धर्म व्यवहार कर ख'टिथ.य पा'ठि
जन्मस इथ करनाव धम.च का'म ओम०

६ ब'डि ब'डि कार क'र्य क'र्य क्या प्रोवुम
थ्यक.नोवुम छुम बो.ड खानदान
यश. पुछि मान. पुछि दोह रावरोवुम
लूकन होवुम देह अभिमान
ह्यस फिर म्य मोह मस च्यत पान व्यसरयोम ओम०

७ मृत. विजि आजमल गं'ज़रावतम
म'शरावतम जन्म.कि करतूत
यम. किंकर बुथ मत. वछनावतम
नारायण नाव थावतम याद
युत छु त्युथ चत 'कृष्ण' प्रेम दो.ध ओमज़ोम ओम०



करसै सो.न पोशन्न माल।
अज़ इयि लाल. सोनये॥

१ मय खा.नके हा कल. वाल असि मय ह्योत चो.नुये
प्यालत. त्याल. माल माल अज़०

२ तसुँदुय मय त. तसुँदुय प्याल तसं.दे वान. क.नन्नै आव
खुँब.चि कुँज़' तस हवाल अज०

३ दूर्यर त. लो.ग कोताह चाल. मूरे नार छुस ललवोन
शूरे पान क'हि संभाल अज़०

४ य'मि लायि लोल. सोदरस छाल त'मि खोर लालि दुरख्शान
सुय रूद आद्य अंत बहाल अज०

५ तेजोमय युस नूरान. विज़े वुज़नावन गोम
करसै शिल दिल हवाल अज०

६ केंह् गय रिंद केंह् रिंदान. केंचव रिंदव ज़ोलुय पान
केंह् गय अचित च्यवान प्याल अज०

७ दाग सुय ह्यत कुनि गुलालि. बाग.चि हिय सु छाव्यम ना
नावस तन ता'य रटनै नाल अज०

८ केंच्व को.ड मुल.क दाल. केंचन निशि हावान पान
केंह् गय बर. ज़न गुलाल अज०

९ व'लि श्य त'मिसं.दि लोल.कि जाम अज़ इयि श्याम सोंदर सोन
सुय इयिं 'वासुदेव नि' साल अज०

(४०)

कर हृयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार ।
आद्य शक्तिय शिव जियस नमस्कार ॥

१ ओमय आद्य ओमस अन्दर पञ्चाकार
ओमय ज़गत धारित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि भ्योन–२ छुस विस्तार
ओमस पार्य ओमस हर मुख. नमस्कार आद्य०

२ ओमय छु सार. ओम.चि स्मुरण मनस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
भक्ति देव. प्रमाण थावक. बनि उद्धार
भक्ति स.तिय लय कर भक्तयो लभक तार आद्य०

३ मोह.चि न्य'न्दरि अन्दर म. गछ गिरपतार
बोधायि अन्दर न्य'न्दरि गछ़तो खबरदार
स्यो.ध वो.थ न्यन्द.रि इन्द्रिय क्रीडस निश रोज़ खबरदार
दिल थव डंजे लंजि छुय विहित जानावार
बोलानावुन लोल. पनने सुय सू.य ओमकार आद्य०

४ आनन्दमय बनक प्याल. चावनय मालामाल
भावनय सौख्य स्वमनि सोऽहं सहाकार
त्रिगुण उल्लंघित निर्गुण छु पानय निराकार
अनतन लये मनस स.तिन पनुन यार आद्य०

५ पान पनुन य'मि कोर. सहो. ब. संसार
बही त'मिसंज़ सही सॉ'प.व्य ब. सरकार
'वासुदेव.' मेलव देवाद्यदेवस ब. विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादि प्रणाम नाद बिन्दस छु बारंवार आद्य०



(४१)

फुलय ल'जिम सहज़किस संज़ीवनस
समय वा'तिथ कुनि भुवान मनुष्य ज़नस
सहज़ पूज़ा करि कूँछाह नारायणस
श्रेयान धर्म छु म म्य पनुन निस्त्रैगुणय

गव कल्याण स्वधर्म. मरुण पर धर्म ज़य ज़ान भये ।

१ पर गव यि शरीर बोज देवन ति छुय नश.वुनुय
यि करि शरीर रंब.वुन यो.द ता'य पश्यवुनुय
आत्म. धर्मी दुख ना हरि तोष.वुनुह श्रेयान०

२ स्वधर्मी युस पा'नि पानै पानस अर्चान
अनेक रूपस भेद ना तस केवल यु मो.चान
स्वधर्म. विधा तस बिना कां'सि न. व्यचान श्रेयान०

३ घंटायि शब्द ठिनि रुस्तुय छ़य वज़वुनुय
सदा शिवस निश. नेरान सुय बोज़वुनुय
बो तन भोरय ओर. योरै सुय रोज़वुनुय श्रेयान०

४ मधुर मस.य ब्रह्म. योगुक च्य गलि गले
दीर्घ. रोग.य ससारुक तवय बले
ननिय सु ईश्वर निश पानस सदेह चले श्रेयान०

५ सुत.य सुत.य देह. देशस अमर छु त.य
सु जुव म्योनुन युस केवल ब्रह्म छु त.य
वाक् ईश्वरीय रूप नाव तसुंद सु पर छु त.य श्रेयान०

६ व्य'चस न. कुने यी ब. आ'स.स तिय दो मो.चस
प्रज़ायि आंगन बाल. पानय रुमा न'चस
युथ्य ख'चस त्यन पोरन त्युथुय व'छस श्रेयान०

७ सु मा डयूठवन नाव गोत्र वर्ण. रुस्तुय
युस दज्रि नता'य हो खि नता'य छयनन. रुस्तुय
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज़न द्राव लोसन. रुस्तुय श्रेयान०

८ सर्वारंभ.य त्रा'वित युस दयस रटे
तस दय दर्शन सिर्यि ज़न दियि मोह ज्ञि गटे
दय ललि टोठयोस सा'यस.य मज तस केंह न मटे श्रेयान०

९ सु देवदत्तस पोश लागस नित्य नाश. र'सितिय
अकाल. पोशन छक उत्पत्त आकाश. ख'सिथ.य
ज़ानान तिम ज़'नि सुकृति ज़नाइम गांश स'सितिय श्रेयान०

१० स्वछन्द नाय.य ओस पानै सु बा'लिये
युस कदि ओसुम छायि रूज़ित केंह का'लिये
युधिष्टियर ज़न चक्रवत द्राय सु का'लिये श्रेयान०

११ स्वरूप.य ज़ोन भगवान संतव राज़ ऋषव
अनेक. रूपी रूप तस द्रायि अरूप सु गव
सु शांत प्रकाश सुलभातित स़लुभ लयव श्रेयान०

१२ ब्रह्माण्डस द'यि व'नि म्य दिच़ाम आगुर कते
सहस्र. दलय. फोलित आव सुयोग. वते
स़दर्शनस कें'ह न. विना लभुम न तते श्रेयान०

१३ स्वत: प्रकाश जानव..नि द'य स्वत: सिद्ध.य
स्वराज्य करान स्वदेशस सु शुद्ध बुद्धय
स़धीर रोज़ू बोजु बोज़ू सु धर्म त्रिध.य श्रेयान०

१४ स्वमाला छुम स्व मने नित्य जपव.त्रिय
स़पद सुवाक सरस्वती छय वन.व.त्रिय
ननिय स्वज़ात शुद्ध स्फाटिक शांत शोल.व.त्रिय श्रेयान०

१५ सुज़न आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्र.य
स़ बोध मये बोज़वनुय छु स्व मन्त्र.य
सु भक्ति विना भू क्रिया छय न सु तन्त्र य श्रेयान०

१६ सुवा'दी कम कें'ह न मन्त्र कुस बनान
सु आनन्द. गरा न'दियव इति अमृत फिरान
सु भाग तिमन च्यन इमय अद. न. मरान श्रेयान०

१७ सु भाष. करान नाश. रुस्तुय छुम सुय जुवुय
जुवुय शिव.य जुव ब्रह्मा विष्णु जुवुय
स्वतः च़ेतन युस प्रज़ायि कुनुय जुवुय श्रेयान०

१८ गुपित कर्म नित्य करान सु कर्म. वान.य
परामर्श छुक स्वभाव छिय घैर. वान.य
सो.गत सो.वथ भाग्य हीनन ना ईवान.य श्रेयान॰

१९ सो.जा'ञ किञिय नित्य सो.गत दिवान दये
दुर्भिक्ष न. कुने तति सुभिक्ष सु समये
सुधैर सुसग आद्य अन्त यथ न. समये श्रेयान॰

२० अव्यक्त मूर्ती दृष्टमान आव सु चैनन.य
परम विधान सु स्मृत छम सुधर्मवान.य
सु वा'नो हत्र केवल आनन्द स्वरूप निर्णय श्रेयान॰

२१ सु दृढ करान बहु जन्मान्तरन.य सुकर्म
जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य सिद्ध गव धर्म
सुधर्म फल द्रात्र 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' श्रेयान॰

२२ ब. तस निशे सु म्य निशे दूर्यर. न. क्षण
दूय हव ग'जिम कस वनथ लक्षण.य
सो योग. कला सु पूज़ा सु प्रदक्षण.य श्रेयान॰

२३ सु शिव वने कस इये सु तेज़. मये
सु वासना यस साधकस नित्य सु बोध मये
सु तेज गाशस अविना'छी वुछ हृदये श्रेयान॰

२४ सु बूलि करान सुत. ब्रार्यन सु वोध. ब्रोरुय
चिन्तामन देह पारिजातक कुल देव. दरा.य
यि केंह मंगान सिद्ध गछान तत केंह न. ता'र.य श्रेयान॰

२५ छय 'लछ' संख्या नाव तसं.दि अलक्ष्य सु दय
सु भक्तिमये स्थूल सूक्ष्म हिहूंय सु दये
तस केंह न' अ'न्दी ज़ान त. संदेह दपान तस दय श्रेयान॰

(४२)

उत्तम भाव. सहज़ यज्ञस ब्राह्मण नित्य हुमनस छिय।
देह अभिमान आहूती तिमय परम. हंस.य छिय॥
तति तोर सा'रिय आरम्भ दोषन. वा'र. व'लिम'ति छिय

सहज़य ज़ान सहज़य मान सहज़ चे'न सहज़. पान
सहज़ क्रय दोष यो.दवै मो त्राव प्राव सहज़. ध्यान
सहज़ छुय सहज़ रस चित्त सहज़ रस छुय म्य कारण.य
सहज़ पान नित्य प्रजलान दूरी ना नेरि प्रावनुय
सहज़ क्रय शम्भोहस प्रयि सुय ध्यान पज़ि धारनुय सहज़ ज़ान०
सहज. लयि च़लि मनि खय निशि बनि दय सहज़ानन्द
सहज़ भाव. दीप प्रजल्यव गट. च़लि मेलि परमानन्द
सहज़ वारि सहज़ पोश फो.लि. फल द्राव सहज़ानन्द
सहज़ बीज़ आत्म तेज़ चिन्मय अविना'शी छुय सहज़ ज़ान०
अन्दिगटि कति सहज़.द्दष्टी सोरुय प्रकाश.य छुय
सहज़य शम सहज़य सम सहज़य परम गाश.य छुय सहज़ ज़ान०
सहज़ वति रावुन कति रोवमुत अथि इवा'नी
सहज़ कथ छय अमृत जन्म मृत सोर छिवा'नी
सहज़ थान योगेश्वर नित्य समाध दिवा'नी सहज़ ज़ान०
सहज़ नित्य आत्म तत्त्व सहज़य ऊर्ध्वगति ज़ान
सहजय नाद सहज़य बिन्द सहज़य अव्यक्त.य ज़ान
सहज़य शिव सहज़.य शक्त सहज.य परम गति ज.ान सहज. ज.ान०

सहज़ शब्द ब्रह्म.य गव सहज़य ज़ान 'अ' शब्दय
सहज़य सत्य विचारय सहज़य पर. प्रसाद.य
सहज़य थान अमृत छ.य सहज़ भक्ती छय अलबदय सहज़ ज़ान०
सहज़ वाद गव संवाद सहज़ भाष्य गव संतसंग
सहज़ बोलि कूंछाह तोलि कूंछाह जानी सहज़ बंग
सहज़य सार्यकुय मूल.य सहज़य सारि निशि असग सहज़ ज़ान०
सहज़ ओंठ सहज़य पुत. सहज़.य यत समयस छुय
सहज़व स्वयं नाथय छुय सहज़.य अद ईश्वर कुस
सहज़य आद्य अंत रोस्तुय सहज़.य स्वरूप अरूप युस सहज़ ज़ान०
सहज़ तारक मंत्रय सहज़य संत मार्ग.य छुय
सहज़य गव वेदांत.य सहज़य वेद अपार.य
सहज़य तत्त्व बोधानन्द सहज़य ज़ानतो भर्ग.य सहज़ ज़ान०
सहज़य वाति न. लभुना वा'तित हनि हनि छुय
सहज़ यस नित्य अमृत दय. सहज़य मंज़ मनि छुय
दयस गारि सहज़चार नित्य नाराण वने छुय सहज़ ज़ान०
सहज़य सिर्यि खो.त. छुय नो.न त्युथ छु गंभीर.य
गंभीर सान सहज़ुक भाव निथ सुर.वुन छुय वीर.य
वीर ना ईर. प्रल्यन छीय तुत मान कुस करि वीर्‌य
सहज़चि तारचि तूलित तस त. म्य भेद रचिनव केंह सहज़ ज़ान०
या सुय योताबू.य ना केंह नत. बू.य योत सुय न.व केंह
सहज़ बाग अनन्त नाग ह्ययि तति ज़ाग सहज़ानन्द'
सहज़ वारि सहज़ पोश फो.लि फल. द्राव सहज़ानन्द सहज़ ज़ान०

(४३)

१ स .कलि निष्कल द्रायि सो कले ।
वोथ मन. ! हा कले शब्द जप ॐ ॥

२ होश थव वासनायि द्यान रोज़ि सम
मन प्राण सत्य भासि सर. फो. लि पम
सान रट पानस विघ्न हान चले वो.थ०

३ कस चावि लोलकिस प्यालय मस
सुय करि तय ओर चावन यूस
लोल.कि द'रियाव. गो.ड पान छले वो.थ०

४ मन बुद्ध सू.ति छुय खूर ता'य हम
सोऽहं रज़ि सू ति प.वन नावि लम
अहं ना'वित सोऽहं फ.ो.ले वो.थ०

५ प्राणचे अकरे शब्द पर.मान
सार रठ बो.ज़ सू.ति पूर तोलान
सत चिय साक्षी लेख. अमले वो.थ०

६ सोऽहं हायकि सू.ति परमानस
यति तति प्यतरुन छुय पानस
होश थव वासनायि युथ न माल गले वो.थ०

७ शब्द बूल कुकिले गोविंद गो
पीशनूल छिय जपान कृष्ण गोपो
आवुन सूरित कस्तूर कले वो.थ०

८ सो.न खसि कहवचि तार.चि् तोल
तोलि सुय रचि् रचि् य'भि अहं गोल
भ्यो.न भ्यो.न मो ल छुय सो.नस सरतले वो.थ०

६ यावन बागस फुलया छम
नाद खस साधान तेज बिंदम्
सत्य लोक समाधि सहज़ प्रज़ले वो.थ०

१० ही फो.जि जारन आरन आरवल
मस्वल गुलाब व्ययि यंब्र.ज़ल
बंबूर छारान छुय यंब.ज़ले वो.थ०

११ मनकिस ध्यानस सोऽहं खानस
संहज़ संदानस सो.रनुय ह्यु व
दम ह्यु सम रोज़ अद. पम फो.ले वो.थ०

१२ कन थव क्या वज़ान टल्द ज़ीर बम
च़ नतो आ'कलो दर नफिस दम
कलि-२ कल घनेयम वुज़ म्य शशीकले वो.थ०

१३ 'परमानन्द.' त्राव फिकिर. त. गम
चिंतामन रत्न सत्य ज़पुन ओम्
बू.य बू.य त्रां'वित दू.य मनि गले वो.थ

१४ ईय ओस रोव.मुत तीय पनने गरे
गोरन दुपनम अतिथय प्रार
ओरुत प्रारान ओश कर मेइयेले वो.थ०

१ निरला वास· दय वरतन त्रिकाल·
कर्ता भर्ता बाल· ब्रह्मचारो ।

भक्ति भाव· कोसम पोषन करै माल·
बाल· गोपाल· नन्द लालो हो॥

२ प्रथ भूमिकायि मंज़ शून्या वलये
अ'ति थ्यत करत· चित्त भगवानो
बुद्धि संयोग· साक्षात्कार भास्तम बाल०

३ विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान·
विश्व रूप· किनि छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दित दीन दयाल बाल०

४ शुद्ध प्रज्ञायि ह'दि सत् स'योग· मान·
मध्य मायि मध्य भूत प्रज़लानो
तेज़स्व बालार्क तेज़ दीप्ति बिशाल· बाल०

५ बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान·
चित्त गण· द्योतव·नि चित्त भानो
चित्त शक्तयानन्द· भोगी प्राज्ञ·काल· बाल०

पश्यन्ते यत्-वत् चे·य योगेश्वर·
तत् वत् व्युत्थित चित्त स्वप्रकाशो
बाह्यन्तर तेज· निर्भर त्रिकाल· बाल०

७ द्वादशांत॰ वास॰ वासी चेतन मान॰
स्व सुखस्थान॰ सुख भोगानी
स्व परानन्द॰ आनन्दय सर्वकाल॰ बात॰

८ सहस्र॰ दल॰ प्यठ॰ स्वस्ति ज्योतिष्मान
अंड॰ पिंड॰ अखंड॰ दीप्ति मानो
अप्रमेय॰ अविच्छिन्न॰ दिन॰ दिक्काल॰ बाल॰

९ परात्पर गाशरं हंदि गाशर॰
सर्वेश्वर॰ बोध॰ मानो
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्रज्ञ क्षेत्र पाल॰ बाल॰

१० सत् सत्व तत् तत्व अच्युत॰ ब्रह्म तत्व
नित्योदित चित्त विवस्वानो
ओंकार॰ रूप, परिपूर्ण॰ निर्देश॰ काल बाल॰

११ सारातिसार॰ सर्व आत्म सर्व आधार॰
देवादि देव॰ गो धाम॰ नाथो
हे दात शक्तिपात॰ करतं उपराल॰ बाल॰

१२ सुज्ञान॰ सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षण॰ क्षण॰ भासतम साक्षात्कार
कृपा करतं भगवान कृपाल॰ बाल॰

१३ पादारविन्द॰ अमृत तृप्तावतम
प्रावनावतं परम॰ आनन्द थान॰
पाद॰ कमलन वंदै नेत्रन हंदि लाल॰ बाल॰

१४ दासन क्युत ह्यो.त छुक बडि स्वभाव.
शुभ. दर्शन. वर दिवानो
विदुरस हाक. म्य प्यठ आमुत साल. बाल०

१५ प्रारान प्रारान वोतुम यूत काल.
अनुकूल भगवान. दयालो
ब्रह्मार्पण बोज़तम प्रात: काल. बाल०

१६ श्रीधर. सुर. गुरु. बाल. दामोदार.
श्री कृष्ण. बासुदेव. श्री रामो
सुख मुख सन्मुख आस्त अन्तकाल. बाल०
१७ निरला चानि संयोग. प्राव. यव.ना
सुज्ञान. विज्ञान. अति वृद्धा
दय. गोविंद. दास.य बन. त्रिक. काल. बाल०



(४५)

१ चेतन स्वप्रकाश सर्व आत्म ज्ञानी
सत् चित् आनन्द गण परमाशक्त ।
नित्य सार संवित ज्योत द्योत वानी
कृपा कर मा'जि भवा'नी ।।

२ नित्योदित चित्त रव च.भासा'नी
विश्व आत्मा चोन ज्योति स्फार
सर्वान्तर्यामि भाव आस. वा'नो कृपा०

३ या द्वादश अर्क. तेज़मान दीपिका
स्वप्रकाश गग़ सा चि.त्त प्रतिमा
सर्व तेजोमय श्री महारज्ञी कृपा०

४ दुर्गा अव्यय कर्ता अक्रिय
विश्वोत्तीर्णा विश्वरूप विश्वमय
स्वयंभो सर्वतः ज़य वा.णी कृपा०

५ परा पश्यन्ती वैखरी मध्यमा
चोरि पाद. एकांग शुद्ध विधा
अनुभव. मात्रा शिव मशिनी कृपा०

६ सम शुद्ध च़ तन निस्त्रैगुणी
सुर. गुरु. देव. देव चिन्मयी
क्या कर. निष्बुद्ध अस्तुत ब. चा'नि कृपा०

७ शुद्ध बोध थावतम विध सुज्ञान.य
सोऽहं शब्दार्थ विज्ञान.य
पूर्णाहंता स्वरूप आसवा'नी कृपा०

८ ब्रह्मार्पण एकांत ध्यत थावतं
अनुसंदावतं सत् चि़त्त ज्योत
सुज्ञान. विज्ञान. सिद्ध पर रा'नी कृपा०

अनुग्रह चोन बनि यस भाग्यवानस
सुय गछि सन्मुख चित्त मानस
गलि अद. अज्ञान मोह मद मान.य कृपा०

१० अनुग्रह. किञ असि अंधकार कासक
याञ ताञ भासक सर्वतोमुख
सर्व आत्मा पर ज्योत द्योन वा'नी कृपा०

११ आदन. म'ज्जिमय पर नाद. साधन
अन्य नादन हुंद छुम न. अभिलाश
वर चानि तर. कर. पर भक्ति चा'नी कृपा०

१२ भिक्षुक द्वार चोन चाव भिक्षाये
शिव निर्वाण.कि अभिप्राये
दित. दान व'ड दात. छक आसवा'नी कृपा०

१३ चानि शक्तिपात. वात. ब्रह्म. निर्वानस
परम–स्थानस कर. निवास
भक्तय्न छय मुक्तिदा दया चा'नि कृपा०

१४ क्षण. क्षण. चरणामृत चोन चम हा
शम.हा चान्यन पादन तल
शाप पाप शोक संताप कास बा'नी कृपा०

१५ सन्मुख सुज्ञान. अनुभव थावतं
हावतं सुविचार. भवसर. तार
प्राराण आश्रित आशि छुस चा'नी कृया०

१६ सूतक मृतक भय निवारतम
भव. सागर. मंज़. बो.ठ स्य खारतम
अ'त्यिन आर्च'र छक कासवा'नी कृपा०

१७ आनन्द मूर्ति अमृतेश्वरी
अमरावती सरस्वती
द्वंद. दोष कास्तं विंद्य वासिनी कृपा०
१८ हिंगुला ज्वाला मंगला काली
पिंगला त्रिपुरी ह्रीं कारी
राज राज़ेश्वरी पर. राज रा'नी कृपा०
कठिने भव.सर. मत. मंद.छावतं
प्रावनावतं परम. आनन्द. थान
१९ कृपा कटाक्ष. तार दिववा'नी कृपा०



श्री राज्ञी स्तोत्रम् ॥

१ स्मृतैर्वान्तर्गतं पुंसां हरन्तीं सकलं मलम् ।
जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां काम दायिनी ॥
२ त्रिजगन्मोहिनी ईड्ये मिहिरी भूत सद गुणे ।
नमोऽस्तुते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम् ॥
३ शेषाशष मुखागण्य गुणे गुण गण प्रिये नमो०
४ सुरासुर नर सिद्ध वन्दनीय पदाम्बुजे नमो०
५ चराचर जगत्सृष्टि स्थिति संहार कारिणी नमो०
७ भक्त कल्पलतेऽनल्प वाङ्माधुर्य जितामृते नमो०

७ ब्रह्म विष्णु महेशान वन्दिते गिरिनन्दिनि नमो०
८ भक्तानां भीम संसार पारावार प्रतारिणि नमो०
९ निर्गुणे निष्क्रये नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणि नमो०
१० राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत् ।
असंशयमशेषेण वशयेदखिलं जगत् ॥



(४६)

ग्य संतन हि्श न॰ छय शांती न शम दम।
च॰ छुक पानै ब॰ कुस छुस कास्तम भ्रम !!

१ दया सागर वनन छिय लूक सा'री
दयाये हुंदि समन्दर छिय च्य जा'री
दया हय म्य करक अथ क्या गछ़िय कम च०

२ म्य ज़न्मन हुंदि महा अपराध ह्रतम
दया करतम म्य मूर्खस लोल भरतम
प्रियम दिम पूर त्युथ दूर ह्ययि यम च०

३ फस्योमुत छुस ब॰ मंज़ संसार॰ ज़ालस
फक्त छम चा'न्य आशा अन्त॰ कालस
क'ड्डित निम ज़ाल॰ मंज़ बख्शुम परम शम च०

४ ब॰ कोताह् रोज़ यति आ'ख॰र मरुण छुम
कठिन संसारकिस सो दरस तरुण छुम
नितम मंज़ नावि प्रियमचि स्योद रटित नम च०

५ उपाया करस्य युथ मन रोज़ि निश्चल
मलिन बुद्ध छम गनेम.च् बनि निर्मल
करुम अंत: करण शुद्ध प्राव. उपरम च०

६ ब. छुस अंदर न्यबर छय्‌ोट खोट क्रिया छम
फकत बोठ खार. वञे चा'निय दया छम
गंगा ज़ल ह्यु व बनावुम श्रूच् उत्तम च०

७ शरीर प्यठ नज़र छम छुस ब. अतज़ान
यछ़न छुस मान मा'नित मांसुक पान
ज्ञानुक सिर्यि मंज मोह रा'च् बनतम च०

८ यशस ह्यथ छम विषय भोगन हंज़.य प्रय
दया करतम दया करतम च० छुक दय
पखांडस काम. क्रोधस नाश करतम च०

९ शर.चि शोरह् बने छम पाप प्य'च् सू.ति
कोहा हिश बडि छि खोचान अथ वुछित कू.ति
च्. हावुस ज्योति रूप अथ वो.थि जम जम च०

१० च्य छय द्र.य पननि कुञर.चि म्य द्रयि कास
च्य छय द्र.य पननि बजर.चि ज.म. जाँह भास
चित्तस घननम त. जन्मस जांह म. अनतम च०

११ कुनुय आ'सित च. नाना रूप. किञ द्राक
च्य ह्यु व गुणवान निस्त्रैगुण छु कुस ब्याक
कुनिय तत् पद. सू.ति शो.ज़रावतम ओंतम च०

१२ प'तिमि समये यमस निशि मो.कलावतम
च़ पानस ह्य़ व बनावुम मोक्ष दावम़
असा'व.नि मुख· फो.लनावुम म्य कोसम च़०

१३ छु सागर चानि कुअरुक सो.न स्यठा ज्यूठ
अ'नित दिम मो.खत नत· खारुन गछ्यं कू़ठ
ब·कथ सू·ति लाग हम किथ पा'ठि दिम दम च़०

१४ हवा ज़न बन बसंतुक अन च़. म्य बोश
फो·लन बुद्धि योग· बागस होश. किथ पोग
तिमन पोशन प्यठ़य छुक शांत शबनम च़०

१५ ब.ब.य करनुक म. थावुम कांह ख्याला
न भाष्य देह देह,चि चाला त. डाला
गल्यम आवागवन रोज़यम न· कांह गम च०

१६ जगत किथ दरिहे कुस कार करिहे
समय आधीन कुस ज़यविहे त. मरिहे
छु ठहरा'वित अ'मिस चाने सतुक थम च़०

१७ अगम अपार छुक रिर्गुण निराकार
म्य कुंछा यार कर भव·सागरस पार
क'रित सोरुय म्य थाव लोब निरालंभ च़०

१८ अविद्या कास्तम नित्त भास्तम सत
ज्ञान·च स्थित दितम सो·य छम परम· गत
अचि़त था'वित म्य पत मो·च़रावतं ओम् च़०

१६ च॰ सन्मुख रोज़तं अद॰ चाल सुख दुख
खस्यं बो॰ठ मो॰क्त सत् सागर दियम ग्रख
र॑ठित निक होश देह॰ मंज़ चे॑नि क्या चम च॰
२० स्वतन्त्र थाव म्य चे॑नुन शे॑लि ह्युव शम
स्वरूपस तेल॰व॰निस नशि॰॰ छा कम
प्रियम मस मेली यस कस गेलि आलम च॰
२२ पन॰नि करतूत वुछि वुछि छुस ब॰ आधीन
'कृष्ण' पननिस स्वरूपस मंज़ करुन लीन
करुस मन लय त॰ अद॰ नो॰न नेरि सोऽहम् च॰



(४७)

१ कलजुग नहीं करजुग है यह यहां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।
२ दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले।
३ मेवा खिलाओ मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफत ले।
४ कांटा किसी के मत लगा गो मिसलि गुल फूला है तू,
वह तेरे हक में तीर है किस बात पर भूला है तू।
५ मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुक्ता बेखबर किस बात पर भूल है तू।



(४८)

बिल्व पूज़ा कर निष्कल

कल· माला धर.स.य हर· कल· माला धर.स य
त्तय करि सान्यन पापन नाश करि सान्यन शापन
जय गंगा धर.स.य हर.स.य शंकरस.य
ओम् शिव· शिव· शिव· शंभो ।
ओम् हर· हर· हर· महादेव ॥

१ सुय छु अज़र सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर
तस छि ज़ानन योगेश्वर आश्चर्युक आश्चर
ज्ञान गाश अनि योग· नेत्रन वुछनावि आश्चरस.य त्तय०

२ त्याग· वैराग· चित· सोस्त थावि करनावि ब्रह्म· विचार
सतचे वति पक नांवित ज़ाननावि ब्रह्म.य सार
आत्मा· बोधुक ज़ल वुज़नावि ब्रह्म भावकिस सरस.य त्तय०

३ ह्यथ गछि देह· अभिमानस अज्ञानस गंडि लार
अच्युतचे स्थिरतायि सू.ति वत थावि ब्रह्म· आकार
तमि गुण ब्रह्मवित् साधन पादन अंछि जरस.य त्तय०

४ संसार यश भ्रम मांनित मन· किनि थावि उदास
योग· ज्ञान ध्यान· सो.स्त थावि बस्तियि मंज़ वनवास
चिन्मात्र ओत मुंचरावि मंज़ त्तण· मात्र.स य त्तय०

५ अंत काल चि ज़ाल कांसित चित्त थाव.नावि निष्कल
च़ दुन चंद्रम· काफूर ह्यु्ब मोख सुय हावि शीतल
सानि पालन.चि आज्ञा दियि अमयस त वर.स.य त्तय०

६ धर्म. ज़ोर दिथि तोर मुचरावनावि श्रद्धायि बर.स.य
ह्योर खारि चूरिमिस पोरस बसनावि शांति घर.स.य
कर्म. फलकुय बोर लो.चरावि देह् भ्रम किस खर.स.य नय०

७ सिर्यि ह्यु व प्रत्यक्ष भासित नित्य सन्मुख आ'सित
सतचे वति पकना'वित अज्ञान. गट. का'सित
आत्म. बोधुक दीप ज़'लि थाव.नावि मंज़ मरस.य नय०

८ बन. का'चाह् छय स्त्रियि पुत्र प्रिय अथ दपान माया ज़ाल
इथि ज़ाल. मंज़ डाल. दित कडि चट नावि मोह्. जंजाल
अतलास वलनावि सन्यास. व्'च् थावनावि मंज़ धर.स.य नय०

९ कर्म हीनस दुर्गत हरि द्रार्यद्रस करि नाश
पालना सा'ञ.य छस मटि गटि मंज़य अनि गाश
आर इयनस तारि "कृष्ण"स यथ भव. सागरस.य नय०



(४९)

वाक्य

वैकुण्ठ वासी श्री टिक काकजी

क्या सन गोम तत संवित् सुखस
बो वनै यो.दवै पो.ज़ वन.खय
भ्र'म रोवुक अ'मि रतन त. माज़न
अमि रत.चि त. माज़चि मो भर प्रय ॥१॥

भोग. बो.छरन छ़ल छांगरि कोर,नक
लांग.यं लोगुत आ'सित् राज़य।
प्रकाशमान पान पान. निश ख'टरोवुत
पान फ.ाट.नोवुत रत. त. माज़य।२।

आयस कदर नव ज़ोनुत दानय
शीन. मा़ञ्चि ज़न भान. व्य'गलित गव।
वांज़ वान. वनत. यो.द बद्ध क्या चाञ्चि
ज़ोनुथ नाव व्युत्थानय मैरव।३।

देह छुय आयुकिस आ'मिस पनस
अलोंद, करान छुक शुर्य माषे
यि को.रुम त. यि कर. सरिके म्यान्यर.
कव. लो.गुख वासनायि ज़ाल. वाल वाशे।४।

घर. घर. करान हर. हर मोठुयो
मर. मर. को.रुथ अमर पानय।
आस्थिर विषय वासना व्रत्त द्या'र.थ
मूढ. कोन. रूज़ य स्मरण दानय।५।

प'ज़ कल त्रा'वित पर कल प्रा'व.त
अ'छि गाश रा'वित सपनुक अन्ध।
विद्या सा'वित मोह वुज़ना'वित
दढ. संकल्पन क रथ वन्य सम्ध।६।

मूढव बूज़य सत.चि् पथा
पामरव ग्यवन चि कथा ज़न।
रात दोह रावरोवुय तिमव वृथा
शों.गि शों.गि बीठि म्य'चि् दथा ज़न।७।

स्यदखै स्यदिय सोरुय पानै
अथि इयि यि कैंह छुक छांडान ।
रावनै रावरुत गाह ज़न मानै
ज्ञान. उलसावतो यि अज्ञान ।
ज़ोर कव. बन्योक बोज़न.कि भ्रमय
ज़ानन.कि भ्रम. कव. रावरथ ज़ान ।



उँ नमस्त्रिपुर सुन्दर्य ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(पचंम - तरंग)

(५०)

प्रये चान्वे दयो नेरय।
ब. फेरय दरद. नयि हू हू॥

१ ह्यतन सू.तिन पनुन रहबर गछक को.त रठ च़ पननुय बर
न्यबर मो नेर च़ अछ़. अंदर दिलुक दिलबर छु सोऽहं सो प्रये०

२ च. अछ़. अन्दर पनुन वुछ ओल च़ पानै छुक घरुक घर वोल
ग्रटै फेरान महीन नेरान ब ज़ोर आब सोऽहंसो प्रये०

३ छय गफलत गट गाशस ठो.र तमिय गाशे घ'रित छुय मो.र
शबस खसान दोहस वसान शब.य सेज़ान छु सोऽहंसो प्रये०

४ छुखै रिंदान. कतरस प्यठ छु कतरै कुलि द'रियाव च्यथ
छ द'रियाव. दुर्रि अरफानै गुहान पानै छु सोऽहं स प्रये०

५ रब.य छुय सब सब.य छु'य रुब सपन रिंदान. बाज़ानै
छुहा'सिल बा सफा वा'सिल छु हा'सिल आशकै हो हो प्रये०

६ हुवल अवल हुवल आखिर हुवल ज़ाहिर हुवल बातिन
हुवेदा शाहि शाहानै वज़ान पानै छु सोऽहं सो प्रये०

७ अथव पनन्यव ल्यूखुम नामे "मकुंद रामै" पनुन अवहाल
यि कँह वव्याम. ती जामै स्य अरामै छ सोऽहंसो प्रये०

(५१)

रामन सिद्ध क'र म्या'ञ मन. कामन
दामन रटस नित प्रभातन त. शामन।

१ महागणेशन ऋषि सिद्धि नाथन
नादन म्यान्यन यलि थोवुम कन
प्रज़ल्योम त्यलि गटि मंज़ सिर्यि हि.यू शुद्ध मन दामन०

२ लूक. सरयि मज़ सरि गरदान ओसुस
वृ'च़ लूकन निश हर्षिदेव गोमुत
ओसुस भक्त मो कुल लो .गमुत वो.लामन दामन०

३ शिव शक्ति पोश फो.लि ज़ीवन मुक्ती
फल. द्रास अभिन्न अर्थ रस नाश. रुस्तुय
केवल हृदयस निष्कल जामन दामन०

४ भक्ति भूमिकायि गुरु युक्ति बीज़ वो.वुम
वेद. थलि मंज़ सांख्य. सग स'गरोवुम
सिद्धांत. सोंतन त्य'लि क'डिस बामन दामन०

५ शांती सीतायि मल गो.ल भूमिकायि
हसो सोऽहं च़रणन च़र्यायि
नित लो.गमुत अमित ठीकित लक्ष्मन दामन०

६ द्रोपदी का'ली पाप जाय खा'ली
करम,चि कुरुक्षेत्र शुद्ध य'च़ काली
कृष्ण.अ बहाली य'छ़ बलरामन दामन०

७ अर्ज़ुनस सुदर्शन· मुक्ती सा'पुत्र
गोतायि नित्त गावान गीत कृष्ण·नि
सो·य कल य'छ्म·च् निष्कल सुदामन दामन०

८ राज़· हंस सुंद साय प्यव मन· मथुरायि
वासुदेवन त· यो·छ् देवकी मातायि
सो·य जाय मन्जूर क'र आरामन दासन०

९ व्यासन वास को·र शुक· स'दि भागे
भागवत् ग्यो·व त'मि श्रीकृष्ण· रागे
ज़ागि कोन, जिज्ञास पय पैगामन दामन०

१० नारदन नारायणस यी ओस मों·गमुत
साम वेद कृष्णुन रा·स मंज़ बूज़मुत
प्रय भ'रनस अक्रिय 'हलधर रामन' दामन०



(५२)

लयि दारि त्रो·परित सपद मावरयो ।
हर· ज़ीव· पर·यो सोऽहंसो ॥
१ मन सर· तन नाव· यछ् पज़ भरयो
प्राण· चूर् हाविय गटि मंज़ गाश
इन्द्रिय शो·मरित आनन्द भरयो हर०

२ गारस अ'चि़थ.य वनवास भरयो
अथि च्यय इययो सोऽहंसो
सासा म'लित हय हंसो परयो हर०

३ गोकुल ग'छि. हय तवकल करयो
अथि च्यय इययो गाशो हो
शम सो वा'तित हम् सो परयो हर०

४ ओमुके रस. सू ति दिन त. रात भरयो
च.य गोस ब.य तय ब.य गोस च.य
वर्षण. तमिके दर्शन ब. करयो हर०

५ भूट. संसारस दोह तार भरयो
ताशोक छुम म्य चोन माशोको
आशक ला'गित च्यय पत. मरयो हर०

६ ह नस क्याह ताव हा ब. क्या करयो
रा'वित अथि इख 'लस-शाहो'
हर गुण बूज़ित सत नाव सो.रयो हर०



(५३)

अर्पा'य यर्पा'य चो.पा'य पानस।
ब. पा'यं लगस नाये लो लो॥

१ शाह फेरि पानँ शाह नत. कॅमि खा'यँ
ब्याज़.चि गयस त्राये लो लो
ज़ीनित छु बापा'र्य हा'रित गव ज़ा'र्य ब०

२ सुलभ तिमन.य इमव. तिम गा'यँ
नत. छा अंदन न्याये लो लो
दयि ला'नि व'ञम.च् न.ज़ि मं'ज़िमि या'र्य ब०

३ सु दपि पानँ मा खसनम बा'यँ
व. दप. गयि लायि लाये लो लो
रूद क्या मूद क्या नुकसान कॅमि चा़र्य ब०

४ कालन ज़िथुर्य मा' ग'यम.ति मा खा'र्य
इम ख्य'लि कत्यू द्राये लो लो
पुज्य मा र'छि चौपा'नि या ता'य चमा'र्य ब०

५ वाति मा दादस सु सा'द मका'र्य
दायि अकि चलिहम वाये लो ल
दो.पनम च. बलक चांलखय वेमा'र्य ब०

६ मरिन. कूंछा बलन इम सा'र्य
मो थाव वों.दस ग्राये लो ल
'परमानन्द' ह्यथ छु सा'र.य तया'र्य ब०



(५४)

भेद. दष्टि सा'ञ हार पर्नानि कुञर.चि द्र.य च्य छै ।

१ सत. मुख. अवतार धार मो.ह अमुक दैत्य मार
भव.सागरस कर म्य पार पननी०

२ चारिरस मंज़ पांच दोह इन. त. गछनं दित म्य छ़ोह
युथ न. अस्थिर. ज़ान सार पननी०

३ नश.स.य मंज़ बुद्ध न'शित युन गछुन गछयं म.शित
कर नावुम सत् विचार पननी०

४ ध्यान शम् दम् धर्म दान तप ज़प ह्यथ योग ज्ञान
कर दया कें छा म्य यार पननी०

५ मूर्ख.बोज सू.ति रात दोह छिम समेम.ति पाप. कोह
शोरस.य ज़न गंडत. नार पननी०

६ इयतनै वो.त्र म्योन आर वुछत. म्योनुय ठग. कार
अनुग्रहकिय लदत. द्वार पननि०

७ आसि यो.दवै गाट. खार क.नोन इयस न. हार
दिम ज्ञानुक गाट.जार पननि०

८ छुस ब. मदुक खान.दार सा'यँ छिम गर्ज़ंकि म्य यार
कर.नाव निष्काम. कार पनिन०

९ छुस ऋृणन हुंद कर्ज़दार मत. थावतं पत. लार
लो.चरावतं कर्म भार पननि०

१० नाव छुय संसार. सार भव.सरस दिम म्य तार
पत. नितम शोभिदार पननि०

११ त्रा'वित गोम लो.कचार यावन् ओस अंधकार
रछ बुडिस छुस नाबकार पननि॰

प्यव म्य कर्मुक कुल छ'नित चो.ल म्य चित्त बुलबुल वुछित
हाव नो.न योगुक बहार पननि॰

१३ खो.ट छु म्योनुय व्यवहार त्रावनस अत छुम न. वार
थव म्य निर्मल निर्विकार पननि॰

१४ 'कृष्ण' करनाव सत विचार थो.द छु चोनुय मोक्ष द्वार
ज़न नभस कुन रेह म्य खार पननि॰



(५५)

संकट कट अथ रठ दयालै।
चट् सोन माया ज़ाल॥

१ वो.लमुत छुम अमर अकालै भ्रम. काल. सर्पन नाल
मो.कलाव चलन काल.ञि ज़ालै चट॰

२ ताप रुस्त तर. फो.जि संगरमालै खसनस छुम बो.ड बाल
निष्बुद्ध वृद्ध छुस दिम कल छालै चट॰

३ शक्ति पात सू.तिभिक्षुकस कृपालै दात. बन. छुस कंगाल
ज़ीठिस मज़िलस वात कमि हालै चट॰

४ अख अ'छि नाठा करत श्याम लालै अशि सू.ति भ.रिथय छि लाल
ना'लि छुनहोह् भक्ति भाव मु.क्त मालै चट॰

५ नेर.हा मंज़ घरिके जजालै टोठ छुम अन्न धन माल
तत मंज़ थावत त्याग. ख्यालै चट॰

६ हाव. का'चाह् देह. श्रमचिय चालै का'लि मा मुख हावि ल
सूक्ष्म स्थूल म्योन रछ त्याग. संभालै चट॰

७ अन्नजल असि सान भोग इत. सालै भरनाव अनुग्रह थाल
आत्मा तृप्ती दिम बो.छि क.च चालै चट॰

८ असि कर्म. हीनन दीन. दयाल काम क्रोध लोभ मद गाल
दुख हार गगनस खार पातालै चट॰

९ का'त्याह् बलवीर समयिकि हालै स.ह् आ'सित गयि शाल
राज़न नाव प्यव खरि दज़ालै चट॰

१० पुन्यवान थव शांतियि व्रत पालै स्योद कर हो.ल कपाल
नत. कर्म. लेखा क्यथ. पा'ठि डालै चट॰

११ या'र ह्यु सब्ज़ कर मृत. हर्द कालै पशु भाव.चि लशि ज़ाल
मो.क्त बनाव त्राव अषत्रे चालै चट॰

१२ प्रेम.चि जमुना व'छ नाल. नालै ज़न छुस माला माल
तन नाव गोपियि ह्यथ गोपालै चट॰

१४ ज्ञान मुख हाव त्राव मलालै स्य म. बनाव गो.फ शाल
स्फूर्तियि सीमिञ म'शराव छालै चट॰

१४ फीर्य फीर्य क़्या वाति ब्रज बंगालै ह्यथ काशी नैपाल
मुख हाव पननि देश. प्यठ बंगालैं चट॰

१५ प्रवृ'च् मज्ञ निष्कल. कल वालै निवृ'च् नश. दित डाल
'कृष्णास' मोक्ष मस चाव प्याल. प्यालै चट॰



(५६)

अज़ सा'ञ विनती सत्गुर साधय., कुनिय नादै बोज़ ।

१ रातस गं'ज़र्यम नभ.चे तारय
कृष्ण. चं'द्र. इत प्रारै कृत
श्याम. रूप. सुबह फो.ल इन डलि वादै कुनिय॰

२ विज्ञान. रव. चूरिमि पद्म पादं
चि्त्त बबूर सोन व्यूर ह्यन द्राव
गीत ग्यत्रि चानि सत्संग. संवादै कुनिय॰

३ मायातीत अंत रस्ति अनादै
कुस अखा चा'निस अन्तस वोल
हे अगम अपार. आद्यकि आदै कुनिय॰

४ मंज चावि माया सागर. उत्पत्त
छिय गछान ब्रह्मांड बुद्बुद वत्
अवतार कारण देव अगाधै कुनिय॰

५ चित्त अबलक चो.ल को.त पक. प्यादै
स्यज़ि वति को.छि क्यत रुन पकनाव
छुस पथर प्योमुत करुम इस्तादै कुनिय०

६ उन्मत्त भूता छुय ज़गत गोमुत
तथ मंज़ प्योमुत छुय ब. अनज़ान
सु विचारस वात. चानि प्रसादै कुनिय०

७ पानै सोरुय छुक उपदावन
कल. गिलनावन बु.ति छुस कांह
पो.त ह्यत. हथि भ्रमके अपराधै कुनिय०

८ मेघ, वर्ण. रछत. व्यवहार.चि त्रटि मंज़
गहस्त गठि मंज़ नो.न हाव गाश
अमृत चाव प्रेम. शब्द. अह्लादै कुनिय०

९ म्याञि भक्ति भावनायि हु दि प्रह्लादै
सवॆ आत्मा भाव सम दृष्ट प्राव
सुख दुख सम ज़ान मंज़ कम ज्यादै कुनिय०

१० बुद्धि योग. होश. गछि. ज़ीव. भाव मशनुय
वशनुय अद. चलि दोन आलमन
इथि मशन.कि नत. याद.कि यादै कुनिय०

११ अनुग्रह. चानि सू.ति भोग ब्रोंठ. इयतन
'कृष्णस' प्ययतन भोग.नि तिम
एक. रस. ह्यस दिस ताल. किस्वादै कुनिय०

छुक मोक्ष दाता पान· च·य केवल सतक विचार दिम।
यी गछि़ आसुन ती म्य दिम योगुक ज्ञानुक सार दिम॥

१ सन्मुख इतं सोरुय नितम द्यु तमुत यि छुय फीरित ह्यतम
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती हुंदुय दरबार दिम०

२ मस्ती होशस ह्यत मंगय मत· नचनावतं दित वंगय
भक्ती कोंगय जामय रंगय सुय रंग·नुक विस्तार दिम०

३ मोह किस ज़िनिस दज़ुन स्वभाव च य ज्ञान· रूपी अग्न हाव
भक्ती हंज़य रेह प्रज़लाव अज्ञान· शोरस नार दिम०

४ ममतायि लंका ज़ालतम भावुक विभीषण पालतं
श्रीराम· मोह मद गालतं यथ भवसरस तार दिम०

५ भक्ती त· मुक्ती शं भि च्यय मन क्याज़ि तत प्यठ लोभि न्यं
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती म्य बारम्बार दिम०

६ छुक भेद रुस्त शिव कृष्ण राम आसन कंरित प्यठ परम· दाम
प्रारान छुसै च्यय निश इनस जल्दी म्य वो·न्र आंकार दिम०

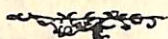
७ मिथ्या पदार्थ क्या मंगय तिम भोगि वो·न्र आसै टंगय
शांत गछ़ अद सू·ति सत् संगय इछ़ि भछि़्च हुंद आचार दिम०

८ वांसा गयम मिथ्या वनन क्रय करन· रुस्त छा केंह बनन
छुस लोभ· फल पेहनस अनन वो·न्र ग्रट·चिय अनवार दिम०

९ करुणावतारस च्यय सो·रित तारुम म्य तारस थप कंरित
पारस बनावुम शंस्त· स्स नारस कंरित गुलज़ार दिम०

१० छुय क्या ष्य चारुन छो.त कुहुन छुम मज प्रत भोगस च हुन
छुम ग्ररसरव रुस्तुय बिहुन शुमरित ष्य इन्द्रिय द्वार दिम०

११ काया छय ष्या'त्रि द्वारिका च.य छुक 'कृष्ण' परमात्मा
मंगन सुदामा छुस भिक्षा सर्वं ऐश्वरी यकबार दिम०



(५८)

राधे श्याम हरि कृष्ण अरे प्रभु गोपाल ।
गोपीनाथ मक्खन चोर मदन मोहन लाल ।।

१ मेरा मन है जमुना जी वृत्तियां गोप ग्वाल
वह है प्रेम अमृत रूपी जल से माला माल
उसमें नहाओ खेल बयाओ बालकपन की चाल गोपी०

२ देह भ्रमरूपी शेर को है मद से आंखें लाल
उसको पकडो खेंचो बांधो मारो उतारो खाल
इस सिह आसन के ऊपर अपना आसन डाल गोपी०

३ हम तुम पर अर्पन करते हैं तन मन अन्न धन माल
सब प्राणों से तुम प्यारा हो न्यारा हो अकाल
हमको मोह से मद भ्रम से दुख से गम से टाल गोपी०

४ क्या करे हमको मथुरा काशी गोकुल ब्रज नैपाल
साडी चित्त नगरी में बसिया तुम हो दीन दयाल
भगतों का तुम पालन वाला तीनों जगत का पाल गोपी०

५ हम गृहस्थ में फँस गये हैं काटो माया जाल
फकत तुम्हारा आसरा है देख हमारा हाल
कृष्ण को शुभ दर्शन देवो लेवो अपने नाल गोपी०



(५१)

वाक्य

प्राण· स्मरणीय स्व० श्री टिककाक जी ॥

(१)

इन्द्रिय द्वार ज़ानुन ज़ा'नित सुज्ञान
विज्ञान मोनुत प्रकृत लय ।
ज़ा'नी ज़ान परज़ान परमात्म·य
तव· ज़ानन सपनक देव तन्मय ॥

(२)

वनखय केंह वन छो·पि हु'दि मुखय
चोज़खय केंह, पो'ज़ त्रो वरित कन
इच्छखय पूर्ण हृदय सुखय
कर्म कर केंह ब'नित निश्चल मन ॥

(३)

केंचव वो·नुय वुछुन केंछाह
वुछव·न्यव केंचव केंछाह न· ।
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस
कारण कुनि केंह रेंछाह न ॥

कैंच़व सोनुय केंह क्या वुछ़नुय
वुछव न्यव वुछुन कैंचव मोन।
केंह केंह कैंच़व अनुसंधोनुध
कैंच़व बाह्य ज़ा'न्य ज़ा'न्य प्रज़ोन॥

(५)

युसुय बाह्य स्फारस प्रावे
अन्तर्मुख सुय उलसावे।
सन्मुख भावै सुय शिव मुख हावे
एकाकी शक्त दो'यि मुख छ़य॥

(६)

पोज़ प'ज़राव पज़ि पो. ज़निश अनुभाव
प'ज़ि ज्यायिव पज्युक रुछ़ भाव।
पचनूय पालुन अपुज़ गालुन
अपुज़ भ्रम पोज़ ब्रह्म. स्वभाव

(७)

पज्यव कनव इमव बूज़ुव पो.ज़
पज़रुक निनय पोज़ तत्वन।
क्षण क्षण सत अमि किञ्च नित्य स्य'ज़रुक
रज़नी दिने शो.मरित मन

(८)

प'ज़िस प्यठ यस यछ़ पछ़ आसिय
पज़ि पुछ़ि राव.रि न्य'न्दर त. नेह।
पो ज़ बोज़न रस. मस च्ययि खा'सिय
पज़ि विना मास्य. न. तस कुनि केंह॥

(६)

भय. निशि रछि रव जन गाह छ़टे
छटे मजय ज़्येठे गाश ।
भैरव भक्तयन रछि मंज त्रटे
छटि गटि प्रकटावि स्वप्रकाश ॥



(६०)

ज़ाक नन्द. गोरिनि अक. नन्दनै ।
आक ज़गि कास.नि मोह. अँधकार ॥

१ यादव कुलके कुल दीप - कै
लोल. चानी शोलवन. आव संसार
व.ल. सोन अज़ छै पोश. पूज्ये आक०

२ लो.लकि मंज़ले लो.लि लो.लि करहै
मो.लि ह्यमहत छिम न. मुखत त. बार
मुक्त गछ़हा चानि शुभ. दर्शनै आक०

३ ज़्यो.न चोन ज़गि मंज सिर्यि उदये
नत. जन ज़गि मंज प्राण आधार
लगहाय नावस रघु नन्दनै आक०

साक्षात्कार चोनुय अवतार.य
चार. स्योन भव.सर. लगिहं तार
'परमानन्दने' कृष्ण. गन्धरै आक०

(६१)

कस क्या छ ज़ेनुन यमि ससा'री ।
सा'रिय गयि हा'र्य हा'रिये ॥

१ को.त गयि बब त' मा'जि भा'य बंध त. या'री
अक अ'किस तिमन. कांसि कांसि प्रारिये
ता'र ल'जिन. तस यस यलि वा'च़ वा'री सा'रिय०

२ यमि देह. पुछि़ क'र म्य जान निसा'री
बायिन प्यठ खा'र्य बा'रिये
कुनि विज़ि दज़ि पत. चित्तायि ना'री सा'रिय०

३ कैंचन गुर्य 'स्ति रथ सवा'री
कैंह न्यथ.ननि त. नन.वा'रिये
वुछि वुछि बुछि इम काल. शहमा'री सा'रिय०

४ नाम. रूप. जंगलस कर्म. कुलि बा'री
विगि विगि गयि उजा'रिये
उत्पन्न भ्यो.न म्यो.न उत्पात सा'री रिय०

५ वासनायि ब्योल ब्ययि न'वि नोव खारी
भो.वि भो.वि बारंबा'रिये
व'वि व'वि लोनुन हरद. त. हा'री सा'रिय०

६ ज़गत अरहटस देह तोल. वा'री
कर्म. रज़न.य चा'र्य चा'रिये
छ़रि लट. लट छक पोञ सा'यो सा'री सा'रिय०

७ मनुष्य मोर प्रा'वित देव हितका.री
यथ मंज़ सर्व आधि का'रिये
गछि न रावरुन छु दुर्लभ त. दुश्वा'री सा'रिय०

८ छ्यन. गोमुत पान परम. सुख. धा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख मा'रिये
मोह. भ्रम. राज़. आ'सित बेचा'री सा:रिय०

९ व्यथि कोच् मो.कलन य'मि अँधका'री
सत् सिर्यिकि चमका'रिये
चलनस न्याय बलनस बेमा'री सा'रिय०

१० योद कां'सि मुच्रन बरञन ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
चा़रनस त. खारनस लगि विचा'री सा'रिय०

११ भक्ति श्रवणन बोजि कन धाये' धा'री
प्रेम नेत्रव अ.ष तार्य ता'रिये
साधन गुरुन लग्य पादन पा'री सा'रिय०

१२ वणस तत्व उपदेश उपका'री
करनस पारं पा'रिये
वे इख्तियार द बनि बा इख्तिया'री सा'रिय०

१३ "लक्ष्मण" परम आनन्द चोपा'री
साक्षी छु साक्षात् का'रिये
पानै पानस करि उद्धा'री सा'रिय०

(६२)

कामि यम. भय चोन प्रेयम त. लो लो।
ज्यो, न मरुन त. युन गछुन छु भ्रम त. लो लो।

१ नित्य नियम. युस ज़ि करनस लगि भक्ति चा'ञ
मन तुरगस. ह्ययकि र'टित वगि भक्ति चा'ञ
पय सहजुक दियि रगि रगि भक्ति चा'ञ
अनुभव भी.वि अनुग्रह अगम त. लो लो ज़्यो न०

२ पत. लारनस अष्ट. स्यज स्यो.ध वुछ्यक न. जांह
असि सार्यन.य सु गोमुत प्रो.द वुछ्यक न. ज़ांह
तस विन युस छु सायिन.य थो.द वछ्यक न. ज़ांह
शांत एकांत प्रावि शम दम त. लो लो ज़्यो.न०

३ केंह ति रोजिन. ज़ानुन न अज़ानुन तस
स्वाद. अस्वाद. निशि कोंछ़ाह स्यो.न न. नुन तस
केंह खटनस लायक त. नो.न वनुन तस
सुख दुख क्या अ'थि दी.पुक सम त. लो लो ज़्यो.न०

४ दिज़ि देहस नज़ि पज़ि अमृत फल
दिस प्रथक तै प्रथम.य दपुस मृत फल
कान नेरि क्या निर्णय कानय फल
मो.क्त. पलज़्या ता'यंज़्यस न त्रम त. लो लो ज़्यो.न०

५ गाल हन हन कालुन त्रास म'शराव
ज़ाल मर. मर. सोर वस्वास म'शराव
वर्ण. आश्रम कृत त. सन्यास म'शराव
बोध पनुनय छु सूद सोऽहं त. लो लो ज़्यो.न०

६ वेद पुराण शास्त्र य'च प'र्य प'र्य
कर्म क'र्यज़्यन. अभिमान. स'च़ क'र्य क'र्य
मश'न युस बुज़ बूज़ि बूज़ि य'च सोर्य सोर्य
ता'र छुन. तस तार. तारि ओम् त. लो लो ज्यो.न०

७ य'लि तेलिय अं'दरिमि लोलुक स्रेह
त्यलि मेलिय पानस ह्य'व लूक. स्रेह
खेलि अन्तर् बहिर् बुक. बुक स्रेह
छुन. परवाय गेलि आलम त. लो लो ज्यो.न०

८ कथ. करनस त. मरणस छुन. हिशर
मानि बोज़नस म परनस छुन । हिशर
ध्यान सो.रनस त. शरणस छुन. हिशर
च़मि तस युस बनि छय्य. च़मि त. लो लो ज्यो.न०

९ 'परमानन्द'' परम. आनन्द प्रा'वित
प्रावि नो.व नो.व सांग नोव जंद. प्रा'वित
नावि तरि अथ. छोत्ररुक चन्द. प्रा'वित
रुजिज़्यन. कुनि नजि दिजि तम त. लो लो ज्यो.न०



(६३)

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल ।
ज्ञान कुय लाग अ'छि म्य अंजन अज्ञान कुय पोह म्य गाल ॥

१ भवसरै फो.टमुतुय छुस मोह मायायि वो.ल म्य नाल
छुस न. ज़ानान बोठ ख'सित वोञ्च अथ, रोट करतम दयाल०

२ सत असत् विचार छुम न काम. य'न्दिलि छिम पतै
असत.चि हाँ'कल म्य चटतम हावतं सतचिय वथ.य०

३ काम क्रोधन लोभ मोहन छुस ब. को.रमुत ज़ेरबार
भवसागर दुख घर, मंज़ अथ. रो.ट करतम दयाल०

४ दीन वत्सल रछ पद्यन तल आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव. किञ्च शांती म्य बनिहे वैर. भावस गछि अभाव



(६४)

ज़न्मस इथ यति कैंह छुन'. लारुन।
धारणायि धारुन गोविंद गो॥

१ अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन
नित्य नियम. स्मरणि वायुन ह्यू
धैर्य.चि यट.फोरि दत, फुटरावुन धारणायि०

२ युस करि स्वमन. दारुन त. प्रारुन
ती छुस लारुन संसारस
तव. खो.त. रुत छुय परउपकारुन धरणायि०

३ धन. द्यार अथे इथ म'शरावुन
कर्म.चि वति प्यठ धर्मस द्यू
य'ति नो प्रोनुय फो.त छुय लारुन धारणायि०

४ दांद-हूर न्य'न्दरे सुलि वुज़नावुन
कल करनावुन सोऽहं सो
"लल द्यद" गुरु ह्यत स्वरूप वुछनावुन धारणायि०

ओं

श्री शारिका लीला-लहरी

(षष्ट - तरंग)

(६५)

ललवान सिरि हक ज़ेरि ज़ेरि ह्यरि बो.न
छम वज़ान ज़ीर बम तार

ह्यसक्य मयखान. मस य'लि ब. चोवनस
भोवनम सिरि असरार

आलव तोरै गोक द'रियाव दाम. चोक
शौकन को.रुक मिलचार

सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय ठान

गाह गट. गाश गाह प्रकाश नूरान
यक्सान सोरि समान

रंग. रंग. बेरंग सूरत सो. मूरत
न'ञ द्रायि दर बाज़ार

गगनयि पवनयि नागनयि भागनयि
सत नयि ब्ययि नवद्वार

सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि
मो.लवान ह्यथ खरीदार

पनतुय ह्यो.न द्युय पनतुय बाज़ार
पानै ग्राक त. सौदागार

हरद. सोंत. कुन्नरस वोंत कुनि लो.भमस न.
दरद. नयि फयूर शेहजार

सत परद. चटिथ.य हूर द्रायि वनवान
पोशन क'रिक तूमार

ग्रक ल'जि सो.दरस दरवाज खुल. गयि
अनुग्रह द्युतुक अंबार

कंद पुरी ज़ूनं. डवि शश त. रव सा'विथ
ना'वित अंदरिमि तों दर प्राण

गटि मंज़ "भास्कर" सास भासना'वित
सुय प्रावि शांत आकार



(६६)

सुन्दरो सो.न. संदल गरय. हो हो करै श्याम. सुन्दरै ।

१ गोपिय प्रारान गोकुलै वेरि चाञ्चि फेरान निर्मलै
खेलव त. मेलव अमरै हो०

२ जसोधा वुछतोन भाग्यवान टोठेय यस इम ज़ संतान
बलभद्र ब. व्ययि कृष्ण. गंदरै हो०

३ अ'तरे पलंग पा'रावयो पा'टिय कर.छ वथ.रावयो
अंज़.लि दर्शन मो क्त. हो जरै हो०

४ गलि गलि दो.ध ब्रो चावथो फलि फलि नाबंद ख्यावथो
बादाम कंद चंद हो सरै हो

५ आसान छुक कैलास कोह मासान छुक यति रात त. दोह
हरसुख. क्यय गंगा धरै हो०

६ ना'लि माल. खा'लि कनवा'ली रंग. रंग. जाम ज़रका'री
शीतल स्वभाव पीतांबरै हो०



(६७)

करुम म्य हे प्रभो ! मंगल वरुम चरणार्बिन्दन तल ॥

१ शरण आसै ब. दयि नावस च. टोठ्योक शरणय भावस
गंडित छुस भक्ती हुंद अंज़ल वरुम०

२ वुज़ान छुम चानि प्रेमुक त्रेह करुम अनुभव म्य नो.न अनुग्रह
गछ़्यं युथ वासना निर्मल वरुम०

३ दि म्य शक्ति पातकुय प्रसाद वुछ.न छुस कोन. चानिय पाद
तवै छुस चित्त गोमुत चंचल वरुम०

४ छु, चोनुय आसनुय सन्मुख छ.यनन दुख प्राव निर्भय सुख
म्य सो.य भक्ती गयम सुफल वरुम०

५ छो.चर छुम ओसमुत कर्मुक यि बाह्मण ज़न्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अनज़ल वरुम०

६ वुछ़स पुनर् आवृती कालन फसोवमुत वासना ज़ालन
म्य कास अविद्यायि हंज़ गांगल वरुम०

७ गछ़्यं सःज्ञान त्युथ उपदुन इयम युथ दृष्टि मंज़ दो.न कुन
छ़् सोऽहं नाव युथ केवल वरुम०

८ म्य रोज़ुन गंछि न रज तय तम बनुन तत् सत् गो.छ़ुस उत्तम
छ़सै स्वभाव. किनि शीतल वरुम०

९ दया हंज़ दृष्टि कुञ्च केवल करुम अतर् बहिर् निर्मल,
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल वरुम०

१० दितम विकार. अग़नुक बल दजन कामादिक,कि जंगल
वुछ़न स्वप्रकाशचिय वुज़मल वरुम०

११ हे केशव.! केशव अर्पणै सदा निर्मल सुदर्शनै
म्य फो.लनाव द्वादशांत मंडल वरुम०



(६८)

भगवान. तमि काल. कर म्य अनुग्रह
य'मि काल. प्राणांत आसि म्य ।

चानि अनुग्रह रुस्त ईश्वर कर्म न्याय कुस कासि म्य ।

१ सा.यं त्रा'वित रो.ट म्य दामन चोन. कामन सिद्ध म्य कर
सा'य बंध संतान नारी इम छि अस्थिर छ़ुख च. स्थिर
नाव चोन लयि लछ़ करोर.य दिम पनुन.भक्ति भाव म्य०

२ बाल॰ भाव॰ किन्न ग्युंद म्य हारण ग्राव॰ वोन्न बो॰ कस करै
वक्ति सखती छुमन॰ कांह॰ छुस तारि गोमुत शशन्दरै
छुम म्य तकसीर पानस॰य चा'न्न नाम॰ स्मरण क'र न॰ म्य

३ कर्म फल किन्न लोक॰चारस रंग॰ र'ग भूगिम विषाद
यावनस मुतवाल॰ सांपनुस काल॰ भय॰ रूदुम न॰ याद
बुज़रस मंज अंत कालुक छुम स्यठाह् वसवास म्य॰

४ राज़ होंज़ाह् ज़ाल॰ लोगनस कठिनिय कर्मय फलन
ज़ांह् क'रम न॰ राम स्मरण, साधु सेवन हरि भजन
लाभ अथि इथ रावरोवुम सुय खो॰तुम अपराध म्य

५ अंतः करणन ज़न्म॰ ज़न्मन हु'द म्य सार्योमुत छु मल
आदि दैवक आदि भौतिकि आध्यात्मिक कर्म॰ फल
कर दया पनन्निय प्रभो ! विचा़र॰ मन शुज़रावत॰ म्य॰

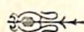
६ ईर॰ गोस भव सागरस मंज़ धैर॰ भाव रूदुम न॰ केंह्
गोपाल चा'न्निय छम म्य आशा पान म्योन मटि छुय हा च्य
म्योन रुत क्रुत छुय च्य रौशन थफ क'रित बो ठ खार म्य॰

७ अंत समयस टा'ठि छि खोचा़न अक अ'किस पत कुन चलान
पान॰वा'न्न अक अ'किस वनान वुछत वुन्नि छुस शाह् खसान
वुछत॰ भ्रम बा'ज़िगार यि संसार सोंह तिमन रोज़ान न॰ केंह्॰

८ हे प्रभो ! बोज़तं म्य ज़ारी सर्व ख्वा'री कास्तम
वक्ति पोरी दस्त गीरी कर प्रभो ! चा'न्न आश छम
छुस पथर प्योमुत म्य थर॰ छम करत॰ गम॰ मंज़ शाद म्य॰

९ निर् अर्थ आत्मा को.रुम हाय वो.ज ब. कोताह छुस पशन
पत. नार छुम. ब्रोठ छंब्र आमुत त. चामुत छुस गशन
कर दया पननिय प्रभो ! छम चा'ज वाराह आश म्य०

१० छुख क्या दया सागर करतम शरण बो आस न्यय
विष्णार्पण करत. म्यान्यन सा.यँनय पापन चं. क्षय
अत कालस हाव म्य दर्शन सर्व संकट कास म्य०



(६९)

१ भक्त वत्सल. मोनुक म्यानि मन.न.य ।
शक्ति नाथ. गडयो मन.नय माल ।।

२ बूज़ि बूज़ि श्रवणय त. क'र्य क'र्य मनन.य
निधि ध्यासन ज्ञान. दीप प्रज़लाव
साक्षात्कार छुक शिव. रूप ननन.य शक्ति०

३ अधिकार द्युतमुत छुय सत जनन.य
मंज छिय अंद ह्यत माया ज़ाल
निर्गुण. लगयो इथिन.य गुणन.य शक्ति०

४ भीषण. इम मुख च्यय कुन अन.न.य
तिमन.य आय मंगि काल य'चकाल
तिहं.ज़ि अ'छि नाटि मंज़ कल्पांत बननय शक्ति०

५ चित्त आकाश. हाव निथ मुख पननुय
छारनस लो.गमुत छुस ब. पाताल
ओन छुस खो.नवट. खोड छुस खनन.य शक्ति॰

६ युथ छुक त. त्यथ छुक क्युथ छुक ननन.य
सुय ज़ानि यस बनि युथ ह्यव हाल
वान दित छु नोन वुछि वुछि ओन बनन.य शक्ति॰

७ देह अभिमानुक कुल ह्यथि छन.नुय
तीव्र वैरागुक सूराह् वाल
शिव. रूप. ती बनि ई प'हि पनन.य शक्ति॰

८ लोल. आलव अ'श फयोर भा'न्स कनन.य
चान्यन गछि ना, तर छिम लाल
सुय मुखत बनिहस यत छि मुखत वन.नय शक्ति॰

९ पज़ि भाव. पान प्रमाण नाव पननुय
शाह् पूर वर्ताव अथि ह्यत माल
मज़ बाज़रस वान लो.द निर्धनन.य शक्ति॰

१० ह्यलि ह्यलि लावि लावि भावि भावि गो.निन.य
कुज र.कि खल. फल. व'छ मुखत. हाल
गाटस गाट. प्यव ह.रिरस छु छो.नन.य शक्ति॰

११ नियम.च्यन ना'र्यज़्यन यम.कयन यन.न.य
समदृष्ट. जल फयुर माला माल
निष्काम. कर्म. भूमि कल्पवृक्ष बनन.य शक्ति॰

१२ योग॰ अग्न॰ विन छुस ज्ञान॰ अन्न रन॰नय
योगेश्वर॰ छुय मूर्ख॰ मुँद साल
अन इच्छा करतम अनुग्रह पन॰नुय शक्ति॰

१३ दय॰ धन॰ प्राप्त प्रत कांसि बन॰न॰य
बान॰ रोस्त कर्म हीन छुस कंगाल
बडि भगवान॰ लदत बान॰ पन॰नु॰य शक्ति॰

१४ गंड॰ गंड वुन्य छुम आम्यन पन॰न॰य
वर दिम इन्द्र॰ चन्द्र॰ छुक दयाल
दो॰गनाव उल्लंघित छुक त्र्यन गुण॰न॰य शक्ति॰

१५ साध॰ छुम इच्छा कुमा'री नन॰न॰य
स्य'ज़ साज़ ग'र सूजित संभाल
को॰रणस सं'जिवरिकिय वर्तन॰न॰य शक्ति॰

१६ शक्तिपात सू॰ति भक्ति माव॰ न्यथ ननिनय
भक्त कर मीना वाम हिमाल
ताह खोल वर दिन॰क्यन वर्दन॰न॰य शक्ति॰

१७ थप क'र मनस चित्त आनन्द॰ घनन॰य
तप गव सिद्ध अथि म'ठ जप माल
मस्त को॰रनस इथिय प्रेम मस च्यन॰न॰य शक्ति॰

१८ मीनायि हीमाल पर्वत बन॰न॰य
चक्रेश्वर छुय त्रि जगत पाल
सा'र्य देव चक्रस फीर्य प्रदक्षण॰न॰य शक्ति॰

११ 'कृष्णस' हरमुख. मुख हाव पननुय
थपि खारतन प्यठ सोऽहं बाल
फीरि फीरि नीरि नीरि निणथि नयिन.य



(७०)

१ गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान।
चित्त विमर्श. दीप्तिमान. भगवानो॥

२ वृंच म्याञि गोपियि च्यय पत. लारान.
बन्सरी नाद. वाद. मतानो
न'शरित ह्यस त.होश म'शरित परत. पान चित्त०

३ अथ.वास च्यय सू.ति रास आस. खेलान
व्यास नारद ति तति आसानो
दास. भाव. राधा कृष्ण. कृष्ण. ज़पान चित्त०

४ देवियि त. देवता सेव च्यय करान.
भवसर. तव. तार लभानो
ग्यवान रिवान ज़यव छखन लोसान चित्त०

५ अस.व.नि कोसम मुख. चानि फो.लान
कुसतब नजि आसि शेहलानो
कौस्तुब त्र'टि त. माल. आसहोय पा'रान चित्त०

६ मायायि सू.तिन च. शायि आसान.
कायायि मज़ भिन्न न. रोज़ानो
सिर्यिकि आसन. छाया छय भासान. चित्त०

७ आकाश· सुख छुक आकाश आसान·
तत् सत् प्रकाश आसानो
देवन हंदि देव· प्रा'णियन हंदि प्राण चित्त०

८ युस युथ सो·रिय तस त्युथ छुक हावान·
सुख हाव म्य'ति श्री नाराणो
प्रारन·चि फुरसत छमन· रूज़म·च् दान· चित्त०

९ यस ई इच्छि. ता'य तिच्छ. छुय प्रावन·
कर्म· फल दात· च्यय वखनानो
ह्यो·न युन पननुय लक लकन बहान· चित्त०

१० क्षमा मूर्खस गाट·लि छि करान·
गाट· छ क न· तमि· सू·ति प्यवानो
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस ई जान· चित्त०

११ तगिहं त· ज़गि मंज़ आसहा थ्यकान·
वन कस कां·सि छुन· व्य'पानो
कुञ्चर·चि कथ छय सञ्चरस अपाण चित्त०

१२ सिर्यि चंद्रम· रोस्त· ज़ग छा प्रज़लान·
भगवान· रुस्त प्राण अप्रमाणो
लगहास नित्य नियम· रोजिहं सन्निधान· चित्त०

१३ दास छिय अ'सि चा'नि कोन छुक मानान·
ला'गज़िन· पनन्यन बेगानो
शर·म छय ना छिय शरण ईवान· चित्त०

१४ वनन.चि जाय छमन. वनुन कव ज़ान.
सनन. चियि कथ छय ब्याक आसानो
बनि यस ई पानस सु व'नित न. जालान. चित्त०

१५ बाकि बाकि वदनस ति वाक्य छिन फोरान.
साक्ष छुन अन हित आसानो
चाक गा'म जिगरस आक छिम न.बलान. चित्त०

१६ छसन. डेंशान बो देश' देश. छारान
प्रारान छ्ससु छुम न ईवानो
प'दि लूसिम.ति व'दि व'दि चडि भरान. चित्त०

१७ अंत छुन. भगवत मायायि लासान.
आयायि तति कति छारानो
छारित त. गा'रित ल'भित त. रावान. चित्त०

१८ गिंदनस रंग. रंग. टंग. छ्न. ईवान
मग. हाय ब.ति श्री नाराणो
हंग. ता'य मंग रोजतम संतुष्टान. चिंत०

१८ हे कृष्ण। पाप सा'नि चय छ्क डेंशान
शाप कास असि - अ'सि छि नादानो
क्षमा कर यव. पायस छि ध्यवान. चित्त०

२० भगवन मायायि कांह छन. ज़ानान.
तस त्युथ छ युस युथ छु मानानो
मान. अवमान रुस्त च.ति मान ब.ति मान. चित्त०

२१ युस न. जाव कांसि ता'य कांह छुसन ज़्यवान.
ज़ीव आन मा.नि यस छि जपानो
ज़ानि सु सोख्य न. ज़ानि तस कांछा न. चित्त॰

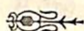
२२ ब्रह्मा ति छुन चोर वेद ह्यत पोशान.
तुतनस यूत तस पजानो
शेष नाग सासि ज़्यवि सू.ति को.ल गछान. चित्त॰

२३ युस ज़ि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावान.
दय नज़ि मनि कुनि आसानो
बु.य च्यय अर्पण त. च.य स्योन आसान. चित्त॰

२४ धन. ध्यार पत.व त्राविथ गछान.
भाग्यवान तिम इमन न आसानो
सन्तोष वृत्त दिम छिम तिम नव निधान चित्त॰

२५ सन्तोष. वृत्त दिम छिम नव निधान
तृप्त कर स्य सत् स्वरूप ज्ञानो
यथावत् युथ ब. आसहथ वुछान. चित्त॰

२६ 'परमानन्द' परम. आनन्द प्रावान.
सूरमुत हनि हनि अरमानो
राधा माता त. बब कृष्ण भगवान चित्त॰



(७१)

शुभ मुख हाव स्यति अमृत चावतं ।
सत्गुरु हावतं गटि मंज़ गाश ॥

१ गो.ड सत्गुरु सुंद ध्यान सो.रनावतं
दम. दम. वद. च्यय कुन नम.हा
रात दिन अक चण छ्यन मत थावतं सत्गुरु०

२ जन्मस इथ कर्म खुर संभालतं
मत. दिषिरावतं साधन मंज़
मन चे कलि इन्द्रिय चूर् पावतं सत्गुरु०

३ दह शो.मरा'वित मद हो.स्त पावतं
काहन हावतं कुविय वथ
सोऽहं शब्द. निशि भ्योन मत थावतं सत्गुरु०

४ शिशरस नाग. सर. तन नावनावतं
मत. वुछत म्यानिस कुकर्मस कुन
मोहक्ने सिंधि म्य'ति अपोर तारतं सत्गुरु०

५ चण. चण. पननुय ध्यान धारनावतं
सोर.नावतं ती यी पज़िहे
कामदेव. श्याम सुन्दर. लट. मत. दावतं सत्गुरु०

६ विश्वंभर. पननुय शुभ मुख हावतं
रोजत तं. भावहा'य पननुय हाल
म'शरोवमुत नाव चित्तस पावतं सत्गुरु०

७ वनमाल धा'रित दर्शन हावतं
हावतं पननुय प्रकाश रूप
दोह गंम लूसित मत. प्रारनावतं सत्गुरु०

(७२)

१ शिव नाथस प्यठ सपज.क स'तिये ।
श्री पारव. तिये भ'विनै जय ॥

२ पूजायि पोश लागय लव' ह'तिये
अ'किन गामि आसव.ञ छक शिवा
रक्त बीज मा'रित छक पान. त'तिये श्री०

३ पोश सोंबरा'विम वो.ज़लि नीलि छ'तिये
पूज़ा करहय इष्ट देवीये
ज़ार. पार. वार बोज छिय आर.क'तिये श्री०

४ अमर नाथ कैलासकिस सूर. म'तिये
व'रनक त. क'रनक अर्ध शरीर
नित्य छक आसव.ञ तस सू.ति सतिये श्री०

५ अष्ट. स्यज सू.ति छय व्रूँठि ता'य प'तिये
शिव शक्ति रूप. छक सर्व व्यापक
'कृष्णस' टोठ छक बोज़ान य'तिये श्री०



(७३)

प्रेम. पोश लाग शेरि तसं.ज़ि वेरि करवा'य रो.वये ।

१ होश बुल बुल प्राण पोशनूल ध्यान.कुल चाव फो.लनस
प्रारवुन रोज़ खबरि तसं.ज़े त्रेरि०

२ भाव बंबूर द्राव गोशस पोश. वागस चाव मंज़
करनि गूँ गूँ असज़ि वेरि०

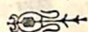
३ स'मिवि स'खियव अस्त. अस्तै तमनि लागव भाव. पोश
यस नन्द लाल नाव प्यवये वेरि०

४ शशकिल प्रावक अद, चाव ज़ाव अमृत द्राव नो.न
श्याम. सुन्दरन दाम. च्यवये वेरि०

५ आव सोंत ता'य छाव अछि पोश चाव बुलबुल बागन.य
त्राव मोह. जंद वंद. कुवये वेरि०

६ नो.न सु वुछत. जानावारय मो.क्त. हार.य आव ह्यत
ज़ीव. डल. दित द्राव व'रिये वेरि०

७ ह्यछत. वार. करत. चार. पननुय ध्यान धारणायि धार ध्यान
ज्ञान प्राण मा छु मूर्ख. प्रवये वेरि०



(७४)

पाद. कमलन तल मा'जि म्य'ति वरतम् ।
अनुग्रह करतम मा'जि अनुग्रह करतम् ।।

१ कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोज़बम्
तालकस नाल ता'य फ'रियाद बोज़तम्
पाप शाप कास्तम संताप हरतम् अनु०

२ म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
बे होशस म्य'ति अनतम होशन
तोषतं त· मनि मंज़ लोल· रस भरतम् अनु०

३ कन थव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सार छक च.य मा'ज़ि धारणायि धरतम् अनु०

४ भय दूर करतं य'मि संसारुक
मटि बोर वालतं खो.टि व्यवहारुक
तंग आस य'मि निशि वासना फिरतम् अनु०

५ चो.दहान भवनन माता च.य छक
दाता च.य छख त्राता च.य छक
रोग. ता'य शोक' निशि जल च.य म्य कडतम् अनु०

६ वदवुन वालुक मा'जि छुल प्रारान
थो.द तुलतं इत लारान लारान
दिलास. दित म्य ओश वुथरावतं अनु०

७ दीनस त. क्षीणस सत छम चा'त्रिय
भास्तं हृदयस मंज़ हे भवानी !
दासस त्रास ता'य वसवास हरतम् अनु०

८ संसार. द्वैतन ब.य रोटमुत छस
दुख सागरस मंज़ ब य फो.टमुत छस
खारतं आवलन. मत. म'शरावतम् अनु०

९ पाय म्योन च्यय रुस्त कांह करिन. माता
उपाय र'स्त्यन चय छक त्राता
कास्त अंधकार दास गंज़रावतम् अनु०

१० वील.जार मा'जि बोज़ चय नील कंठस
शील हर चं.य छक आशा जा'ञ छस
भक्ति भाव पननुय म्य'ति पुशरावतम् अनु०



(७५)

गन्योमुत छुम मनस चोन भाव जगत् माता म्य दर्शन हाव।
म्य आमुत लोल. बानन छाव जगत् माता म्य दर्शन हाव।

१ ज़गत माता च. टोठान छक भगत सन्तानन.य बेशक
हावान युस लोल सू.ति चोन नाव जगत०

२ म्य वोल शानव प्यठै बोर.य म्य पुशरोव पान च्यय सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिक. चाव जगत०

३ ब. छस प'ज़ि किनि स्यठा नादान करान छ़स पाप छ़स अनजान
करुम माफ छय च्य माता नाव जगत०

४ प्रियम नगरस अंदर चामुत ब. चाञे डेडि तस आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो.ध चाव जगत०

५ त'मिस क्या गम य'मिस यावर च. आसक ताज दित वर सर
शत्रु सुदं पोरि कति तस दाव जगत०

६ वदान छुस चा'ञ वनेथम कल द'लिस तल मा'जि ह्यतं जल-२
म्य सतचे प्रेम. न्यंदरे साव ज़गत०

७ वनान छुस वील. ता'य ज़ा'री थो.कुस यूत काल प्रा'रि प्रा'री०
म्य लो.कचार गव वुजर वो.ञ आव ज़गत०

८ ज़गत माता म्य सतुष्ट रोज़ वनान ज़ा'री छुसै च.य बोज़
पन.ञ दयगत दयालु हाव ज़गत०

९ व. छुस हियि गों.दि च्य किति सारान प्रेयम सान डेडि तल प्रारान
च. प्रेम कि भाव. हियि गों.दि छाव ज़गत०

१० छु 'बागवान' च्यय परन प्योमुत गडित गुलि च्यय शरण गोमुत
छु स्मरण चोन हर दम नाव ज़गत०



(७६)

द्रौपदी विलाप ॥ जय राधा कृष्ण ॥

श्लोकः– हा कृष्ण मनसि वासिन् क्वासि यादव नन्दन।
इमां अवस्थां संप्राप्तां अनाथां किं न रक्षसि ॥

वलो श्याम. लालो ब. कोताह इ चालै
सभाये अंदर छिम कडान ज.म. नाल।

१ ल'जिस वो.परन मंज़ व'जिस क'मि ब. शापन
ग'जिस शर्मि दावै ल'जिस गिस ब. ज़ालै०

२ म्य वुज्ञक्यन करान छुमन. कांछा हिमायत
यि क्या ओस दयन ल्यूखमुत म्य कपालै।

३ म्य रुस्तुय रछ्यं कुस अबल छस ब. ना'री
च. रछतं त. वुछतं छसै कमि हालै।

४ प्य'यिय मा न्यंदर च्वय सदा छुक न. बोज़ान
ग'यि को.त दया वुज्ञक्यनस हे दयालै।

५ च. छुक दीन बन्धु म' म'शराव दीनस
हृषाकेश. अशज़े हरान छसया चालै।

६ म्य वोज्ञ रूज़मच छम न. कांसि ह.ज आशा
तमन्ना म्य टाठि छुम त. रट.हत ब. नाल।

७ सभासद बनेम.ति छि मोनिक चित्र ज़न
दया छकन. वुज्ञक्यन इबान हे दयालै।

८ दया सागरो कर दया "नील-कठस"
च. दिस पान. दर्शन यिस अन्त. कालै।



(७७)

जय जगदम्बे ॥

ओरुत प्रारान छुक बस तलै बलै दर्शन. सू.नि।
घनेम. च मा'जि छम चा'ज्ञ कलै बलै दर्शन. सू.ति ॥

१ संसारस्य म्य ग्युँदनम छलै मिलनोवनस म्य'चि सू.ति
अज्ञानन बो को.रनस नलै बलै।

२ मायायि कोरनं मन चं.चलै मस्त गोस लोभस सू.ति
मोहन आवरुस रो.टनस तलै बलै।

३ पापन ह.दि बारि छु अल.अलै चा'रिथ छुम र ज़ सू.ति
मंज़िलस किथ वात छुस निर्बलै बलै।

४ सो रुम न नाव चोन सुय छुम मलै छचो.नुस ब. इत ग छ सू ति
आवागमनच कास गांगलै बलै।

५ मन दर्पण म्य कर निर्मलै मल्युन छु गरदे सू.ति
दयायि हंज़ करतस सैकलै बलै।

६ व्या'पित सोरुय छक ज़ल स्थलै भ्रम छुम अज्ञान. सू.ति
दुइ कास युथ भासि कुन केवलै बलै।

७ जजरयोमुत छुस बो कवलै फों.ल चानि अनुग्रह सू.ति
सरताज़ बो वन. दयायि ज़लै बलै।

८ मा'ज्य रटतं दामनस तलै खोचान छुस भय. सू.ति
प्रेमच न्यंद.र म्य पांव जल ज़लै बलै।

९ भक्ती दिम तिछ युथ नय डलै बनि चानि कृपायि सू.ति
अद म्य ज़न्म गछि सफलै बलै।

१० अशि ज़ल. गों ड दित पाद बो छलै तिम रट. हृदयस सू.ति
लोल.सान करक बो मीर छलै बलै।

११ ,हंसा' आमुत छय बर तलै मगान आ'चर सू.ति
मो.कलावतन य'मि मायायि छलै बलै।

(७५)

ओस कस रूज़ित अदरी वैर क'मि निय॰ प्राटित म्या'ञ पर॰ पहा'र
मुरलीधर॰ सुंद छुमा यी खैर क'मि निय॰ प्राटित म्या'ञ पन॰पहा'र

१ थो॰कमुत सुदामा घर॰ यलि आ'व नेत्रव त्रोवुन अ'शि द'रियाव
यति कुस राजा रोज़ान गैर कमि॰

२ कति छुम घर॰ बार यो॰तको॰त ओस फाकै वां'लिंजि गोम तलवास
गाम॰च् कोत म्या'ञ तुलसी वार कमि॰

३ कति गयि पा'द॰ इम गुल त॰ गुलज़ार
आंय कति योतनस मोक्त॰ फँवार

रंग॰ मंदोर्यन ल'ज़ ना ता'र कमि॰

४ आय कर यो॰त इम दास दा'सी शुयें म्या'नि गय मा॰वन वा'सी
मायि ह् च् भार्या द्रायि ना सा'र कमि॰

५ को॰त गयि मा'सूम सुन्दर पोश लोल आम वुछहक रोवुम होश
मूरान गुलि ओस प्राटान दा'र कमि॰

६ ओरुत सुदामा गव परैशान व्य'खच्॰य माया ओस डेशान
द्रायस सुशीला वुथि वन हा'र कमि॰

---

(७६)

मेव॰ कनि मो॰क्त॰ वो॰थ चंदन बागस
नागस प्यठ लो॰ग हंस॰ दरबार।

जल. कनि अमृत नो.न द्राव नागस
बागस मंज़ चाव संत. अट.हार ।।
(हंस. दरबार परम. हंस. दरबार)

१ बुद्ध क्या वाति अथ रागस त. त्यागस
वरणि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रुस्त क्या छु ती भु पूज़ि लागस नागस०

२ त्युथ दशहार कर तिथिस.य प्रयागस
यथ दह इन्द्रिय छि दह अवतार
का'हिम द्वादशांतस पूज़ि लागस नागस०

३ नाम. रूप कल्पित ज़ोन ह्यथ रागस
अस्ति भाती प्रिये रूप पत् द्राव सार
शर्मन्दगी च'जि मंद. वैरागस नागस०

४ प्रियम. कर्म. फलन.य यम. नियम द्रागस
प्राव.नावि अनुग्रह किय अंबार
तृप्तियि पंपोश फो.लि लल. त्रागस नागस०

५ होश. पोश फो.लि उद्योग. पोश. बागस
दास. भाव. किञ आस ख'दमतगार
'कृष्ण' सेवा कर आत्म. रूप. आगस नागस०



(८०)

प्राव कैवल्य हा केवलो योग चाने बनि आज़ा'दो ।
भोग. सुखा हा निष्कलो य'लि चलनं पाप.नि ला'दी ।।

१ चोन दूर्यर ह्यक कव ज़'रित कमि बलै ह्यक. च्यय निशि इथ
छुमन. करार गम चानि गलो योग॰

२ गर्भ. नयन मंज़ फीरि फीरि वुछ म्य लो.कचार यौवन त.पीरि
बांड ब'नि ब'नि कम जाम वलो योग॰

३ पय अजताम लोभुम न. चोनुय धर्म हीनस म्य ओस कर्म लोनुय
नठ छम वति निशि मा डलो योग॰

४ मन दर्पण छुम मा'ल. गोमुत मोहकुय मदिरा छम म्य चोमुत
ज्ञान. गंग जल मल कल. छलो योग॰

५ नारायण कस गछ् शरण छोटनं किथ. पा'ठि जन्म मरण
हे शरणागत वत्सलो ! योग॰

६ य'च् कोल चानि वते द्रासै बुजरुकुय प्य'यनै पासै
बुजरस त्रा'वित वो.ञ म. चलो योग॰

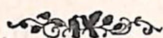
७ मन काफूर अन. चानि वेरे रत्न ज्योति फिरवै शेरे
गाल मल 'ठाकुरस' निर्मलो योग॰



(८१)

(गजल) —श्रीमती अरञी माल

१ दौरि दुनिया सोरि आख.र यार छांडुन पननुय
आव हर जा ज़ेरि ज़मीन नेरि तस नो.य य'मि खो.नुय
२ नूर डेंशुन छु न. आसान सूर मलुन ह्यु व पानस य।
रहबरस कुन पान गालुन वथ सु हावियि तस कुनुय॥



(८२)

(ग़ज़ल)

ज़ानखै कर जान फिदा'ई यौर वफा'ई केंह छयनो ॥

१ अच् अन्दर लोल. भागस लाग आशक बुलबुलो
तति गडनै खलूति शा'ही योर०
२ यो दवै करक बादशा'ही तस ज़मीनस जाय छयो
तो.त छु वातुन तनहा'ई योर०
३ पाक तार.चि यलि तोलनं पाक छु पानै क्या ह.लुय
नरि ज़ंग अ'छि दिन गवा'ही योर०
४ नमरूदन दम दिचा'ई कान न'भि ल.य आस्मान
खून तोर. प्यव बर हवाई योर०
५ कारि बद छय रोय सिया'ही बार गो.ब छुय कोत तुलक
वुछत. तह.ज़य बारगा'ही योर०
६ 'उस्मानो' मंग पना'ही तति न बियन ज़सज़लो
तति अरशस थर. चा'ई योर०

वुछित गत चा'ञ दैवागत च्य विन दयि नो सोरै लो जो।
म्य अन्दर कर पनुन मन्दिर ब. च्यय पूजा करै लो लो॥

१ ब. चाञे वेरि सों.बरावय अ'छिव किञ रंग. रूपुक रस
कनव किञ शब्द. साजुक मस अ'नित खास्यन भरै लो लो०

२ म्य कुन वुछि वुछि असान छुक दूरि रूज़ित आस्मानन मज़
गुपित छुक दास्तानन मज़ ब. दूर्यर नो ज़रै लो लो०

३ फिज़ा त्रा'वित म्य ख निमति ज़िसि
ज़मीनस तल त. पूर.णि छिम
स्यठा देवार लूर.नि छिम च्य रुस्तुय क्या करै लो लो०

४ ब. छुस पोंपूर च्य दीपस पत चटित इम जाम करहै गत
दिहंनै जाम. चटन चि वृत्त क्यो.मा ह्यु व मा मरै लो लो०

५ म्य निम पंपोश. पादन तल तिमन हुंद बों.बरा सूजित
कंडयून प्यठ छुस मरे रूजित ब. चाने आसरै लो लो०

६ ज़मीनस जन्मकिस व'विम.ति अशिकि दुर्दान. केंह भ'विम.ति
अ'छिन मंज छि र'छ्रित थ'विम.ति तिमै खावे जरै लो लो०

७ इमन जोयन अन्दर यो.दवय छ चाने सहज़ धर्मुक जल
बठ्यून हुंद छक सम्योमुत मल म्य चावुम आगरै लो लो०

८ पनुन म्य तेज़.कुय आगुर इमन जचन अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित दुई कासुम गटे हंदि गाशरै लो लो०

(८४)

अज़ वाति बूज़ुम मोल म्योन कोसम वतन वथरावसा'य ॥

१ लछ़ ज़न डवित संताप ताप अतः करण घर. नावसय
ठाकुर कुठिस मञ्ज़ रंग. रुत प्रंग आदरुक पा'रावसय॰

२ सों.त्ररित र'सिलि र.ति कर्मं. फल मस खा'सि भ'र्य भ'र्य थावसय
अशि गंग वाञे खोर छलस रुमालि गुम. वुथरावसय॰

३ तिम पाद हृदयस प्यठ रटित दुख दा'दि ज़न्म.कि भावसय
कोछि क्यत रछ़ुन लोक.चारकुय स्मृत चित्तस अद पावसय॰

४ भावुक घन्यर लोलुक सन्यर वां'लिज़ मुचरित हावसय
नो.व नागरादस सूँ तिज़न स्नेह मायि हुद वृजनावसय॰

५ गुरु भावनाये सू.ति शेर नो.मरित खो.रन तल त्रावसय॰
घर. बार ता'य आसुन बसुन सोरुय पनुन पुशरावसय॰

६ गट. प'छि चन्द्र ज़न नाम. रूप अख अख कला व्य'गलावसै
सिर्यस अन्दर लय प्रावि ज़ून सार्यय बनन त्यछ मावसय॥



(८५)

स्मरण पन.ञ दिचा'यनम प्रेमुक निशान. व्य'सिये ।
र'छ़रुन तो.गुम न. रीवुम ओसुम न. बान. व्य'सिये ॥

१ पत कालि छुम न द्य़तमुत सोन मोखत दान व्य'सिये
अ'नि सारि क्या लभक वोञ तिम मोखत दान व्य'सिये।

२ वां'लिंजि मंज़ थवुन गोछ हावुन थोवुम अथस प्यठ
राह कस छु कोर म्य पानस नुकसान पान. व्य'सिये।

३ हावुन छु राव रावुन चावुक समर छ. खा'मी
थावान ज़ि छाव. बापत बानन छि ठान व्य'सिये।

४ यन सुय निशान रोवुम तन म'च़ गयस ब. फलवाल
न्युन ह्योन न कॅह ति फेरान छस वान. वान. व्य'सिये।

उत्तर

५ व्यसरुन पनुन वनस क्या वननस ति वार मा छम
बुथ मा सम्यस दोहस थिरथ गछ कोत शबान व्य'सिये।

६ यछ पछ म. हार ब्याखा ह्यत यूर्य वाति कांछ़ाह
तस छा क'मी निशानन भ'र्य भर्य खज़ान. व्य'सिये।

७ डोलान कोहन वनन मंज़ शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़ क'त्याह निशान. व्य'सिये।

८ व्य'सरित ड'लित पथर प्यथ बुथ क्या दिमव त'मिस निशि
पुत फेरनुक पकान छा युत ह्युव बहान. व्य'सिये।

९ मानव ज़ि अ'सि ह्यमव पोत छोर्या तसुँद मुहब्बत
पैवंद यि आदनुक छा शुर्य कारखान व्य'सिये।

१० दिल फुटिम.त्यन छु तोषन य'च़ गरि'मत्यन छु रोशन
गछ़ व'र्यमत्यन सुदामन— प्रिछ गा'यबान व्य'सिये०

११ अंदि प'खि तति छु आसान बोद. ब्रोर सूर दासुन
बोज़ान छु माय ला'गित लौलकि तरान. व्य'सिये०



(८६)

तरवुन छु करनोव हक दित वनन
कांह मा. स. त'रिव अपोर।
पत. तार बन्यव न. आलुस म. क'रिव
उद्यम. त'रिव अपोर॥

१ करनावि तार छुन. घरि घरि बनन
वुज़क्यन छय बेला जान
निश्तुर त. यि !सात म. राव.र.विव
वज़िव त. त. त'रिव अपोर पत०

२ घरवेठ सोंबरान छिव मार. गा'मति
छ्य़'नित थ'कित पेमति
घर. रोज़ि य'तिय कथ क्युत भ'रिव
छ़'रिय त'रिव अपोर पत०

३ अन अन वननस कन मो था'विव
गो.बरा'वित्र क्याज़ि पान
गो.व ब्रोर ह्यत वति प्यठ क्या क'रिव
लो.तिय त'रिव अपोर पत०

४ चूर युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मुक छु अटल नियम
सो.न रुफ छा'रित गोड. क'र्यं म. ग'रिव
संतोष त'रिव अपोर पत०

५ प्रछ. गा'र य'लि लगि बर दित ख्यनस
इसबात सु.य गयि चूर
थरि थरि मा हरद. थ.र ज़न ह'रिव
औधार्य त'रिव अपोर

६ प'ज़ि पान होव ऱ्षि रस्त्यन ऋषण
पशन ति भ'रक प्रय
अथ ऋषि धर्मस प्यठ तोहि ति ध'रिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर पत०

७ ऱ्ति भाव था'विव ऱ्तिय ब'निव
ऱ्तिय क'रिव कार
यी य'ति क'रिव तिय तति सो.रिव
सत्कर्म. त'रिव अपोर पत०

८ अपारि बदलै विद्या छय पर.ञ
योग.च छय तत बोल चाल
प'रिवै य'ति श्री गीता प'रिव
योगै त'रिव अपोर पत०

९ अपारि ब्रह्मय छु छ़ारान त. गारान
य'च छुस ज़ि तुहुंद लोल
य'ति क्या छु प्रावून ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेम त'रिव अपोर पत०

१०	वाव तस क्या करि तारक मन्त्र
यस आसि दय. सुँद नाव
पानै छु करना'वि चिन्ता म. म'रिव
ड'रिथ म. त'रिव अपोर	पत०



(८७)

गज़ल

यार. संदे दादि दोदमुत	दिल बहारस क्या करे।
वाव योदवै सोंत कालुक	आसि नारस क्या करे।।

१ कां'सि प्रारान दारि प्यठ युस	वांसि हारे धारि ओ'श
आवशारुक तस हवस क्या	शालमारस क्या करे

२ कां'सि पलज़ुन कांसि हुँद ज़ेवर	बनुन यस योछ न. ला'नि
सो.न बना'वितन संगि पारम	तस विचारस क्या करे०

३ होश ड'जमच् जोश व'खमच्	पोश. गहनस तोषि क्या
रोश यस चोल ओश त्रा'वित	गोश्वारस क्या	करे०

४ कालिदासस तालि क'व	पत कलि वोनमुत गाटल्यव
तालि यन युस लोग ज़ालस	गाटजारस क्या	करे०

५ लोल मस ज़ाल्यं त. गाल्यम	यस बुडित मा'लूम गव
मीम नशके त्रावि्हे मस चोन	खुमारस क्या	करे०

६ रंग हा'वित अम दिवान ग्रोस कहवचन खोट स्योन सो न
अ'मि कोडुस अदर्युम खोचर नोन लोल नारस क्या करे०

७ डालि निम. क्या बाल यारस ग्रोर त. शुद्ध पाथ्य न. दिल
छयनि मतिस यत दागदारस नाबकारस क्या करे०

८ ब्रोठ छुय चो.र क्रूठ मंज़िल गा'फिलो बस कर म. चे र
यस म'तिस माघस जिगर शेहल्यव न. हारस क्या करे०



कोरनम यी टा'ठि त. क्याह वनस।
थोवनम न. बाकय केंहति मारनस ।।

सोय रुम छम मनकिस ग्राईनस।
यि कोर न. कां'सि ति दुश्मनस ।।

सो.रुम सु लाल. रुख मनस।
ज़लाव लो.ग कज़लि वनस ।।

फोरुम सु नार खरमनस।
लो.गुस न. केंहति ज्येठनस ।।

दिलस ह्यो.तुन त. जिगर तत्यव।
शोर गव ज़ि नार हा ।।

—मा० ज़िंदा कौल

ॐ नमो भवान्यै ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(सप्तम - तरंग)

(८८)

घमुंक धँर कोर खति हा'रवनस.य
रंग. रंग. पोशन क'र्यं अंबार।
मादलि तुलसियि आरवलि व्यनसय ॥
नारायणस.य छु जय जय कार ॥

१ घरि द्राय भावनायि सू.ति दर्शनस.य
चाय पर्बत राज़नुय दरबार—
आय चक्रेश्वरस.य प्रदक्षणस.य नारा०

२ समेरु पर्बत. कोह ख'ति सो नस.य
सिद्ध पोठ सार्यव.य प्रोव अधिकार
नाश गव दारिद्रस अ'किस क्षणस.य नारा०

३ जय जय छु गोकुलस त. बिंद्राबनस.य
जय जय छु नोन द्राव कृष्ण अवतार
जय जय छु गोपियन त. गोवर्धनस.य नारा०

४ जय जय छु वसुदेवनिस च्य'ड ह्यनस.य
जय जय छु देवकियि यमि चोल बार
जय जय छु दुख. अंद बंद रोज़नस.य नारा०

५ जय जय छु भलभद्रस त॰ अर्जुनस॰य
भकितयि मंज़ इम द्राय सरदार
जय जय छु तत विश्वरूप दर्शनस॰य नारा०

६ जय जय छु दशरथ राज़निस गुणस॰य
माजि कौशल्यायि बार बार
जय जय छु अजोध्यायि रामजुव ज्यनस॰य नारा०

७ जय जय छु राम चन्द्रस त॰ लछमणस॰य
सीता मातायि जय जय कार
जय जय छु भरतस त॰ शत्रुघ्नस॰य नारा०

८ जय जय छु वाव॰ लोकपाल नन्दनस॰य
य'मि गोंड लचि सू॰ति लंकायि नार
जय जय छु सुग्रीवस विभीषणस॰य नारा०

९ मन म्योन पत॰ लारि मधुसूदनस॰य
काम॰ क्रोध॰ कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह॰ रावणस॰य नारा०

१० कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनस॰य
तार दियि करि पचालस पार
सतचिय स्थित थावि शुद्ध चित्त मनस॰य नारा०

११ वन॰वुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनस॰य
थवनुय तस प्यठ ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स त॰ निर्धनस॰य नारा०

१२ हीत. अकि मायातीत निर्गुणस.य
महामायायि सू.ति विवाकार
श्वेत पीत वर्ण सोर.न टोठ रातस दिनस.य नारा०

१३ वनवुन यि केंछ़ाह ओस प्रत वनस.य
ती वातनोव गोपियव गुपकार
वार. आव शंकराचार उलसनस.य नारा०

१४ अनुग्रह चोन मंज़ अन्नप.य धन सय
वांसि ताज पोशनाव होश व्यबहार
कृष्णस' तोषि मज पोश वर्षणस.य नारा०

---

(८९)

१ कमल च़रण रटोय शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

स्तुता परन परन शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

२ च़य छुक भक्तन वरण शरण च्य आये
च़य छुक दुखन ह़रण शरण च्य आये
च्यय मोक्ष दातस मोक्ष य मंगव करव०

३ बडय्‌व योगव सू.ति सत् संगव करव०
उत्तम पदव त. सुन्दर भंगव करव०

अधर्मियन स·तिय जंगव करव०
संसार· समन्दरस तरव करव०
अज़ ताम तिय वोन महा जनव करव०
तम्युक निर्णय अ'सि क्या वनव करव०
'कृष्णन' सत सोर त· सत बोज़ कनव करव०
मोकलाव रटि मायि पनन्यव घरव करव०



(१०)

सन्यास वे परवांय मस्तानै, पा'यैं हो लगै म्यानि जानानै

१ कावन अथि इम श्यछि सोज़ानै पोज़ बोज़ डंजि छ़मन रोज़ान दिल
रोजखै त· बोज़क लोल अफसानै ज्यूठ नो वनै म्यानि जानानै०

२ लूख क्याज़ि कन तलके दुर्दानै ओरुक योर म्योन वननै हाल
ब्याक मा छ़ ब्य'य सुंद दोद ज़ानानै पान· हो वनै म्यानि जाननै०

३ मोहन च्यति छ़िया मन मोंहानै चानि खोत· सुंदराति उपद्यव कांह
च्य'ति छ़ुयना सु वील· ज़ार बोज़ानै आर इयतनै म्यानि जानानै०

४ अं'दरिमि राग अग्न धूञ प्रज़लानै लोक़ त्याग छ़ुय न्यबर मोलमुतसूर
ओबर तल यि वुज़मल छ़य द्रैंठ ईवानै सूर गोसाञि म्यानि ज़ानानै०

५ यं'बरज़ल चश्मन रूद अरमानै शबनम रोस्त कुनि वुछ़होक ज़ांह
सों'बलस कस छ़ि तिम पांद पूज़ानै पूज़ हो करै म्यानि जानानै०

६ घरि घरि सोंरहक देव सुंद द्यानै क्याजि रटहक गोफ त. बाल
मन म्योन क'र्यजिहे खल्वत खान चूरि हो थवत म्यानि जानानै॰

७ दूरि रूजित दोल. लोयथं कानै छिह ल'गित ब्यथि ब्यूठ जख्मन क्रोर
यति योर स्योध कर तीरि मिजगानै सीन. धारयो म्यानि जानानै॰

८ रंग रूप प्रतअंग छुक खोबानै देवता स्वभावस वातिहिय न. कांह
हंग मंग नय आसहक रोशानै आशु तोष हा म्यानि जानानै॰

९ मन क्याजि योर कुन छुय न.नरमानै कोमल तनि चा'ंजि पश्मीन पोट
फर्यशर मोख छिन नख.ठहरानै नाजुक बदन म्यानि जानानै॰

१० यूत नय च. आसहक शेर नोमरानै कद चोंन अोस खास स्वर्गंच थ'र
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानै अभिमान रस्ति म्यानि जानानै॰

११ शानन प्यठ केश छुय परेशानै तालि प्यठ गंडित जट. सर्पाकार
काल बंबूर गण जन छ नां'पावै अंबर मोय म्यानि जानानै॰

१२ कोंग तेहजव छ बोड प्रोवमुत शानै कार्तिक मास पूर्ण चन्द्रस मज़
निथ वुछवनि सु खाल केंह भाग्यवानै पूर्ण चन्द्रम म्यानि जानानै॰

१३ ज़ाविलि वोजलि वुठ कुनि २ आनै असनचि त्रायियलि कुमलानछिय
दा'न पोश बर्गन छि मंद छावानै वुठ कुमलाव म्यानि जानानै॰

१४ मा'सूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानै परम राग रंग कति प्रज़लान छिय
नम चा'नि छा अक़ीक़ किन मिरजानै आदनय सुंदर म्यानि जानानै॰

१५ यथ हुस्नस न· ज़ेवरुक एहसान खा'लिस सोनस मूल मायि त क्या
युथ रूप छा भूषणस ओरुज़मानै साद शाहज़ाद म्यानि जानानै०

१६ इम चानि खतुखाल याद पावान दूरिरुक दोद ताम म'शरान छ़ुस
दोद बलि यलि वैद्य आसि वातान दा'दिस वात म्यानि जानानै०

"स्व० मास्टर ज़िंदा कौल"

---

(६१)

१ दान मनसा'वित अथ धारनोवथस
अथ पत नित म'च़रोवथस
य'च कोर·थम अवमान मदनो। ईछ़ा स ज़ान

२ रस रस कमि ताम वति पकनोवथस
कुन ज़ोन वति व्यठ त्रोवथस
अनज़ान - सरिगरदान मा'र· मति। ईछ़ा स ज़ान

३ मन वारि म्याञ्चि आश पोश रुवनावित
संग दित बार· फोलनावित
पानै कोरथस फान मस्ताना। ईछ़ा स ज़ान



(६२)

दिल फोलि दर्शन चाने सूरमति सर्फ गोसान्ये
दिमयो गोड अशि वान्ये सूरमति सर्फ गोसान्ये

१ शिव छुक कैलास वा'सी शक्ती छय चा'न्य दां'सी
तति छय वज़ान शीन शान्ये सूर०

२ ज़टि छ्य च.'द्रम. लोभान हटि छुय वासुक शोभान
गौरी शंकर. साने सूर०

३ मृग. शाला छुक व लिथ.य पानस भस्मा म.लिथ.य
खुर कास असि डयक.लाने सूर०

४ जटि छुक गंगा त्रावान पापव निश. मोकलावान
यमराज़ मय चोन माने सूर०

५ छुय त्रिशूल काल. संहा'री पान. छुक कल्याण का'री
चानि क्रोध ज़ग मा फाने सूर०

६ नन्दकेश्वर चोन वाहन पूर्ण कर मन. कामन
कुस न चोन महिमा ज़ाने सूर०

७ रुद्र गण छिय चा'नि संगी सा'रिय चरसी बंगी
कामदेव दो.द च़खि चान्ये सूर०

८ आ'रित छिय आशि छ़ारान कोन.छुक मवसर तारान
आरान तन मा आने सूर०

९ भोलानाथ. सोन संकट आवागमनुक च़य च़ठ
इत गछ़. रोज़ि बे माने सूर०

—श्री प्रेमनाथ जी साबनू 'प्रेमी'



(१३)

ओम् पर.वुन हंस ताजदार, कमि वन.कुय जानावार।

१ ज़ाल. लगिना सुय अनका माल. गंडहस छुम तमन्ना
नाल. रटहन सुय बाल यार कमि०

२ कोछ़ ब. दिमयो हा कावो गछ़त वनतम दियि दर्शन
वछि वा़ लिंजि मावस असरार कमि०

३ पोशनूलव पोर यि हंसो कुकिल़ बोलान गोविंद.गो
हर मुख.छा किन.हरिद्वार कमि०

४ प्यठ गोशन र'टनम जाय का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वोंद हंदयस त. रोश च़लियार कमि०

५ खत ब. लेखस हटिके रत. ज़ा'विलि खत सू.ति शा'मिदार
इयि नत. छुस ब. दा'वादार कमि०

६ बा'लि अनतने दूरि मा का'लि का'लि जिगरस गा'म परगा'लि
ना'लि जामे तस छि जरकार कमि०

७ हंस पख.वय पत. लारोस प्रारि प्रारोस डंडक वन
दोह दरि लगि सोरि लोक.चार कमि०

८ दरद. सोज़क संतूर साज़ सासि परद. ग्यवि कस्तूर राग
ब.ति तिय तिय वनान कोल.तार कमि०

९ 'भास्कर' चेन त सासन मंज़ रुम.रुम. खास छु भाखा'नी
ललवुन छुम सु सिरि असरार कमि०

---

(१४)

व्यल ता'य मादल व्यन: गुलाब पंपोश. दस्ता'य।
पूज़ायि लागस परम. शिवस त. शिवनाथस्ता'य॥

१ जटा मुकटा. प्यठ गंगा वसान छस ता'य
देवियि त. देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्ता'य
भक्ति भावुक जय जयकार आ'सिन तस ना'य पू०

२ दया सागर. लोल विज़यायि कोरनस मस्ता'य
हा पोश मते होश ह'लिम.ति थव ध्यान ह्यस ता'य
असार संसार छ'लरावान सोर रोजि कस ता'य पू०

३ पंपोश पादव सू ति इतम अस्ता'य अस्ता'य
चरणन ब वंदै ज़ुव जान ह्यथ वांलिज वस ता'य
राग चानि सू.तिन पोञ्य वुज्यम नाग.रादस ता.य पू०

४ पा'र्य पा'र्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस ता'य
दर्शन चान्युक छुम य'च़ लोल सू.ति हावस ता'य
टोठतम सदाशिव ज़गत ईश्वर छुस बेकस ता'य पू०

५ अमर नाथस नीलकंठस कल. वंदस ता'य
विच़ार सू.तिन "कृष्णस" प्यठ आर इयिनस ता'य
यछ़ि पछ़ि सू तिन गछ़ि अर्पण शिव भावस ता'य पू०

कीर्तन :- जयति शिवा शिव जय जय जानकी राम।
जय जय लक्ष्मीनारायण जय जय राधे श्याम॥



(१५)

(गज़ल)

शरीर ज़ोलनं अ'मि मदनवारन. बे आरस आर नो छुये॥

१ प्राण ज़ोलनं पवन.कि नारन शशि कलि हुंद म्य नार छुये
समाह कोरनं म्य ऊँकारन बे०

२ ल.यि लोसं म्य तोस चा़रन रुम चा़'र्यमस म्य मोयि मोये
दम.किय पन ज़न छस खारन बे०

३ बडि मनसर.यार छस ब.गारन माह ईश्वर अथ मंज़ छुये
काम क्रोध लोभ मोह छस ब. थारन बे०

४ वुछत मार कू.ति क'र्य अहंकारन नार गोंडनक हा मोयि मोये
फान कोरनस अनफासकि नारन बे०

५ बदन ज़ोलनं अ'मि मदन वारन ह्ये व्य'सि यार इयम नाये विचार मनसर. गारहोन विचारन बे०

६ शास्त्र वल छसया गारन नां'लि 'रा'हिमस' शास्त्र छुये ताज बरसर शास्त्र दीन दारन बे०



(१६)

सतज़न बन मन कर कैलास.य बस्तियि मंज़ वनवास.य रोज़ ॥

१ चित्त. किन्य भस्म मल वल अतलास.य
साधु प्रकृच् सन्यास.य रोज़
ॐ शिव शंभू कर अभ्यास य बस्तियि०

२ विषय त्यागुक धर माघ मास.य
सत्संगकुय उपवास.य कर
आत्म तीर्थ मन नाव मोह.मस कास.य बस्तियि०

३ पान प्रज़ना'वित पानय म. आस.य
सर्व संकल्पन ग्रास.य कर
तल. प्यठ. त्रा'वित त्राव तलवा्स.य बस्तियि०

४ महामाया ह्यत रछुन दास.य
शिवनाथ हृदयावास.य छुय
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यास.य बस्तियि०

५ श्री कृष्ण महाराजन व्यूल रास.य
गोपियि शुराह सास.य ह्यथ
बाल. ब्रह्मचा'री तोति नाव द्रास.य बस्तियि०

६ 'कृष्ण' अं'दरिमि त्याग. मल सूर सास.य
न्य'बरिमि राग. उल्लास.य कर
शुकदेवस गव यी व'नित व्यास.य बस्तियि०



(९७)

कर सन. कुनुय बनि सू.ति तस जानानस.य जानानस.य ।
तन लोल. नारन ज़ा'जनम अनज़ानस.य अनज़ानस.य ।

१ मय्रकिस दूकानस व'थि छि ब्रर पैमान भ'र्य भ'र्य क्या ज़बर
चन रुस्त ब. छुस आ'सित अंदर खुमखानस.य खुमखानस य०

२ निश आ'सिथ.य दूर्य र न्य प्योम रूसिस न. पय नाफुक नन्योग
छांडान सुगंध दिल तार गोम नादानस.य नादानस.य०

३ गोस नज़ि पयस मो.क़ंजारकिस कोचस ब. गोस व्यवहारकिस
सों.बरनि लो.गुस मसारकिस सामानस.य सामानस.य०

४ देव आ'सिथय जीव नाव प्योम सो.न आ'सिथय म्यज़ि त्राम गोम
मो.क्तस न्य फोतय खाम गोम दुरदानस.य दुरदानस.य०

५ अद्वैत अमृत कुय सु मस चन. सू.ति ब. बनहा एक रस
दु.य रोजिहे कति न्य त. तस कुनि आनस.य कुनि आनस.य०

६ य'च़ काल कुय तस निश जुदा गोमुत ब. छुस मेलि ना सना
तस रुस्त म्य आराम ज़रा कर देवानस.य देवानस.य०

७ यत दा'दिस.य गछि़ वैद्य वनुन तस बावहा बो सिर पनुन
नत.राज़ि दिल क्या छुम वनुन बेगानस.य बेगानस.य०

८ 'नीलकंठ' प्रेम.चि वति च़.नेर वातक मुकामस पुत म. फेर
प्रावक च़. अद.कैंह लगिन च़े.र निर्वाणस.य निर्वाणस.य०



(६८)

भ्रम छु संसार शम त. जीवो दम म. कर कांह खा'लिये ।
करत. शम दम सो.रत.सोऽहं आसि गछ़नुय का'लिये ।।

१ इछ़ छय शोभान ओवरस.य मज़ बुज़मला हाय त्युथ छु आय
आयि गयि कू.ति काल हारन शीन ज़न तिम ग.लिये०

२ बाज़िगर सं.ज़्य यि बा'ज़्याह सोर संसार ज़ानतन
मय च्य चोमुत मोहकुय छुय—छय च्य कमिचिय चा'लिये०

३ रूदि ना य'ति राज़ ता'य रक रूदि ना य'ति शूरवीर
अथ मूरान ख्यत त. अफसोस कु.त गयि धन. वालिये०

४ 'नीलकंठो' बन शरण सत्गुरु च़रणन मन. किअ
युन त. गछनुय तस छु माया दाम यस गव ना'लिये०



(९९)

इतना तो कर ले स्वामी जब प्राण तन से निकलें।
गोविंद नाम लेकर फिर प्राण तन से निकलें॥

१ श्री गंगा जी का तट हो या जमुना जी का बट हो
और सांवरा निकट हो मेरे०

२ श्री विंदराबन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसी दल हो
विष्णु चरण का जल हो मेरे०

३ सांवरा सन्मुख खडा हो बंसी का स्वर भरा हो
तिरछा चरण धरा हो मेरे०

४ सिर सोहना मुकट हो मुखडे पै काली लट हो
यह ही ध्यान मेरे घट हो मेरे०

५ निकलें जो प्राण मुख से तेरा नाम बोलूं सुख से
बच जाऊँ घोर दुख से मेरे०

६ मुझ 'दास' की इस अरज़ी—को मानना न फरज़ी
आगे है तेरी मरजी मेरे०

---

(१००)

ध्यान का वैदा करके सजन तूने
ध्यान लगाना छोड दिया।

१ सीस तले पग ऊपर थे
जब माल के पेट में लेट रहा
तब ईश्वर से इकरार किया
तूने भूल के वह सब तोड दिया ध्यान०

२ देख लुभाय गया जग की
रचना सब सुन्दर साज बनी
उस सरजनहार की सार नहीं
तूने भोगन में मन जोड दिया ध्यान०

३ घर काजन बींच फसाय रहा
दिन रात न मौत की याद रही
उमरा सब बीतत जाय चली
तूने क्यों प्रभु से मुख मोड दिया ध्यान०

४ बार ही बार फिरा जग भीतर
जीवन की सब जूनन में
'ब्रह्मानन्द' भजा भगवंत नहीं
भव सागर में सिर बोड दिया ध्यान०



१०१)

कीर्तन—देवी चरण चा'निय भक्त सो.रन छिय।
इमोय शरण करोय नमो नमस्ते ॥

१ संकट हरण कवच चा'निय परन छिय
कमल चरण चा'निय भक्त'न वरन छिय
प्रेयम भरन यत भव सरस तरन छिय इमोय०

२ यति पूर्य त्रावक तत जायि नेत्र जरन छिय
मंगल रूपी ध्यानस चा'निस सो'रन छिय
'कृष्णास' सू'ति ह्यत स्तुता चा'न्य परन छिय इमोय०



(१०२)

त्रिज़गत नाथ. परम. आनन्दै सत्चित् रूप. च्यय पान वंदै।

१ कुस व'नित ह्यकि महिमां चोनुय क'मि चोनुय प्रभाव ज़ोनुय
हे निरञ्जन. हे निद्वन्दै सत्०

२ चानि आसर. हरि हरै हे सत्य रूप. च्यय पत ब. मरै
छुस ब. लज्जित स्यठा शरमंदै सत्०

३ कुस च्य'य ह्यु व बनि परम. मित्र बंध बांधव सा'रिय छि शत्रुय
निर्मल. निष्कल. गोविंदै सत्०

४ भव.सरस लो'भुम न. तार.य गोलुम च्यय पत लो'कचार.य
मोकलावतम मोह.नि फंदै सत्०

५ ऋषि बालुक छुस छमन. चाहत मनस.य म्य ग'छम धन संपत
छम म्य चाह ज़ानन.च ज्ञान. इंदै सत्०

६ संपदा आपदा ज्ञान. र'स्तिस आपदा संपदा ज्ञान. स'स्तिस
ज्ञान. हीलस वखनान अंधै सत्०

७ रचना ज़गत.च स्वप्न माया सत बननिय पनञी छय छ़ाया
ज्ञान निश मत थवतं म्य अंदै सत०

८ 'ठाकुरस' चा'न्य अभेद भक्ती यलि बन्यस सो.य गयि मुक्ती
नत. क्या करि खा'ली चंदै सत०

---

(१०३)

गा'फिल म. बन पायस प्यतो. तस जानि जानस वो.न दितो ।

१ दो.र च्यय पनुन मो.र ज़ोनथुय रज़ि गो.य सरुफ पोज़ मोनथुय
सत्संग गंगि अमृत च्यतो तस०

२ दिल साफ थावतो आईनै मल गालतस तुलतस च्. ख्यय
छ़ोटि पा'ठिय कथ मटि चय ह्यतो तस०

३ दिलन.य सहल कोर मुश्किलय ब्रेठयोक त. ज़ेठयोव मंज़िलय
स्यज़ि वति पकनस प्यठ इतो तस०

४ यलि च.य दिलसय संकल्प करक चलनय च्य शाक त्रावक च फ़क
शुद्ध सात्वकी भोजन ख्यतो तस०

ज्ञान जानि जान छुय पान पनुन छ़ुयनो च्य केंह छ़ां'डित अनुन
सत्संग द्वार वार. पय ह्यतो तस०

वननुय छु केंह बननुय छु केंह 'ठाकुर' पान पननुय छु केंह
गुरु मुख सर कर वर दितो तस०

(१०४)

१ हे प्रभु ! अज्ञान का'सित योग दिम विज्ञान दिम ।
अंग हीनस दिम म्य काया मुर्दं जिस्मस जान दिम ॥

२ शक्ति र'स्तिस दिम म्य शक्ती भक्ति र'स्तिस दिम म्य भक्ती
एक भक्तिस दो.शर्व दिम ई म्य धर्मस् दान दिम०

३ पकनस क्युत ओन त. रोन छुस भक्ति क्युत छुस न्यथ नोन
ज्ञान वाल्यन योगियन क्युत गिदनुक सामान दिम०

४ हीन छुस विद्यायि अंदर दीन छुस श्रद्धायि मंज़
हान छम प्रत कुनि कर्म.चि सत् ज़नन मज़ मान दिम हे०

५ ब्रोंठ कुन पानस अ'नित श्रवण करुम व्याख्यान दिम
लूक युथ मोहित गछन त्युथ मुखस निर्वाण दिम हे०

६ क्रम गछ्न अद ईर. खस हिवि होशकुय तूफान दिम
गोफ शाल खोचन म्य पान सहसु'द ह्यु व त्राण दिम हे०

७ जय जय श्री रामच.न्द्रस त'मि सु'दुय वर दान दिम
क्षय गछ्य्म इन्द्रिय शुत्रन वीर धर्मु'क कान दिम हे०

८ यसि युक्तियि बनि मुक्ती तमिकुय विज्ञान दिम
दित मनोजय वासना क्षय सत स्वरूपचि ज़ान दिम हे०

९ सर्व मंगल परम सुख दिम हर्ष दिम कल्यान दिम
अंत कालस मज़ ख्यालस सत् स्वरूपुक ध्यान दिम हे०

१० बाग दिम बंगाल दिम हमाम दिम डालान दिम
रायि रोस्तुय इम बनन निम ज़ायि आलीशान दिम हे०

११ ज़ीवतुक भ्रम चलन बापत पानलय ह्यु व पान दिम
ध्यान 'कृष्णस योग ह्यत दिम भोग अमि यमि सान दिम हे०



(१०५)

१ वनुन आज़ाद ज़ि यक निर्णय
करुन गछि़ पा'नि पानस जय।
क'रित भक्ती च्य मुक्ती छय
करुन गछि़ पा'नि पानस जय॥

२ ब हर सो वुछ तसुन्दुय रूप
विवेक.य नोम प्रज़लाव धूप
त'मिस रुस्त वुछ छय मा कांह शय करुन०

३ चित्त.य नोम शीश युस छुय चोन
विद्वानव ज्ञान वानव ज़ोन
करुन निर्मल त. कासुस खय करुन०

४ चित्तक गुर वार पकनावुन
द'छिनि खोव.यं म. वुछिनावुन
विचार.कि कोच त्रावुस हय करुन०

५ सिलाह सामान युद्ध वेष गंड
दिवान गछ सर्व विषयन दंड
सो गयि निष्काम कर्म.चि क्रय करुन०

६ प्रमाद आलस्य पथर त्रा'वित
उद्योग.कि जाम. पा'रा'वित
च. कर संकल्प चूरस चाय करुन०

७ रटुन मोह. राज दिस गर्दन
छु दुर्योधन च. बन अर्जुन
ननक बहादुर बनक निर्भय करुन०

८ श'त्रु गालित च. मित्रन मंज़
क'रि संयोग. हर्षुक संज़
लभक विश्राम स्यद्र गव तय करुन०

९ छु वथरित फश त हर्षुक प्रंय
ख'सित संयोग न्य'न्दरे शोंग
भ'रित खास्यन छु आनन्द मय करुन०

१० यि जानुन छुय स्यठाह मुश्किल
यि गव संयोगकुय मंज़िल
बि गव निर्वाण थानुक पय करुन०

११ रटुन मन बुद्ध चित्तस कुन गछ
ब. सोऽहं सो अंदर कुन अछ
अचेतस सू.ति सुचेत करन करुन०

१२ सो.रुन सत् चित्त आनन्दय
लभक त्यलि परम अरनन्दय
स्व आनन्द तत अंदर गछि लय करुन०

१३ अगर ज़ानक च. पननुय पान
करुस अर्पण च. मन बुद्ध प्राण
पन.न्य सर पा'नि पानस प्रय करुन०

१४ ह्तो 'विष्णो' म. गछ दिलगीर
पूर्व कर्मुक यि छुय ता सीर
पन न्य कर बुद्ध टोठिय दय करुन०



(१०६)

१ देह्किस द्वारस ल.यि त्रो पराव.न्यि
मोह. निशि चित्त छुय प्रावुन हो।
वावस मंज़बाग चोंग संदारुन
सत् विचारुन सोऽहं सो ॥ सत्०

२ मनचै पछ्वियि गाश ह्यत. सारुन
शशिकलि प्रभात फो.लवुन ह्यु व
द्धादशांत मंज़ चित्त सिर्यि गछि खारुन सत्०

३ गुरु शब्द निरोध किन्य. हां'गिजि हारुन
यछि वोंद पछि सिंधि सावुन ह्यु व
पुक्तकार मोक्त समंदर गछि खारन सत्०

४ प्राणस त. पवनस मन मिलनावुन
ध्यान धारणायि किन्य धारुन ह्यु व
तमि योग ज्योति रूप ब्रह्म विस्तारुन सत्०

५ ज़ाग्रत त्रा'वित स्वप्न प्रकटावुन
सुषुप्ति मंज़ सुख प्रावुन ह्यु व
तुर्यायि सू.ति चित्त लयि संदारुन सत०

६ पद्यव रुस्न मद होस्त विस्तार तारुन
शमशेरि धारि व'यठ लारुन ह्यु व
पख उपज़ावित वुफि गछि तारुन सत०

७ दम ह्यथ दमनस मन. सोनुर गारुन
देह मायायि त्राम कारुन ह्यु व
ज्ञान सोन. चित्त कहवचि गछि खारुन सत०

८ 'चन्द्रो' अन्दरी वाव ह्यत तारुन
ओबर तल सिर्यि प्रकटावुन ह्यु व
अंधकार च'लित गटि गाश ह्यक सारुन सत०

---

(१०७)

१ जाफ.ां पोशस छु लक्ष्मी अंग ता'य।
सो.न सुन्द रंग ता'य पूज़ायि लाग॥
२ सत्य देव लक्ष्मी नारायण ता'य
सर्व देव ह्यथ कासिय दुर्गत
पोश पूज़ कर तस अन्न धन मंग ता'य सोन०

३ मादलि हियि पंपोशन ढेर कर
तुलसी छा'वि छा'वि शेरतस पान
सुन्दर डयूकसय टयोक लाग कोंग ता'य सोन०

४ सुय दियि मोक्ष आय अश्र धन धार
धारणा ध्यान ज्ञान योग विचार
वसनस नाव खसनस क्युत अंग ता'य सोन०

५ सत्पुरुषन निश ह्यछ करुन भक्ति भाव
तिहंदयन पादन तल पान त्राव
पान थव दास भाव तिम बरहंग ता'य सोन०

६ साध छुय पूज़नीय तसुन्दुय मन छु सेर
सुश्का ह्यत च़रण कमलन नेर
आ'ल मान राधा कृष्ण ज़ान रोंग ता'य सोन०

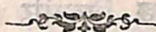
७ यूत ज़ानक त्यूत पूज़ि मंज़ लीन बन
भक्ति भावस मंज़ आधीन बन
सुय छुय रुत सात सो.य रच ज़ंग ता'य सोन०

८ सोय दया संगतस भक्ति भावस सान
योस कासिय रोग देह अभिमान
व्यवहारन छुक अोनमुत टंग ता'य सोन०

९ ज्ञान कुलिसय छिय शम दम लग ता'य
शान्ती मूल मोक्ष त्युहुरुय छुस
ख्यत भक्ति भाव रस अ'थ्य टंग ता'य सोन०

१० ब्रह्मांड पान ज़ान वार. सैरस नेर
मार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर
ज़ोर. मुचराव चित्त तोरगस डंग ता'य सोन०

११ अज्ञान. गटि मंज प्रज़लाव दीपय
शंकर 'कृष्ण' एक रूपय छुय
यी वनान साध संत क'रित सत्संग ता'य सोन०



(१०८)

श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न' मंज़ केंह श्लोक॥

रस पूर्ण परम सदा शिवह। सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

दीन चा'नि नव निध अष्ट सिद्धह जीवन हंदि करुणा निधह
गलि गलि अमृत इमव च्यवह सत्०

कुंभज सजना चा'न्य करह गागरि मंज इतम सागरह
ज़्यव दिम तिछ़ युथ चानि गीत ग्यवह सत्०

छ़यून्मच् सो आशाव पाशव सान आशो मटि छुय पान दपान
हे शिव! थ'वमै म्य आशवै सत्०

पानस पानै छ़ु मेलनुय गिंदुना छ़ु गिंदुन त. गेलनुय
सोन नेरि नार मंज़ गलि ज़्वह सत्०

देह दृष्ट गलि च़लि अभिमान अद बनि सत् स्वरूप ज्ञान
कृष्णास युथ ज़ि मेलि उद्धवह सत्०

युस इछ़ि सुय सुय तस इछ़े गछ़ि यस सुय सुय तस गछ़
इछ़ि पछ़ि त'मिसय प्रारवह सत्०

८ लोलय छु ग्रोर योर मुलवनुय लोलय छ ग्रोर योर ललवुनय
लोल सू.ति सुय लोल ललवह सत्०

९ केंह छुन लोल रुस्त ग्रासवुन लोलय छु सार व्याध कासवुन
लोलके गाश गट कासवह सत्०

१० लोल बोज़ बोल वोज्ञ बोवनै लोलय छ चोदाह भवनय
शोलवुन छ लोरुय लोलवह सत्०

११ लोल सू.ति उलसन ग्रायि ज़ग
लोल सू.ति छम भ'रित पय ता'य रग
लोल परमानन्द प्राववह सत्०

१२ 'परमानन्द' बोज़ दय गत वो.थ त्राव सा'र्य मत मो च मत
कथ बोज़ नत. क्या यि क्रव क्रवह सत्०



(१०१)

१ यस छ हटि वासुक तस छ जटि पोज्ञ।
गो.सोज्ञ हा'य गो.सोज्ञ हा'य गो सोज्ञ हा य गो.सोज्ञ ।।

२ युस देव सर्व देवन हुंद छु ग्राद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद
यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हर मुख बर तल लायोस नाद
पादव त'लि छुस पकान सिध वोज्ञ गोसोज्ञ०

३ युस थ्यकनुय छु देवियन त॰ देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसवुन छु मंज़ जीवन
प्राण धा'रियन क्युत छु मंजीवन
सुय नंग नोन च्योन दियि गंग वोञ गोसोञ॰

४ पूर्णायि सोस्ता छु नूर भ'रिथय
ब्रह्मांडन पालना करिथय
सुख मुख सू.ति छुय दुख ह'रिथय
वर-अभय सू.तिन छुय व'रिथय
य'मि सू.ति पानस न्युव सो.दि वोञ गोसोञ॰

५ जन्मन हंज़ व्या'ध ज़ालवुन छुय
ज़्यन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि सदि खोत पालवुन छुय
सात्रि कर्म भूतरा'च् वालवुन छुय
आत्म बोधुक रूद शांतियि शोञ गोसोञ॰

६ प्रेम मस चावि म'शरावि हन हन
सत भावि नित थावि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ हावि ज़ोतन तन
'कृष्णास' प्यठ आवि शांतियि शोञ गोसोञ॰



(११०)

१ श्री निराकारै त्रिभुवन सारै प्रारै पनने यारै बल।
भस्मा धारै छम चा'ञ लादन साधन प्यमयो पादन तल।

२ लमयो जामन रटयो दामन शिवनाथ छम चा'ञ मन कामन
त्रिज़गत्पालै इत सानि सालै चावतं प्यालै अमृत ज़ल०

३ त्रिभुवन सारो हनि हनि मंज़ छुक मायायि सू.ति छुकन ह्वान द्रेंठ
सत्चित्त आनन्द गोविद केवल जाय चा'ञ हृदयुक पंपोश डल०

४ मनकिस बागस फुलया द्रायै रछव.नि लछ.नावि अछपोश छाव
शोक चानि प्रेमुक बुलबुल छु नालान
बोलान लोल.नै दिदरित. जल०

५ हे 'कृष्ण' ! वासना शुद्ध थव स्योध थव
बुद्ध थव सतसय कुन सन्निधान
सतस.य कन थव सतस.य मन थव
सतकिस कुलिस वसि आनन्द फल०



पर त. पान य'मि समुय मोनुय य'मि हिवुय मोनुय दिन क्यो रात
य'मिस अद्वय मन सां'पुन त'मिय ड्यूठुय सुर गुरु नाथ
—ललेश्वरी

(१११)

—स्व० मास्टर ज़िंदा कौल

१ कर सना ह्यथि ज़न्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव।
कर सना इयि भाति असि पोज़ रुत सुन्दर श्री कृष्ण देव॥

२ कर सना गट कूठरे अनि गाश वुज़मुत स्व प्रकाश
बांदिवान.चि बेडि फुटरित खोलि बर श्री कृष्ण देव०

३ वैर लोभ त. द्वेष ता'य अन्याय रूपी दानवन
चक्र सू.ति अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव०

४ ज़ोर ज़र रस्त्यन दरिद्रन दलितन करि यावरी
द'दिम.त्यन शेहलावि दित शीतल नज़र श्री कृष्ण देव०

५ अर्ज़ुनस दित आज्ञा बददिल म. बन थोद वुथ च. लड
कासि ना असि दीनता परती हचे़र श्री कृष्ण देव०

६ कृष्ण पूज़ा क्या छय ? पालुन त'सि सुँदुय थोद कर्म योग
धर्मचे वति हुंद बनावुन राहबर श्री कृष्ण देव०

७ यथि न. वरतावस ओनुन गीतायि हुँद अक ओड श्लोक
लाभ क्या थ्यक.नावनुय लूकन अंदर श्री कृष्ण देव०

८ का'र नोमरित दित वुथिम अथ अ'सि वदव ना शर्मि सू.ति
वुच्छ्यनस असि मंज़ अगर इयि चक्रधर श्री कृष्ण देव०

९ सा'नि दुख ता'य दा'दि त'मिसं दि इम्तिहान निष्ठायि मंज़
हाल निशि न त. सानि व'निज्या बेखबर श्री कृष्ण देव०

१० कृष्ण सं.दे लोल इम आम.ति छि यो.त श्री कृष्ण भक्त
अज कर्यक प'जि किञ सफल ज़न्मुक सफ़र श्री कृष्ण देव०



(११२)

पा'नि पानस दितो वो.नये।
हाविय शुभ दर्शुंनये॥

१ संसार कठोर छु हुन्ये.नये वुछत यति कँह न. लारुनये
कुनि रंग नाव तारुनये हाविय०

२ भक्ति कामधेन रछुनये वासनायि घास दिस ख्योनये
गुरु शब्द वो.छ लागुनये हाविय०

३ विचार ह्यस दिस घोनये ज्ञान अमृत ह्ययि द्युनये
संतोष दज्जि फयारुनये हाविय०

४ वैराग ल्यजि कारुनये ध्यान. ज़ागि सू.ति ह्ययि ज्योनये
ह्यन लो.लि ललनावुनये हाविय०

५ चित्त क.यि शेहलावूनये सोऽहं दोन त्रावुनये
रात दोह ह्यन मंदुनये हाविय०

६ नेर्यस प्रकाश. थ'व्यिये देह गुरुसस मंज़ न'व्यिये
आत्म देव ग्यव रछुनये हाविय०

७ दारि बर बंद करुनये यि रत्न ह्ययि चमकुनये
दो.गुन गछि ओंगुनये हाविय०

८ प्रज़नाव पान पनुनये ग्रद कति ज़गत भ्यो.नये
चित्त प्रकाश ह्यथि उलसुनये हावियः

९ फलि निश कुल कति भ्योनये फ'लिस.य मंज़ सु ग्रास. वुनये
सुय फोल. ह्यवान फो.लुनये हावियः

१० कति रोज़ुन त. मरुणये दु.य गलि पत रोज़ि कुनये
कुस धारि कस होरुनये हाविनः

११ इच्छा कुल गालुनये त्यलि क्याह नो.न वनुनये
'भक्तिस' ह्याल भावुनये हावियः

—स्व० श्री नन्द लाल जी त्रालवासी

---

(११३)

१ परिपूरण छु नूर. भो.रमुतये—सूर.मोतये ग्रांगन चाव।

२ शांत निर्मल ग्रोंत कास.वुनये
भास वुनये सास रव जन
शिव शंभो ग्रलक्ष्य बोल वनये सूरः

३ नंग भस्मा ग्रगन मो.लमुतये
हटि भुजंग जटि छस गंग
डय्कि चन्द्रम टिक. शोलवुनये सूरः

४ ग्रलक्ष्य बूज़ित तिम. सूर्य भाये
ग्रसुधायि सान करान विनती
धन. ह्यारव भो.रहस फो.तये सूरः

५ जोगि दोपनक योगी ज़ा'निव
भोग त्रा'वित छुस निराहार
कामदेवस भस्म कोर मुतये सूर०

६ लोभ च्चोम नहीं ना अभिलाषा
आशा यह एक मन में
कृष्ण दर्शन करनि आमुतये सूर०

७ राधे श्याम को बोलो आदेश
ईश जोगी वेष धर के
तमि अभिप्राय योर आमुतये सूर०

८ बूज़ जसुधायि ह्यस व्यस.रा'नी
स्वामी सा'त्र विनती बोज़
खोचि बालुक छु रात ज़ामुतये सूर०

९ चानि दर्शन गछि तस छाये
राय क्या छय माय मरहस
अघोर भैरव. फेर गछ पो.तये सूर०

१० जोगि वो.नस छक अनज़ा'नी
मान योगियन हुँद सरकार
राज़. ज़गि हुंद मा'जि ज़ामुतये सूर०

११ मार जगि हुँद वार. छुस वालुन
गालुन छुस दुष्ट संबन्ध
पालन कर्म वेदव वो.नमुतये सूर०

१२ त्र्यन भवनन भय. सुय कासान
भासान सु नित्य ननि नो.न
मूल ज़गि हुंद ब्योल वोव.सुतये सूर०

१३ योग. मायायि संयोग क'र्यथ.य
प्रेम. स'रिथ.य नित हर्षाण
कृष्ण. शंकर क'रित नाल.मोतये सूर०

१४ ईक्षण. किन्य कोरुक वार.संवाद
दर्शन. आ'सि हरषा'णी
ती वो.नुक ई ज़गतस' ह्योतये सूर०

१५ देव आकाश पोश वर्षा'णी
अछ-रछ मच नचनस गयि
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये सूर०

१६ नाद लोयुम त'तिय लोल म'तिये
रासुक भास या'न्य वनि आम
सास "भास्कर" ज़न पूरि खो.तये सूर०



(११४)

१ वन्दयो मुन्य ब. पादन छारथो राम. राधन।

२ विचार ना'गि वति लारै नुनर.कि तार. प्रारै
ब्रह्म.सर. किन्य दिमै वन्य छारथो०

३ अ'छिन हुंद गाश ग्योनुय खुश इच.वोन नुँद. बोनुय
का'लि राव्यम हिये तन छारथो॰

४ कश. तीर लोययं म्य लशि छम नार.न रेह
अशि फय'यन ईयेम तन छारथो॰

५ महा'लिशि किञ इमा'यो हरमुख ब'नि दिमा'यो
हंस. द्वार. ग'छित रटै वन छारथो॰

६ च. रुदहम कथ शाये क्रैक. न'दियि वो.ठ ब.लाये
गंग.बल युन छु आदन छारथो॰

७ गोस. नो कैंह म्य चोनुय दयन य'लि बान. जोनुय
चार. नो ला'नि वादन छारथो॰

८ च. ज़ि गोक म्य निश दूर इज़ि त्यलि यलि गछयं सूर
वुज़ि पोञ नाग. रादन छारथो॰

९ नाव तन त्राव कीनह साव मीर दो.द म्य सीनह
हाव मुख थाव लादन छारथो॰

१० बरञि बल युथ न. रावै राम. राम क्रख त्रावै
आलव दिज्यम म्य नादन छ रथो॰

११ नेत्रन मंज़ रटै पाद वुथि शेरि किञ दिमै नाद
मरयो वुञि छु आदन छारथो॰

१२ नाराण नाग. प्रारै वांगत जाय छारै
प्रारै सू.ति साधन छारथो॰

१३ सिर्यस छु गाश चोनुय तस छु "प्रकाश" चोनुय
सो.य छै योग. साधन छारथो॰

(११५)

१ सिर्यि वुज़नोवुम चंद्रम. सोवुम
तारकन दोवुम शून्य मंज़. थान।
गाश.सू.ति गाशुक गाश प्रज़नोवुम
सुवह रूप होवुम श्याम. लालन ॥

२ दिन त. रात पा'द गयि सिर्यि प्रक्रम. सुवह
चन्द्रमन प्याल. स यं शबनम सू ति
तमि प्याल. श्याम.लाल दामा चोवुम सुवह०

३ मन गुलि आफ्ताब ज़न फो.ल नोवुम
सिर्यि गंज़रोवुम परमात्मा
तत कुन मुख हा'वित सुख प्रोवुम सुवह०

४ आत्म. तीर्थ.मार्तण्ड. मंज़ तन ना'वम
पितृ लोकस दा'वम तृप्ती
तमि कर्म.ऋ्यन हुंद ऋ्ण मो.कलोवुम सुवह०

५ निर्वासनकुय आसन प्रोवुम
तति बेहनोवुम प्रत्यक्ष देव
निर्मल पंपोश. डल फोलनोवुम सुवह०

६ श्री 'कृष्णस' सू ति दोह गुज़रोवुम
शामन होवुम त'मि श्याम. रूप
सुबहस सू.तिन शाम मिलनोवुम सुबह०

(११६)

१ अ'रिञ्चि रंग गोम आवन हिये।
कर इये दर्शन दिये॥

२ श्याम. सोन्दर पामन ल'ज़िस
आम. तावह कोताह ग'ज़िस
नाम. पैगाम तस कुस निये कर०

३ कंद नावद आरुदमुतुय
फंद क'रित चोलुम कोतुय
खंद. क'यनम लूकन थिये कर०

४ सुलि वोथवो संगर मालन
लाल. छारोन कोहन त. बालन
प्रारान छुस ब. तहंज़ि जिये कर०

—अरन्यिमाल



(११७)

१ मुझे राम से कोई मिला दे।
बिन लाठी का निकला अँधा—राह से कोई लगादे मुझे०

२ कोई कहे वह बसे अवध में
कोई कहे वृंदावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
कोई कहे मिलते बन में
देख सकूँ मैं उनको मन में—ऐसी जोत जगादे मुझे०

ओं नमो भवान्यै ।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(अष्टम् - तरंग)

(११८)

१ स्मरणि चाञि पाप सा'री हा'री—हारै पर्वत चि हा'रिये ।

२ संकट कट छक हे मुकट धारी
तेज़ चानि प्रज़लन आव संसार
सिंह आसन चिय छय सवा'री हारै०

३ गौरी नावस लगोय पा'यै पा'री
चाव प्रेम दो.ध चडवा'रिये
जाननक अभिनव गुप्त आचा'री हारै०

४ न'टि लछ़लि आकाशन ग्रटन ता'री
नोन नीरित वोन महिमा चोन
परम शक्त मा'ञिक शंकराचा'री हारै०

५ शिव शक्ति रूप ज़ा'नित चो.पा'री
गुलि ग'डित नन्य वुन्य या'री स्य कर
ह्यथ नखस नियनक मं'ज़ कष्टवा'री हारै०

६ नित्य सुमेरुस ता'व ला'यं ला'री
कति आ'स वातन चि शक्त ओस सख्त
पर्बत प्रदक्षिण पाप निवा'री हारै०

७ शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय
नो.व न'वराव त्राव प्रोनुय याद
हाल मोव वाल पापन हंदि बा'री हारॆ०

८ आद्य शक्त पान.छक सर्व अधिका'री
पूज़ा करव.नि सा'रिय च्यय
साध संत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचा'री हार०

९ चक्रेश्वरस य छु जय जय कारय
सार्यव.य रो.ट दरबार.य सुय
सिद्ध पीठ प्यठ गयि सिद्ध ह्यत सा'री हार०

१० चानि सू.ति सा'यं देव जीव व्यवहा'री
चानि सू.ति उल्लसन आव संसार
चानि सू.ति सा'नी छय दुनियादा'री हारॆ०

११ अष्टादश भुज़वय सू.ति पर्बत.
हित.कार. पुछि छक बत. बा'गरान
सर्व व्यापक छक सर्व उपका'री हार०

१२ कर्म लेखा छक पान. परम शक्ती
कर्म सान्य पनन्यिय भक्ती लेख
कृत कर्म फल छक दिव. व.नि सा'री हार०

१३ अज़पा गायत्री ज़पहोथ अंन्दरी
श्री सुन्दरी योग. न्य'न्दरे मंज़
मन. प्राण ध्यान ज्ञान. विचा'री हारॆ०

१४ परमात्म॰ रूप॰ छक ज़गत.चि साक्षी
जितेन्द्रिय इन्द्राक्षी छक
प्राण शक्ति सू.ति छक पान॰ व्यवहा'री हा'रै॰

१५ पान॰ छक योगी पान॰ ज्ञा'नी
वाणी रूप भवानी छक
बुज़ सू.ति ह्यस रटन.चि विस्ता'री हा'रै॰

१६ चामर लाग.होय पोश चा'यँ चा'री
चण्डी च.य छक चेतन स्वरूप
चि़त्त शक्त छक चेनव.न्य चो़पा'री हा'रै॰

१७ मोह ज़ाल मंज़॰ नेरनुक उपाया
कर राज़॰ हंसुन साया त्राव
हंस नाद सू.ति तार यमि हंस द्वा'री हा'रै॰

१८ हीमाल पर्वत.न्य राज़॰ कुमा'री
चरणन लगोय पा'यँ पा'रीये
'कृष्णन्य' भक्ति बोज़ कन धा'यँ धा'री हा'रै॰



(११६)

१ हीमाल॰ पर्वतने घरि ज़ायक।
आयक करने जगि पालना॥

परम शक्त परम॰ शिव छांड.नि द्रायक
कर्म॰ सू.ति सां'पन्यिक शिव शक़्ति रूप
भगवत् माया बोज़.न॰ आयक आयक॰

३ परमात्म· सिर्यि मंज़. तेज़ा द्रायक
प्रज़ल·नि आयक संसारस
यमि मंज़ द्रायक त'थि मंज चायक आयक०

४ जगत·चि दाता छक फल दायक
यस च्.य दिख तस दिग शिवजी
सुय च्य लायक च्.य तस दायक आयक०

५ वरण इयिय ह्यथ वैकुँठ नायक
वीगिस खसनस छुय छायक
मान·येष्य पतिव्रता सती द्रायक आयक०

६ 'कृष्ण' लोल· तारव सेतार वायक
वाणी भवानी च्यय गछिय सिद्ध
सुय करि नाद बिंदु बोज़नस लायक आयक०



(१२०)

मिलाप

१ पानै म्य पान हा'वित आशायि धारना'वित।
तन्हा चो लुक म्य थावित कस ? म्यानि जोगि रायो ॥

२ वुछनोवथस मनुक मल सो·न म्योन द्राव सरतल
वुछमक न· वार· को·रथं चस म्यानि जोगि रायो

३ ह्यकखै वुछित च· तिम छोख मुच़रित ब· सीन· हावय
चय वन च्य रुस्त मावय कस ? म्यानि जोगि रायो

४ यव किञ बे सुम छय कोमल हृदयस कठोर वाणी
ग्रावन दिमव यतिय छ्यन बस ? म्यानि ज़ोगि रायो

५ लो.भमक त. वो.ञ म. रावुम बालन कोहन म. छावुम
सत्संग. प्लाल. चावुम मस. म्यानि जोगि रायो

६ भगवान सोन बूज़िन असि आश चा'ञ रूज़िन
हथ वा'सि माजि मा'लिस लस. म्यानि जोगि रायो

७ नित्य इष्ट देव. सद्यन पंपोश. पादन य तल
बंबुर ब'नित चवान गछ्र रस. म्यानि जोगि रायो

८ पज़ि प्रेयमके प्रभावय भोगान सुख त. सावय
निराग राज़. योगस खस. म्यानि जोगि रायो

९ दय. सुद प्रसाद सत्ज़न भक्तन छि बा'ग रावान
प्रेमुक चवान त. चावान मस. म्यानि जोगि रायो

१० ब.ति चा'ञ दा'सिया छस च्यय मूल. माल. अर्पण
युथ छुक च. इष्ट देवस तस. म्यानि जोगि रायो

११ उपकार. म्यानि बापत थो.द योग. पोठ त्रा'वित
असि निशिति क्यूंच काला बस. म्यानि जोगि रायो

१२ भाषण मधुर मधुर कर फुटराव शकरस मो.ल
अभिमान कोसमन हर अस. म्यानि जोगि रायो



(१२१)

१ आमच् मनस रच् वासना ईश्वर सफल करिनासना।

२ एकांतकिस गुहलिस अंदर उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपोश. पादन दो.न मलान पननिस गुरुस बो आस हा०

३ पूजायि विध केंह ज़ान. मा लोलस निषध केंह मान मा
छ्यूपि चूरि कुनि म्यूठा दिवान लो.त तथ खो.रस बो आस हा०

४ य'च् लोल. अ'छि वछ् थाववुन अ'छ टींटि रुस्त वोश त्राववुन
सुन्दर मुखचि इकांती वुछान तस सुन्दरस बो आस हा०

५ वाणी तस ज़ विज्ञान मय ज़न साम ग्यवनस पान दय
तन मन ब'नित कन बोज़वुन मधुरिस बो आस. हा०

६ सन् शब्द नोन विस्तारिहे उद्गीत स्वर थोद खारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान श्रवणुक सुरस बो आस हा०

७ बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत संसार निश मोकलित गोमुत
पुशरित पनुन सोरुय गत परमेश्वरस बो आस हा०

८ 'वुज़ तात.' व'नि व'नि गारिहम
कर. पदन. हृदयस सारिहम
जल विंदु ज़न मीलित. गोमुत
सुख. सागरस बो आसहा०



(१२२)

१ हतो ज़ीवो तसंज्ञ थव कल च़. प्रावक सर्वंदा मंगल

२ खबर मा छै ब. कव. ज़ायोस कर्नि क्याह योर ब.य आयोस
सु मेहनत कर लभक रुत फल च़०

३ म. रावर क्षण त. दिन लस विन सोरुन हरदम च़ ज़ीनित मन
प्रेयम ज़ल च़य मनुक मल छल च़०

४ सतन सू.तिन च़. सत् सांपन च़. सत् आ'सित असत् मो बन
अचल आ'सित म. बन च़ञ्चल च़०

५ क'रित तय व्रोथ च़. थानन फेर र'टित दम दम क'रित च़.य नेर
वज़िय ज्योति वुज़ी शशिकल च़.०

६ इमन अंदर नज़र था'वित पनुन तेज़ा दियम हा'वित
सिर्यि चन्द्रम अग्न वुज़मल च़०

७ न्यज़ितहठ वठ च़. इन्द्रिय ज़ाल
यि काम क्रोध लोभ त. मोह मद गाल
उदासीन रोज़ त. भोग अन्न ज़ल च़०

८ गछ्युन युन योस गछ़िय च्यय हान
तम्युक काहण च़. ज्ञान अज्ञान
विचार कर बनि सू मुश्किल हल च़०

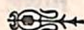
९ च़. भूतन करत. बिसर्ज़न स्व आत्म चि ज़ान आबाहन
ज़्यनह मरण. चि च़लिय गांगल च़०

१० च. मित्रस अथि पनुन जर थाव समुद्रस वस त. वस्वास आव
च. लाल खारकत. लाग डूंगल च०

११ हंस आ'सित च मो बन काव हंस बन दीध त. पोज़ अंज़राव
स्व स्मृत अन सिरन मो डल च०

१२ अं'द.यं किज सारिकुय कर त्याग न्यब.यं किज सारिकुय थव राग
वैराग तनि राग. ज़ाम वल च०

१३ च. 'नीलहकंठ' कर सन्यास नदी उपाध पानस कास
च. सू.तिन तत्त समुद्रस रल च०



(१२३)

१ मनि मंज़ ललवथ कन्हैया लालो।
भय हर बाल. गोपालो वे ॥

२ भय. मज कडतम् दयि अकालो
रक्षपाल. हा कृपालो वे
प्रेम. रस. भरतम् मनकुय प्यालो भय०

३ गोपियन सु.तिन मारव.नि छालो
दुख हर, भक्त रक्षपालो वे
ज़न्म गम कास्तम् कठ.नि कालो भय०

४ दूयंर चोनुय कोताह चालो
वलनै आस ज़न्म जालो वे
द्यान. दुकारि तथ बनि परनालो भय०

५ खटतं मत. पान रटथो नालो
आस्तम् च. नालाी नालो वे
लूस्मुत प्राश. वोञ कोताह् कालो भय०

६ हारान वुछ्त. छुस अशवे चालो
लालो ! छंति गा'म लालो वे
बालि आम बुज़र ता'थ क'हि संभालो भय०

७ दोह् आम सोरान छ'ति गा'म वालो
पलि केंह् ति पोवुम न. मालो वे
अथ छीन त. न्यथ नोन छुस बे हालो भय०

८ यलि वनि संयोग आसि कुस कालो
दूय रोज़ि न. कुनि कालो वे
गुरु शब्द एकुत बनि नन्दलालो भय०

९ नय छुक आकाश नय पातालो
नय छुक जंगल त. बालो वे
वनि छुकन इवान आ'सित ना'ली नालो भय०

१० मन सर-कुय बन राज़ निरालो
'नीलकंठनि' छुय सालो वे
रछ़तम संकट यमि कलि कालो भय०



(१२४)

१ नाद बिन्द॰ परमानन्द नन्द लालै।
गोकुलानन्द॰ गोविन्द॰ गोपालै॥

२ मधु कैटभ मारव॰नि हा दो॰ध चूरै
मन॰ मंज़लिस मंज़ करै गूर् गूरै
गोपी नाथ॰ बाल॰ त्रिज़गत पालै गोकु॰

३ यादव कुलके माधव रामै
हे निर्मल निष्कल॰ निष्कामै
गूर्यं बालकन सू॰ति मारवनि छालै गोकु॰

४ राधा-कृष्ण च्यय नादा लायय
श्रीधर प्रेम॰ स्वर मुरली वायय
रोज़ राम॰ बोज़ साम वे॰दचि तालै गोकु॰

५ हृदयस मंज़ बसवनि नित्य लसव॰नि
असवनि आसवनि गरुडस खसव॰नि
नाल॰मति रटहत मो दिम डालै गोकु॰

६ हर्नि हर्नि मंज आसवनि वासुदेवै
रास मंडुल खेलव॰नि कृष्ण देवै
नित्य मासवनि सत यमि कलि कालै गोकु॰

७ पंकज तनि वैजयन्ती माला
तरज़ अकि ना'लि ता'य मौज दुवाला
संत छिय व'लित बसंत दुशालै गोकु॰

८ केशव॰ शिव रूप नारायणै
वुन दित नोन गोक बिंदराबनै
चोन ह्योत च'न प्रेम॰ मस प्याल प्यालै गोकु०

९ विदुर जियनुय घर॰ यलि चाख॰य
भावनायि सू ति ख्योथ सिवमुत हा॰खय
कति गोख तति कोरवन हंदि सालै गोकु०

१० द्रौपदियि अकि कृष्ण॰ नाव सू॰ति शामै
पैद॰नयि तस ति कू॰ति वस्त्र त॰ जामै
ईति क'डिस दुर्योधनन॰य नालै गोकु०

११ चाञि मायायि सू॰ति मंज़ द्वारिकाये
मथुरायि हंज़॰ हिश॰ लरि ता'य जाये
पैद॰ गयि अकि दम॰ मंज़ कमि हालै गोकु०

१२ अज़ामल द्राव बोड भाग्य वान॰य
निचविस नाव तस ओस नाराण॰य
मृत॰ विञि फूर तस श्री अकालै गोकु०

१३ श्री भगवान् छुख पान॰ प्रत शाये
कुस वोत कुस वाति चाञि मायाये
मोकलाव असि यमि मोहनि ज़ाल गोकु०

१४ 'कृष्णस' शिव रूप॰ दर्शन दित चय
सुय चय चय सुय केवल छुख न॰ चय
श्याम॰ प्रभात॰ रूप हावतस कालै गोकु०

(१२५

१ लत ला'इथ ससारस—पत. लारस ल'तिये।

२ हंस. नादकिस जानवारस ना'लि जाम. छिस छ'तिये
वुफि तार्यम हंस. द्वारस पत०

३ सूर कोर त'मि अंधकारस युस वोर सूर म'तिये
बु.ति धारणाय ध्यान धारस पत०

४ अथ तेज़ रूप आकारस फेर बँठि ता'य प'तिये
पोंपुर ज़न गत. मारस पत०

५ लोल फंबकिस अंबारस रेह म्य दिच़ सूर. म'तिये
स्रेह म्य छुम वोल्य कति प्रारस पत०

६ आरवल मंज लोल नारस द'ज़मच़ 'प्रियम सू.तिये
शेहजारस मंज़ छ आरस पत०

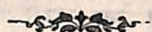
७ नित्य लग.हा सत विचारस सत भास्नाव स'तिये
स्वर फिरत. चित्त सेतारस पत०

८ वंदुन छुम पान यारस अंदुन छुम य'तिये
चन्दुन गोम देव. दारस पत०

९ ग्रज व'छ सोंद.य नारस यति आ'सित छु त'तिये
वन. वन स.य कन धारस पत०

१० छाल मा'यें मा'यें लोकचारस क'यें म्य पोशन फो.तिये
शेरि लागस जटा धारस पत०

११ 'कृष्णन' दुप बाल यारस करहस नाल य'तिये
मेलि श'स्तर त. संगि पारस पत०



(१२६)

१ चाल. छम अशिजे कोताह ब. चाल. लाल. ।
बाल. गोपाल म्या'ञ पालना कर ॥

२ गिदनस आमुत पायस न. प्योमुत
न्याय अज़राव नत रावय बो
त्रा'बित म्य कर-म डाल बाल. विशाल लाल. बाल०

३ कृष्ण ! चा'ञ द्र.य छम वायै बोज़क
लायय न. मोक्त मालि पुछि मो खोच
अक रटत नाल लाल. ब्ययि गंडै लोल माल. बाल०

४ देवता यी आ'सि अंदि प'खि बोज़नस
सेव करनस तस भगवानस
संतूर वायनस भैरव वेताल ताल. बाल०

५ पुशरुन छु मोक्त मालि माल कव छच'थं
मोक्त हार पुछि ब. मोक्त हारन छस
वात्यक न पनञिय वनतम छिनाल. लाल. बाल०

६ ह्यरि बोन लोभमक न. लूक मा ह्यडनम
छुक बालुक त. छुय न. हर्ष-शोक केंह
कृष्ण इम वनान छिय बननै छ़नाल.लाल बाल०

७ मनस ब्राह्मणस व'निस मंज न. आखो
ज़नार्दन. सु न. व.निस मंज़
काल ओस पोज़ त. म्य मारनं अकाल लाल. बाल०

८ मोक्त मालि पुछि पुक्त. प्राण गव ब्राह्मणस
सक्त गोस पानस ज़ि बापस चाव
इथि नय कद वुछान पान ज़ाल. लाल. बाल०

९ अ'रिस वुरिस रूग प्योस वा'तित
च'रिस गाटस खुर क्याह आस
राज हंस ज़ाल लोग चलनम न. ज़ाल. लाल. बाल०

१० संसार भ्रम छुय बा'ज्या त. बाज़ा
सूरसुत वाज कस फीरित आव
शश, पंज, चहार, सेह ब्यथि दुखाल लाल. बाल०

११ परमानन्द मोक्त हार. कथि कन थव
स'नि स'नि यति क्याह छि सोन डेशान
मुक्त गछि युस करि मोक्तस माल. लाल. बाल०

१२ 'परमानन्द' चन्द. छोन वुछान पानस
नत कति ओस तति मोक्तस मोल
प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्यार माल लाल. बाल०

---

(१९७)

भगवान् कृष्णुन मोक्त वुन

१ गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान ।
चित् विमर्श दीप्तिमान. भगवानो ॥

२ मोक्त मालि रोस्त लाम कृष्णस डेंशान
लारन त. नाल. मति रटानो
मुख डयूंठनस ता'य मुक्त आ'स गछान. चित्त०

३ शाह छुसन फोरन त. तोरै छुस प्रछान
मा'जि मोक्त ब्योल छा ववानो
स्य'ति वोव ब्योल खल कोन छक सोंबरान. चित्त०

४ हाव बो कू.ति लछ कुलि खसान.
बागस छि सास ब'दि बागवानो
तसली गोस छुम कृष्ण म'च़रावान चित्त०

५ मोक्तस त. स्य'चि छुन बालुक जानान.
स्य च्य क्याह छि य'च़ फिकिर असानो
मोचि क्याह पतकुन यि यस आसि मोचान. चित्त०

६ कृष्ण य ह्यकि स्यकि मोक्त आसि करान.
यछ़ पछ़ कोन छत्र 'आसानो
रूदमुत संशय रूद मोक्त. वालान. चित्त०

जसुधायि मोह. माया ह्यस डालान.
मोक्त क्याह ज़ि त्युथ मोक्त आसानो
युत छुन मोक्त मंज़ राज़ द्वारस ति मेलान. चित्त०

८ अंबना'वित छुसन. तमन्ना नेरान
रंबवञि मोक्त मालि सोरानो
छ'करित मालि बालि छुम तंबलावान. चित्त०

७ मनस ब्राह्मणस व'निस मंज़ न. आखो
ज़नार्दन. सु न. व.निस मंज़
काल ओस पोज़ त. म्य मारनं अकाल लाल. बाल०

८ मोक्त मालि पुछि पुक्त. प्राण गव ब्राह्मणस
सक्त गोस पानस ज़ि वापस चाव
इथि नय कद वुछान पान ज़ाल. लाल. बाल०

९ अ'रिस वुरिस रूग प्योस वा'तित
च'रिस गाटस खुर क्याह आस
राज हंस ज़ाल लोग चलनस न. ज़ाल. लाल. बाल०

१० संसार भ्रम छुय बा'ज्या त. बाज़ा
सूरमुत बाज कस फीरित आव
शश, पंज, चहार, सेह ब्यथि दुखाल लाल. बाल०

११ परमानन्द मोक्त हार. कथि कन थव
स'नि स'नि यति क्याह छि सोन डेशान
मुक्त गछि युस करि मोक्तस माल. लाल. बाल०

१२ 'परमानन्द' चन्द. छोन वुछान पानस
नत कति ओस तति मोक्तस मोल
प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्यार माल लाल. बाल०

---

(१८७)

भगवान् कृष्णुन मोक्त ववुन

१ गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान ।
चित् विमर्श दीप्तिमान. भगवानो ॥

२ मोक्त मालि रोस्त लाम कृष्णस डेंशान
लारन त. नाल. मति रटानो
मुख डयूंठनस ता'य मुक्त आ'स गछान. चित्त०

३ शाह छुसन फोरन त. तोरै छुस प्रछान
मा'जि मोक्त ब्योल छा ववानो
म्य'ति वोव ब्योल खल कोन छक सोंबरान. चित्त०

४ हाव बो कू.ति लछ कुलि खसान.
बागस छि सास ब'दि बागवानो
तसली गोस छुम कृष्ण म'च़रावान चित्त०

५ मोक्तस त. म्य'चि छुन बालुक जानान.
म्य चय क्याह छि य'च़ फिकिर असानो
मोचि़ क्याह पतकुन यि यस आसि मोचान. चित्त०

६ कृष्ण य ह्यकि स्यकि मोक्त आसि करान.
यछ़ पछ़ कोन छत्र 'आसानो
रूदमुत संशय रूद मोक्त. वालान. चित्त०

असुधायि मोह. माया ह्यस डालान.
मोक्त्त क्याह ज़ि त्युथ मोक्त आसानो
युत छुन मोक्त मंज़ राज द्वारस ति मेलान. चित्त०

८ अंबना'वित छुसन. तमन्ना नेरान
रंबवञि मोक्त मालि सोरानो
छ'करित मालि बालि छुम तंबलावान. चित्त०

९ ह्यत क्या गछि़ वोज़ सु प्रोहत वनान.
हीत छुमन रीत क्याह कव ज़ानो
ब'नित क्याह आम वनित कव ज़ान. चि़त्त०

१० करनम न. पछ़ मोक्त छुन आसान.
पछ़ क्याह छय श्री नाराणो
म्यचि़ मुर्य आ'स दित य'च़ आ'स भरान चित्त्०

११ जसुधायि ह्यस होश नजि रूदमुत दान.
मोक्त दान. पुछ्रि दान मनसानो
मोक्तसर ज़ि मायायि कांह छुन ज़ानान. चित्त०

१२ ज़गतस मोह अंधकार आव वलान.
बुद्ध छकन सिद्ध छिन प्रावानो
ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोष आसान चि़त्त०

१३ गरज़मंद लूक आ'सि गा'मति देवान
कृष्णजि कथि पछ छिय करानो
नेरि मा बोरि टंग द्यव नेरि अरमान. चि़त्त०

१४ पकन कृष्णस पत. पत. लारान.
जंगलस मंज़ बाग डेंशानो
मोक्त कुलि भ'र्य भ'र्य त. मोक्त फल नेरान. चि़त्त०

१५ भ'र्य भ'र्य छि मोक्त लंग पथर नमान.
मुफ्त ज़न सु मोक्त डार मेलानो
मथुरायि बूज़मुत मोक्त द्युन गुयंन दान. चि़त्त०

१६ आश्चय मायायि आयायि वुछान.
कारण त. ऋषि मुनियन सानो
अ'नि ज़न छि तिम ति तति असि हि़व्य गछ़ान. चि़त्त॰

१७ सोबरा'वि लूकव मोक्त अंबर खान
नन्द गोप मोक्त. ओस बा'गरानो
पंच, त्र्य भाग.नि फो.त फो ति मेनान. चि़त्त॰

१८ प्रोहत सूत्रमुत गणेष्ट त्रक सोंबरान.
दक्षिणा यि पूरि पूरि रिं़ज़वानो
पछ़ छ़यन् लूकन इवान त. नवान' चि़त्त॰

१९ घर. आख स'यि भ'यि वो.ञ छुकन. रोचान.
मोक्तय छि लूख तृप्त गछ़ानो
भगवान छु चो.पा'यि मो.क्तय छ़कान. चित्त॰

२० घर. आव प्रोहत ह्यत सोरि सामान.
धर्म त. दान य'च छु करानो
गू'र्य कामधेनन मो.क्त. माल. पा'रान. चि़त्त॰

२१ सास. बोज़. मोक्त. माल. तमि मालि खोत. जान.
रत्नव ज'र्य ज'र्य छि वुरानो
सो.ञन छि बोग ह्यत सु प्रोहत सोजान. चि़त्त॰

२२ तव पत गोकुल कि जग होम करान.
देवता कृष्णस छि पूज़ानो
इच्छ़ा भोज़न ब्राह्मणन ति ख्यावान चि़त्त॰

२३ नचनस त॰ गिंदनस गूर्य भायि तोषान॰
शुर्यन रटनस न॰ पोशानो
कृष्णास त॰ राधा मातायि वनवान॰ चित्त॰

२४ प्रोहत सु सूजमुत मोक्त॰ दक्षिणायि सान
ग्यवान त॰ य'च् गव रिवानो
धन॰ श्रवणास छुन॰ म्योन ह्यु्व खज़ान॰ चित्त॰

२५ बच्च भानस वति कुन अ'छि लोसान
ब्राह्मणास छु ताम दूरि डेंशानो
राज्य ज़न प्रा'वित बाज ह्यत ईवान॰ चित्त॰

२६ मा'रन छु मोक्त सो॰न स्वार्गी सामान
सास॰ ब'दि लूक ह्यथ छि पकानो
बार॰ बार॰ डेंशान त॰ बार॰ बार॰ वनान चित्त॰

२७ कोरसुत सु तदबीर घरि छुक रोज़ान॰
भगवत मायायि डेंशानो
वुछनस न॰ वननस न॰ बोज़नस न॰ ईवान॰ चित्त

२८ वनि क्याह कांछाह वनि छा ईवान॰
ब्राह्मणास ति छिन॰ प्रज़नावानो
सुशीलायि ज़न त॰ सुदाम वातान॰ चित्त॰

२९ डीशित मोकत माल रत्नव त॰ सो॰न सान
मोक्त॰ माल पनञिय छय मंदछानो
पन॰ पहा'र पनञिय छु सुदाम छारान॰ चित्त॰

३० डीशि डीशि सोर देश असन त. गिदान.
राधा मालायि तुतानो
डयक ब'ड कोस इछ् प्रज्ञि मंज़ आसान. चित्त०

३१ संपता नचनस त. वचन वनान.
हर्षस गोमुत सु बृक्ष भानो
शरण कृष्णस छय राधा गछान चित्त०

३२ ब्राह्मण अभ्यागत त. ऋषण सोंबरावान.
पजन. खोत आसि धन. खर्चानो
रज्ञिता'य प्रजि मंज़ आश्चर्य ज्ञानान चित्त०

३३ जग. होम ज़प तप ऋषि मुनी पूज़ान.
तुतान दोशवति त. वनवानो
देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यबान. चित्त०

३४ देवियि त. देवता धारणायि धाराण.
राधा कृष्ण. कृष्ण. जपानो
राज्य लक्ष्मियि मा'जि को.छि को.छि क्यत ह्यवान चित्त०

३५ व्यस. ता'य दास इम' खास खास आसान.
तिमन.य मू.ति घरि गिन्दानो
घरि घरि करिहे मनि कृष्णुन ध्यान. चित्त०

३६ यी मनि फोरान त. ता आस सो.रान.
प्रेम सू.ति वा'णियि वनानो
ब्ययि ब्ययि व'नि व'नि त. ब्ययि ब्ययि बनान. चित्त०

३७ "परमान्द" तति पादन प्यवान.
साधन सुय फल मंगानो
टूठिनस राधा सहित कृष्ण. भगवान. चित्०



(१२८

१ मधु कैटभ मारवनि युद्ध वेष धारवनि।
शुद्ध शांन दोध चूर. गूर.गूर. करयो ॥

२ शहर शहर. गाम गाम. राम. राम. परयो
दक्षरा उत्तर पछ्म पूर. गूर०

३ छिय बसंत रग जाम इन. चानि फोजम शाम.
लंजि-लजि मूर. मूर. गूर०

४ कर हृषो केश. राग द्वेषकिस शीशस
खजि खंजि चूर. चूर. गूर०

५ बंबूर. गीता छय गोपियि गावान
स्वर्ग. मंडल.चि हूर गूर०

६ सिर्यि दर्शन दित. मोह गटि मंज़ नित
इत. नूर.कि नूर गूर०

७ होश अ'लिशि पोश.किस गोशस प्यठ बेह
श्याम. रंग बंबूर. गूर०

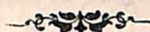
८ तुलमी छावय हियि तन नावँ
फ'लिल. मुश्क. काफूर. गूर०

९ मन.नकि तेलन. निधि ध्यासन टोठ
श्रवण.कि कन. दूर. गूर०

१० राज़. योग राज़ बोज़ सा'नि ताज ताज़ स्वर
प्रेम. साज़. संतूर. गूर०

११ देह. अभि मानुक कुल ह्ययि छननुय
तीव्र. वैराग. सूर. गूर०

१२ हे हरिहर.! पाप पाप हर "कृष्णस" कर
अनुग्रह पूर. पूर. गूर०



१ मंज़ पोश. बागन प्यठ नागरादन।
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति॥

२ कन थावत प्रेम भ'रत्यन नादन
आदन बाज़ि छुम लादन चा'अ
पूर्यर करतम था'वि न.त्यन वादन
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति



(१२६)

शिव निर्वाण

शिव शंकर भव भय हर हर. लगयो चरणन ।
गुरु लगयो पादि कमलन् सत् गुरु लगयो चरितन् ॥

चरणन् तल वार. वरतन् वरदा छुक शरणन्
शरण.य च्यय श्रास कासतम मल म्य अन्त: करणन्
कर शंकर कर रटहम कर अर हर मरणन्
मर मर छुम ज्यन मरनुक अमरेश्वर भगवन्
पादि कमलन तल म्य पालतम पालवुन छुक कालहन्
हन्य हन्य चय शिव वुछहथ यव दु.य गल्य हन हन शिव०

दय अदुय द.इ म्य गच्छतम कर, दय दय निशि दिन
दीन दयाल कन म्य थावतम दीन वचनन त. वदनन
ज़र ज़र छुम ज़ुज़रणकुय ज़ीरनावतम मत. हन्
हननावन. हननावतम मन्य मोह युथ मुनियन्
देहपुष्ट मन तुष्ट थावतम देवजुष्ट छुक दुष्टहन्
वानै ईश्वर पानै तोषतम् पान वन्दयो तोषणन् शिव०

अन्त कुस ज़ान्य च्य अनन्तस सन्त व्यसरेय चिन्तनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्तीय यत्य वेद लग्य पन्थनन्
ब्रह्मादिक गय मोहस् तत्व च्योन क्या व्यज़रन्
तत्पुरुष चय तत्व म्य भावतम वथ म्य हावतम ज़ाननन्
गथ छय सिद्ध शुद्ध मुनियन् सथ छथ्म शाप मोचनन
शाप मोचन ज्ञान लोचन पार्य आर्या लोचनन शिव०

४ तेजोरूप तेज़ च़य छुक सोम सूर्यन त. अग्नं
तेजोरूप च.य भासान बाह्य अन्तर योगियन्
स्वप्रकाश त. स्वानुभवगम् शान्ततेजः ज्ञानियन्
शिव स्यत्य दित कर्म सुभ स्यज़ ज्ञान यछ ज़न कादिकन
ज़ान ज़ानुन ज्ञाननीय च़.य क्याह् ब. ज़ान. च्यान्य ज़ान्य व्यन
त्रान उपदेश वार. वरतम् फर अज्ञान पटलन शिव०

५ निष्कारण सर्व कारण च़य कारण कारणन
त्रेकार छुक च़.य कारण सष्ट स्थिच तय प्रलयन्
च़.य कर्ता च़.य भर्ता च़.य हर्ता ज़गतन्
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत च़य निरन्तर सवनन्
भुज़ि क्याह् वन. च्रजि क्याह् छुक युस न ज़ोन कांसि ज़ान्य व्यन
ज़ान सोरुय चान्य दया चान्य कृपा भगवन शिव०

६ देव पोज़ छुक देव पूज़नीय पूज़ा व्यध पूज़नन्
विजि विजि भुजि पनि पूजहथ युथ च़ पूज़नख विष्णन
भाव बामन फुलनाविथ माल करहय कौसमन्
बो स मन्य व्यन लागहय भ्यय गुन्ध्य करहय कौसमन्
सोवुन्द यछि़ पछि़ हन्दय् पोष लागहय पादि कमलन
पादि कमलन तल स्य पालतम तल ह्यथ क्यथ विघ्नन शिव०

७ शुद्ध निर्मल शिव पूजहथ यव सपन्य शुद्ध मन
शुद्ध मन च्यय ध्यान धारीथ शुद्ध स्फाटिक विकसन
नीलकण्ठम च्यय हटि वासुक चित्त आत्मस् तमोगुण
सुधा धारा गंग ह्यरि शेरि छ्यय तारव.न् सु.ज़ि नरकन
शिवा धारमंच वाम भागस चित्त् शक्त चित्त् आत्मन
धर्म रूप वृषभ वगि त्रिशूल त्रि अवस्थाय अथि सन् शिव०

८ श्वेत सुन्दर छुत भस्मा तन्य प्रकटयोग सत्वोगुण
रुण्ड माला गल्य गंडम.च़ रोष कोरमुत इन्द्रियन
क्याह छय जटा मुकट शोभान छल गुण्डमुत रजोगुण
टिकि शाय हिरि डिकि चन्द्रम प्रकटयुथ च्योन शुद्ध मन
दिक् वासन निर्वासन वास च्योन मन्य सुमनन
त्रिवाम छुख ज्ञान बुज़तय त्रिकार रूप त्रिनयनण शिव०

९ माया तीत माया चान्य त्रिगुण सू.ति विकसन
निर्गुण छुक गुण उल्लङ्घित माया गुण विलसन
भूत भावत भूत पंचक देह खर कुर अहमन
दह इन्द्रिय मन बुध ह्यथ प्राणबल सू.ति प्रसरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन ज़ीवभावस कुर शयन
तादातम भाव देह के लोभ प्राकृत बल ज़ीवनन शिव०

१० मोह जाल सू ति ज़ीव गण्डने आव कर्मनिन बन्धनन
काम क्रोधन स्थित रटनस प्यठ मनस बुज़ त इन्द्रियन
द्वन्द्वभावत रागद्वेष सू.ति काप्य लुग षट् शुत्रन्
गुण सङ्ग सू ति न्त गछय् लुग पुण्य पाप वश बांध.जन
मुक जारोक पाय चय शिव मोक्षदा छुक भक्तिन
भव बन्धन मुकलावतम छुक च़ य भव. ! भव. भयहन् शिव०

११ निष्प्रपञ्च च्योन सोरुय प्रपञ्च वाञ्छ छुम कस बर. कन
हे हरे हर विरिञ्चि बोज़तम क्याह वन पञ्च दैवतन
वन च़. क्याह कर. चञ्चल मन. संसार क्यन ख्येंचलन
पञ्चवदन मुकलावतम केंह अन्त छुन न च्यान्य व्यन
कून. कून. कून कुनोय तोषतम केंह अन्त छुन हेरि बुन
रुति मुख मुख सुख वरतम सुख सुन्दर दुःख हन् शिव०

१२ सम दितम संपदा यव सम सुम रोज़हा समयन
सम यस गछ़िय चान्य दया लग्य सुम स्यज संयन
सम्य समिरस. प्रथ गुण किञ समयन तय साधनन
सुम आहार सुम विहार सम निद्रा त. जागरण
संभालिथ पानस सुम सुम शुजरिथ शायहन
लग्य समाध योग सम स्यज़ विजि सत् गुरु वचनन् शिव०

१३ भक्ति प्रिय भक्ति दायक. दय युस इच्छहन भक्ति ज़न
भक्ति भावत. भक्ति भावनाय च्यय कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छलबल. बल. फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धारीथ रटि प्राण बुद्ध चित् त.मन
यम नियम शम दम सम्य मन. सुरि सुय दय क्षण क्षण
मन ज़ीनिथ पोज चीनिथ गछ़ि ज़ीनिथ भवनन शिव०

१४ यस संस्रति पोत अच्य मन सुस्त आस्यतन विभवन
लोर आस्यन अन्न धन्नन् घरबारन त. सन्तनन
व्यवहार क्रयन काम्यन प्यठ परद्यन हज्य काम्य ज़न
प्रारब्धुक भोग भोगान् भोगवुन ज़न स्वप्नन
रागीज़न सार्यस.य सू.ति त्यागित सर्व कामनन
गच्छ़ि संसार सर तरीथ लट करान सूह ज़न शिव०

१५ युदवै कांसि ओरै यीयि भंग संग मेल्यस साधुज़न
साधुजन युस सम्य चित्त ताय ममताय निश आस्य भिन्न
भ्युन्न रूत क्रुत द्वन्द्व भावन छ्यन दित सवें कामनन
शम दम ज्ञान विज्ञान सुस्त रुस्त कपटन त. कल्पनन
ब्रह्म तत्पर आस्य आस्यस परेहट सर्वं विषयन
बुड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्योग लभ्य ज्य वु ह्योह साधुजन शिव०

१६ युस कांह यछि पानस रुत क्रुत ब्राव्य प्राव्य शुद्ध मन
शुद्ध मन भक्ति भावतगुण कन थाव्य साधु वचनन
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत ज़ाग्य ज़ाग ह्यथ समयन
समय वात्यस शम यम नियम. पानै ता'र्य तस मुच़रन
दीन दयाल. हे कृपाल कांस्य गथ छ्यन चाञ्य ब्यन
सत् भाव छम सथ चाञ्यी सत् गथ दिम भगवन शिव॰

१७ त्यल्य च्योनुम भुज़ि क्याह छुस यलि वाच़म चेनवन
चेनन ब्रायम दया चा'ञ चेननावान सेवकन
भक्त युदवे मुक्त थावहम मुक्त छुस निष बन्धनन
सुप्रकाशत: अविनाशी माशवीथ ज़्यन मरणन
सत चित्त आनन्द रूपस स्थिथ न्यन ह्यथ निर्गुण. गुण
प'ज़ दया चा'ञ भगवण करि क्याह् म्या'ञ वन.वन शिव॰

१८ शांत निर्मल भांत छम चा'ञ मानतम सार वन. वन.
अख शुभ दृष्टि शिव करतम नाव चोन शुभाअशुभन
शुभदायक शुभ दृष्टि चा'ञ सार शोभा शोभियन
शोभवुन च.ई त्रिन भवनन शोभ्रहथ पोषवर्षणन
शोभरावतम ज्ञान सदा शोभ यथ. यीय ज़गतन
शोभ स.रुय चा'ञ दया चा'ञ कृपा भगवन् शिव॰

१९ अविनाश बढ आश पूरतम नाश करहा कल्पनन
आशा पूर. आशा चा'ञ आश छम राश पपनन
गटि हन्दि घाश. चित्त् प्रकाश. घाश अनतम नेत्रन्
माशविथ रूज सर्व कल्पनन नाशविथ सर्व वासनन
प्रकाश. शान्त. सु प्रकाश. च.ई घाशुर घाशरन्
पर. प्रसाद गुरु प्रसाद करू प्रसाद भगवन् शिव॰

२० संसारचीय. छुच् आशा शुर्य मुर्य ताय सन्तनन
भा'य बन्ध तय धन संपत घर बार तय स्त्रीज़न
सोर असोर भ्रम सोरुय मृगतृष्णा यिथ ज़न
शिव च.य म्योन शुर्य मुर्य तय भा'य बन्ध तय सारी ज़न
च्यय मोल मा'ज च्यय घरबार च्यय संपत् द्यार धन
च्यय सोरुय च्यय सारय सहा रोज़तम भगवन् शिव०

२१ लोभ छुम न सुरगण हुन्द क्षोभ तित. भिय नरकुन
रुत क्रुत सुख दुःख भोगान फल पनन्यन कर्मन्
हर नाव सू ति थर.थर अचान दूरि यम. किंकरण
शिव भक्त संज सहाय छांडान माय. पनन्य देवगण
अख शुभ दृष्ट शिव छम चाञ लछ विभवन त. स्वर्गन
सुय शुभ दृष्ट शिव करतम पानै वरतम भगवन् शिव०

२२ नब नाथेश्वर चय छुक नव निधान छुक सेवकन
नव्य खुत.नुव नुव बु वुछहथ लगि नुव नुव नवनन
नव गंडिथ नव रटीथ नव प्रणव व्याहरण
नव दक्षपाल ह्यथ रोज़तम ईश राछ निश विघ्नन
नवदुर्गा करि पक्ष म्योन युस रक्षक शरणन्
नव द्वार पुर. खस वुफ ह्यथ नववुन्य शिव भवनन् शिव०



गोविन्द माला

१ निस्पन्द सांपन सो वुन्द सू.ति नित्य भगवत धारना धर
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द कर।

२ मानुष्य जन्म दुर्लभ देवन सुलभ जीव प्रोवृत चे
गुरु शास्त्र पुर्षारथ पूर्वक निर्मल बुद्ध सांपनी
क्यों सोया मोहनी सजया पर जाग रे चत्रे नर गो०

३ अब है गोविन्द मिलने की भारी सब काज तजा कर
गोविन्द चर्णारबिन्द अमृत पी के मन रजा कर
मानुष्य देह फिर हाथ नहीं आवत भवसर पार उतर गो०

४ श्रीमान सर्व लोक पाल दीन दयाल भगवान बाल गोपाल
कोमल श्यामल अंग, देव आभरण, गल तुलसी माल
गगन सदृश्य अविभूत दर्शन आश्चर्य.मय अक्षर गो०

५ त्युथ शुभ समय कर सन ईयम युथ म्य वरि रघु राये
रघु कुल दीपक दर्शन दियं करि म्योन मोक्षोपाये
श्याम सुन्दर राम चन्द्र दर्शुन आसि नख. शांत भासकर गो०



लेखक :— "संतोषी"

दिम म्य रच् त. शुद्ध वाणी महाराज्ञी भवानी।
यछ् त. पछ् छम म्य च्या'नी महाराज्ञी भवानी॥

१ मग ाय च़ेय ब. वरदान छुम न. मंगनुक म्य त्युथ ज्ञान
रूज़ मा चा.ज म्य निगरानी महाराज्ञी।

२ यलि न. च़. थवख म्या'ञ कल वन. कस ब. छुस दुर्बल
कुस लभन च़ेय ह्य ब. दा.नो महार.ज्ञा।

३ यल. छु चोनुय योत दरबार पूर. ब.रि ब.रि छि अंबार
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी महाराज्ञी।

४ कांह अखा ति आशावान वाति युस चे निश मायि सान
लभि न जांह सु मान हा.नो महाराज्ञी।

५ यस च़. रांज़ख पान डखिदार दिख सुमन भक्त अधिकार
पोरि कुस तस प्राणी महारज्ञो।

६ भक्तिभावस च़. छख ला'र फल दिनस छाचे निशि ता'र
छुय चे नाव ईशा.नी महाराज्ञी।

७ छख शिवा च. शिव शक्ति चय हय युक्ति त. मुक्ति
च़य उमा चंय ब्रह्माणी महाराज्ञी।

८ नव निधान छिय चे ब'डि कोश दिम म्य परम सुख त. 'संतोष'
छुस मंगान ब. सुय च्य ज्य'नी महाराज्ञी।



लेखक :– "त्रैलोकी नाथ" हशरा

मा'ज्य शारिका.य कर दया वर दया ही भवा नी
कर दयायि हंज़ दृष्टी सु. छि ब'ड मेहरबानी ।

१ आय लारान चे निश योर कर्म खुरि बावा.नी
मत. वुछत. कर्मन कुन सारी छी पशेमानी ।०।

२ कुताम रोज़ि युन त. गछुन कुताम रोज़ि क्रेशुन त. वदुन
तार दिवान सारिन.य छख असि ति रोज़ तारानी ।०।

३ कुपुत्र छु माजि आसान मा'ज्य छन तस.ति रोशान
असि मगान चा'नी दया जगतच राज. रानी ।०।

४ नखि छख डखि छख चई चेय सिव कांह ति छुन वियाख
दह त. रात चोनुय फिरान अख अजाब रूहानी ।०।

५ ओश वसान चालि चाले मा'ज्य भवा.नी हावी दर्शुन
कैंह ति छुन. नगान बोज़ुन कैंह नय छी असि ज़ानानी ।०।

६ बूज़मुत छु हलि मुशकिल बनि असि तवय आय योर
अख रछा करत वुन्य गोर हीमालच राज रानी ।०।

७ दासा छु दर इन्तिज़ार भवसागरस दिस तार
ल्यमभि मंज़ पंपोश खार बोज़तय चय म्याञ्ज ज़ारी

मा'य शारिका.य कर दया ॥



ओं नमो भवान्यै ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नवम् - तरंग)

लल वाख

१ अभ्यास किनि व्यकास फोलुम,
सौ प्रकाश ज़ोनुम यिहोय दीह ।
प्रकाश यान मौख यी दोरुम,
सौखय बोरुम कोरुम तिय ॥

२ गौर कथ ,हृदयस मंज़ भाग रटम,
गंग ज़ल नाविम तन त मन ।
सौ दीह जीवन मौखतय प्रोवम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख ॥

३ पानय आव पानस सतिय,
पानय पनुन कोरुन व्यचार ।
पानय पनुन पान नेछि नोवुन,
पानय गुपुन पनुन पान ॥

४ ल्लिलि गौर ब्रमांड प्येठय किन्य वुछुम,
श्यशकल वाचम पादन तान्य,
ज्ञानकि अमरयत प्रकरथ बग्म ।
लूबय मोरुम अन्द वन्द तान्य ॥

५ क्या करम दग्म कोरुम,
तिरथन नावम पननिय काय।
पापन सौंबरिथ बसम क.रुम,
तति कुस ओस तय योत कप. आय ॥

६ पवन त प्राण सोमुय डयो.ठुम,
मीलिथ रूदुम शेर खोर. तान्य।
दीह् यलि मोठुम अद कयाह् मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्राण ॥

७ मनस स'तिय मन.य गोंडुम,
च्यतस रटम चौपाय वग।
प्रकृच. सतिय पौदुय वोलुम
सर. मे कोरम लबम वथ ॥

८ कथा बूज़म कथय करम,
कथाय करम चौपार्य सथ।
शास्त्र किनिय कथय बूज़म,
कथायि हावम सतच वथ ॥

९ पूरक कौंबक रोच्क कोरुम,
पवनस त्रावम प्यठय किन्य वथ
अनाहतस बसम कोरुम,
कैंह नो मोतुय सौय छम कथ ॥

१० कैंह्नस प्यठय क्या छुय न. चुन,
मौचिय कैंह न त न. चुन त्राव।

पोत् फीरिथ छुय तोतुय अ़ चुन,
यिहोय व.चुन च्यतस थव ॥

११ करमुक कुला नो छुय बिनिथ ग.छुन,
वनिथ ग.छुन क्याह छुय पाय ।
कशफुक फलछय मीलिथ ग.छुन।
व.लिथ रो.जुन कुम्म छुय न्याय॥

१२ कायस अन्दर रुदुम अचिथ।
न्यायस थवनम चौपयि शाय,
पाय केंह लोबुम नो माय छस क'रिथ,
ज़ायस न आयस लोगुम नाव॥

१३ कोसम बागस द्योतमय अ.चुन।
पचियय मन त अ.चुन त्राव,
सरुप दरशुन छु तोतुय अ.चुन।
कोत छुय ग.छुन पकुन त्राव॥

१४ कामस सतिय प्रय नो ब.रम।
क्रूदस द्युतुम पवनुन फेश,
लूबस मूहस चरण चटिम।
तृष्णा चजिम गयस खोश॥

१५ ल्यक न थौक प्यठ शेरि ह्यचम।
न्यंदा स. पतिम पथ ब्रोंठ तान्य,
ललि चिहन कल ज़ाह नो छ्यनिम।
अद यलि स. पनिस व्यपिहे क्याह॥

१६ ज़गस अन्दर कऽ त्याह पऽलिम ।
सारिय छि छांडान दयि सं'ज वथ,
लछि मं.ज अकिस दया ज़'निम ।
मऽनिम यी दप्यजि ईशर गथ ॥

१७ गायत्रेय अजपा छल॰ अ'कि तऽजिम ।
सूहम सर्तचिय क'रमस थक.
अहमस लोत पऽठय जठरय वऽजिम ।
गौर कथ पऽजिम च.ऽजिम चख ॥

१८ कौल तय मौल कथ क्योत छुय ।
तऽत. क्योत छुय शांत स्वभाव,
क्रयि हुंद आगुर वति क्योत छुय ।
अन्तः क्योत छ्य गौर. सोंद नाव ॥

१९ श्रान तय ध्यान क्याह सन. करिय ।
च्यतस रठ त्रकरय वग,
मनस त पवनस मिलवन क.रय ।
सहजस मज़ कर तिरथ स्नान ॥

२० प्राणस सतिय लय यलि करम,
ध्यानस थवतम न रोज़नस शाय ।
कायस अन्दर सो.रुय वुछुम,
पायस पोवुम कडमस ग्राय ॥

२१ मनस ग्राय चज पजिकुय अन्न ख्योम,
तव कुय बल गौम करमस क्रय ।

आगुर वातिथ अमरथय जल चोम,
छिवलय मन गोम बरमस प्रय ॥

२२ म्यथ्या कपट असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय वोपदीश ।
ज़नस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूष ॥

२३ कायम बल छुय मायस ज़ागुन,
प्राणस बल छुय शब्द स्वरूप ।
आयस बल छुय तत्व व्यद जानुन,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त ताग्य ॥

२४ गगनस भूलस शिव यलि डयूठुम,
खस लवि न रोज़नस शाय ।
सिर्ययिकि प्रभाव व्यशमय ज़ोतुम,
ज़न गव थलस सत्य मीलिथ कयाह ॥

२५ वा.व,च ग्राया पानस वुछिम,
वानस डोठिम स्लोरि रंग वस ।
ध्यानस अन्दर. दम. दम. मीलस,
गौनन त्रोवुम मुचरिथ बर ॥

२६ रो.ज़नि आयस ग़छ्न ग़छयम,
पकुन ग़छयम वावलूक पाल ।
केहनस प्यठय न.चुन ग.छयम,
अचुन ग़छयम सूक्षम प्रकार ॥

२७ वाख छोह दिथ मौखस बीठम,
मौखस ठीठम रोशनस शाय ।
दौखस अन्दर न्यंदर मीठम,
बौद यलि ज़ीठम मीठम कथ ॥

२८ शेलायि हंज़ऽय वौतमा बाजम,
सोंबरुम ट्योक पोष आसन पठ ।
मनस अन्दर व्य. चार कोरुम,
वुछम त डयू ठुम शेल कनिवठ ॥

२९ जनम प्राविथ व्यबव छोंडुम,
लूबन बूगन ब.रम प्रय ।
सोमुय आहार स्यठा जोनुम,
चोलुम दौख दौख ग्राव पोलुप ॥

३० जल. प्येव पकुन थ्यकुन लूकन,
नारस अचुन मारस व्यद ।
आकऽश्य गमनो वुफुन आसुन,
कपट बासुन आसुन च्यथ ॥

३१ अन्दर आ॰िथ न्यबर छोंडुम,
पवनन रगन फयुर नम सौर ।
ध्यान किन्य दयदगि कीवल जोनुम,
रंग गव सन्गस सत्य मीलित कयथ ॥

३२ ॐ कार शरीर कीवल ज़ोनुम,
शब्द रूप रस गंध स.तिय ह्यथ ।

आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम तीथ दोरुम शेरस प्यठ ॥

३३ जन्म प्रावित कर्म सोदुम,
धर्म पोलुम सौय छम सथ ।
न्यत्रन अन्दर प्रथम दोरुम,
चोरुम त मोनुम यिहोह अख ॥

३४ सौरगस मा ज़ुन कयाह छुय वासुनो,
नरकस वासुन आसुन दूश ।
चख र, शु न आसुन शिवमय खासुनो,
पान्य आसुन कासुन बीद ।

३५ मनस गुन छुय चंचल आसुन,
च्यतस गुन छुय गछुन दूर ।
जीवस गुन छुय ब'द्धि त्रेश आसुन,
आत्मस गुन छुय न आसुन लीफ ॥

३६ शिव त शक्त कल्यू डोंठिम,
तिमव र टम कामंस जाय ।
दायस द्वर ससि सने मीठम,
तीलिथ रूजम त्राविथ लर ॥

३७ शेरस सतिय सोदा कोरुम,
हरस कौरुम गौड सीवन ।
शेरस प्येठय किन्य न. चान डयूठम
गछान डयूठुम आयम पछ ॥

३८ कु नुय अछुर वु बरि पोरुम,
सोय म्य रोटुम हृदयस मंज़ ।
सोय म्य लोत पाट'य गोरुम त चोरुम,
आ स् स सरतल ग्यस सोन ॥

श्री कृष्ण कार जी

१ वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका देवी नमः
म्यहरे चराचर सुंदरी श्री शारिका देवी नमः ॥
२ अव्वल तुई आखिर तुई बातिन तुई ज़ाहिर तुई ।
गाईब तुई हाज़िर तुई श्री शारिका..............
३ जगरा सशे सामा तुई शाहे शहन्शांहा तुई ।
जिसमे जहां व जान तुई श्री शारिका......... ॥
४ लक्ष्मी जहां आरा तुई ममाई देश अफ्ज़ा तुई ।
बुद्धी महाविद्या तुई श्री शारिका.............. ॥
५ देवी जगत माता तुई शिव शक्त गुरु दाता तुई ।
माता पिता भ्राता तुई श्रीं शारिका........ ॥
६ हाजत रवाऐ आलमें शाहे शुजाअत अक्रमे ।
कायम मुकामे दाम में श्री शारिका .... ॥
७ अजहर से कारन बर्तनी दर्हर से आलम सर्वरी ।
बर्फर कि इन्द्र मुश्तरी श्री शारिका.......... ॥
८ सीमवो जरो बहरे दुरी लोलोऐ लाला गवहरी ।
ज़ेबे दु आलम अनवरो श्री शारिका.......— — ।

९ सहम व गजन फर वा हनत शिवजा अस्त ज़ेरे आसनत
लालो जवाहर दामनत श्री शारिका.......... ॥
१० तू चार दह रत्ने गिरा तू नव निदाने बेकराँ।
तू कानि गवहर दर अमा श्री शारिका........ ।
११ शक्ते तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान।
तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका........ ॥
१२ नागे त्रिलूको तिरथ जात सरचश्मे आबे हयात।
आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका.......... ॥
१३ गरदे रहत् कोहलये बसर खाके दरत् नूरे नज़र।
संगे समीरत सीभव जर श्री शारिका...... ... ।
१४ नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहेर अनवरी।
माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री........ ॥
१५ चिकरी शरव्हाजत् खा साजद् गदा रा पादश।
वाह - वाह चह लक्ष्मी थापना श्री......... ।
१६ रोगन चरागे पाम्परी सिन्दूरी खासा लाहोरी।
चहरव् कुनम् ज़रदोजरी श्री................ ॥
१७ दर बारगाहत रोज़ व शब नारद मुनीशर बाअदब।
दरबानि दरगाहत् तलब श्री—————— ॥
१८ गुल अज़ सरे खुद मी कुनम,
ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम्
पूजायत् खाहम् कुनम् श्री———— ।
१९ अफ सुरदा अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा।
दस्तम् बिगीर अई देवता श्री शारिका——— ॥
२० ही इश्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्णकार।
गोयद त्वता जोयद दया श्री शारिका———— ॥



पं० जानकीनाथ कौल 'कमल'

शिव – शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर
शिव - शंकर शम्भो !

मन शु'द्ध बनि साक्षात् ननि
हनि हनि गटि मन्ज़ गाश
सुव्यचार ब्यियि श्रद्धायि पर—शिव०

प्रभातस अछ मन्दिरस
गंग - ज़ल तन ना'विथ
ध्यान - धारणायि मनि - मन्ज़ सुर—शिव०

शिव नाथस गो'ड दि अशि - जल
शेरि लागुस भाव - पोष
मन - प्राण वार तुता कर—शिव०

इन्द्रिय नैवेद्य स्वम्बराव
मन - त्राम'रि मन्ज़ थाव
देह दीप ज़ा'लिथ वार पर—शिव०

वास'नायि धूप थाव दज़वुन
विज्ञान - दीप व्रज़वुन
व्यज - पूर्वक व्यज़ना कर—शिव०

सहस्त्रदल 'कमल' फोलराव
शिव - अनुग्रह यि'थ प्राव
शिव न्यथ सुर चलि ज़्यत मर
शिव - शंकर शम्भो !

Bansi Art Press, Nai-Sarak
Phone : 73999